राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........ 9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UPHIN/2019/79073 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, शुक्रवार, 11 जुलाई 2025

वर्ष 06, अंक 278, पृष्ट 12, मूल्यः 03 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

धोखाधड़ी कर करोड़ों की जमीन बेचने वाला गैंग का सदस्य गिरफ्तार...03

बॉम्बे हाईकोर्ट ने दलित लॉ स्टूडेंट की हिरासत में मौत के बाद एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया...08

सुप्रीमकोर्ट ने चुनाव आयोग से कहा- आधार, राशन, वोटर आईडी पहचान में करें शामिल

प्रयागराज। बिहार विधानसभा चुनाव से पहले वोटर लिस्ट के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) के विरोध में गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई. इस दौरान याचिकाकर्ताओं और चुनाव आयोग का पक्ष सुनने के बाद कोर्ट ने फिलहाल SIR पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट अब इस मामले पर 28 जुलाई को सुनवाई करेगा। कोर्ट ने कहा कि आधर कार्ड, राशन कार्ड को भी पहचान का सबूत मानें। बिहार मतदाता सूची पुनरीक्षण मामले पर कोर्ट ने कहा कि इस न्यायालय के समक्ष दायर इन याचिकाओं में एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया गया है जो हमारे देश जैसे गणतंत्र की कार्यप्रणाली के मूल में जाता है। प्रश्न है मतदान के अधिकार का। याचिकाकर्ताओं का तर्क है कि 24 जून 2025 के आदेश में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा की गई प्रक्रिया, जो कि जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 21 की उपधारा 3 के अंतर्गत मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण है, न केवल संविधान के अनुच्छेद 14, 21 और अनुच्छेद 324, 325 और 326 के तहत मतदाताओं के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है, बल्कि जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 के प्रावधानों और इसके लिए बनाए गए नियमों, विशेष रूप से मतदाताओं के पंजीकरण नियम, 1960 की वैधता का भी उल्लंघन है।

दूसरी ओर द्विवेदी का तर्क है कि अंतिम गहन पुनरीक्षण 2003 में हुआ था और अब नियमों के साथ प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 326 और धारा 21(3) के तहत यह आवश्यक है। कोर्ट ने कहा कि हमारा विचार है कि इस मामले की सुनवाई 28 जुलाई 2025 को उपयुक्त न्यायालय में होनी चाहिए। इस बीच, चुनाव आयोग द्वारा आज से एक सप्ताह के भीतर जवाबी हलफनामा दायर किया जाएगा और यदि कोई प्रत्युत्तर होगा तो उसे 28 जुलाई 2025 से पहले दायर किया जाएगा। कोर्ट ने बताया कि ईसी के वकील द्विवेदी ने कहा कि 11 दस्तावेजों की सूची संपूर्ण नहीं है, जैसा कि जून के आदेश में संकेत दिया गया है, इसलिए हमारा विचार है कि चुनाव आयोग निम्नलिखित दस्तावेजों पर भी विचार करेगा, जैसे कि आधार कार्ड, चुनाव आयोग द्वारा जारी मतदाता पहचान पत्र (ईपीआईसी) और राशन कार्ड। याचिकाकर्ता इस स्तर पर अंतरिम रोक के लिए दबाव नहीं डाल रहे हैं, क्योंकि किसी भी स्थिति में मतदाता सूची का मसौदा 1 अगस्त 2025 को ही प्रकाशित किया जाना है और मामला उससे पहले 28 जुलाई 2025 को अदालत के समक्ष सूचीबद्ध है।

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को बिहार में मतदाता सूची के 'विशेष गहन पुनरीक्षण' (SIR) को लेकर चुनाव आयोग से कड़े सवाल पूछे। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग की प्रक्रिया पर स्टे यानी रोक नहीं लगाई हैक्योंकि याचिका कर्ताओं ने इसकी मांग नहीं की। सुप्रीम कोर्ट ने पूछा- विधानसभा चुनाव से कुछ महीने पहले क्यों। अदालत ने इस प्रक्रिया की वैधता को स्वीकार किया, लेकिन चुनाव आयोग से पूछा कि उसने चुनाव से ठीक पहले यह प्रक्रिया क्यों शुरू की। अदालत ने चुनाव आयोग से कहा, "समस्या आपकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि समय की है..." जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की पीठ ने कहा कि मतदाता सूची में गैर-नागरिकों के नाम न रहें, यह सुनिश्चित करने के लिए गहन जाँच-पड़ताल करके मतदाता सूची को शुद्ध करने में कुछ भी गलत नहीं है। अदालत ने कहा, "लेकिन आप प्रस्तावित चुनाव से कुछ महीने पहले ही यह फैसला करते हैं? ऐसा क्यों?"

याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश हुए वकील शंकरनारायणन ने इस प्रक्रिया को पूरी तरह से मनमाना और भेदभावपूर्ण बताया। उन्होंने स्पष्ट किया कि वह केवल इसके संचालन के तरीके को चुनौती दे रहे हैं, चुनाव आयोग की शक्ति को नहीं। अभी वकील कपिल सिब्बल, अभिषेक मनु सिंघवी और फरासत भी अपने तर्क रखेंगे। सुनवाई जारी है। अदालत ने कहा, "यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है और लोकतंत्र की जड़ों से जुड़ा है... वे (याचिकाकर्ता) न केवल चुनाव आयोग की शक्तियों को चुनौती दे रहे हैं, बल्कि प्रक्रिया को भी चुनौती दे रहे हैं..." अदालत ने याचिकाकर्ताओं के समूह द्वारा उठाए गए सवालों पर चुनाव आयोग से जवाब मांगा। इस प्वाइंट पर भी कोर्ट ने चुनाव आयोग से सवाल पूछे कि सरकार द्वारा अन्य दस्तावेजों के लिए पहचान के प्रमाण के रूप में जिस पहचान पत्र पर जोर दिया गया था, उसे क्यों शामिल नहीं किया गया।

अदालत के 3 सवाल

'विशेष गहन पुनरीक्षण' (SIR) करने के लिए चुनाव आयोग अपने अधिकार की व्याख्या करें।

समीक्षा प्रक्रिया की वैधता की व्याख्या करें।

चुनाव से ठीक पहले यह प्रक्रिया क्यों, इसकी व्याख्या करें। वरिष्ठ वकील शंकरनारायण ने

अपने दलील की शुरूआत इस बात से की कि पिछले संशोधन के बाद से अब तक 10 बड़े चुनाव (अर्थात पांच लोकसभा और पांच राज्य विधानसभा) हो चुके हैं।

वकील शंकरनारायणन ने कहा, "वे (चुनाव आयोग) कह रहा है कि आखिरी संशोधन 2003 में हुआ था, जब बिहार की आबादी चार करोड़ थी। अब यह लगभग 7.9 करोड़ है और तब से लगभग 10 चुनाव हो चुके हैं। और अब, जबकि चुनाव महीनों दूर हैं, वे यह कवायद कर रहे हैं... जिसमें मसौदा 30 दिनों में जारी करना है?" शंकरनारायण ने कहा, "हैरानी की बात है कि वे कह रहे हैं कि वे आधार स्वीकार नहीं करेंगे... अधिनियम में संशोधन के बावजूद, जो सत्यापन के लिए आधार की अनुमति देता है, अब वे कह रहे हैं कि इस पर विचार नहीं किया जाएगा।" उन्होंने दलील दी कि संशोधन के अलावा, इन दस्तावेज़ों का चुनाव अतार्किक है। उन्होंने बताया कि अदालत के सदस्यों सहित कुछ वर्गों को छूट दी गई है। उन्होंने कहा, "वे केवल 11 दस्तावेज़ स्वीकार करेंगे... वे अपने ही मतदाता पहचान पत्र पर भी विचार नहीं करेंगे और वे माता-पिता के सत्यापन के लिए दस्तावेज़ मांग रहे हैं।"

जस्टिस धूलिया ने शुरुआत में पूछा, "चुनाव आयोग की कार्रवाई में तर्क है। इसमें ग़लत क्या है?" उन्होंने कहा, "वे जो कर रहे हैं, वह संविधान के तहत अनिवार्य है। आप यह नहीं कह सकते कि वे ऐसा कुछ कर रहे हैं जो संविधान के तहत अनिवार्य नहीं है।" लेकिन जब दलीलें दी गई तो अदालत ने भी कहा प्रक्रिया से समस्या नहीं है लेकिन इसकी टाइमिंग से समस्या है। पिछले महीने, चुनाव आयोग ने बिहार की मतदाता सूची में संशोधन का आदेश देते हुए कहा था कि पिछले 20 वर्षों में बड़े पैमाने पर नाम जोड़ने और हटाने से डुप्लिकेट प्रविष्टियों की संभावना बढ़ गई है। इस कदम की विपक्ष, खासकर कांग्रेस और राजद ने तीखी आलोचना की थी। आयोग ने यह आदेश देते हुए 11 दस्तावेजों में से कुछ दस्तावेज जमा कराने की शर्त रखी। उसने आधार, राशनकार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस को अमान्य दस्तावेज करार दिया। हालांकि आधार फिलहाल देश में हर काम के लिए स्वीकार किया जा रहा है। लेकिन आयोग को वो मंजूर नहीं।

देश लौटे 'फ्रीक्वेंट फ्लायर' पीएम, अब मणिपुर और बुनियादी ढांचे पर दें ध्यान', कांग्रेस की मोदी को नसीहत

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मोदी की पांच देशों की आधिकारिक यात्रा संपन्न होने के बाद बृहस्पतिवार को तंज भरे लहजे में कहा कि अब वह चाहें तो मानसून सत्र का एजेंडा तय करने के लिए सर्वदलीय बैठक की अध्यक्षता करने के साथ हिंसा प्रभावित मणिपुर जाने, पहलगाम के आतंकवादियों को अब तक न्याय के कठघरे में क्यों नहीं लाया गया है, इसकी समीक्षा करने और अपने गृह राज्य में लगातार गिरते-ढहते, नाकाम होते बुनियादी ढांचे पर विचार करने के लिए समय निकाल सकते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में 17वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के अलावा पांच देशों- घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, अर्जेंटीना, ब्राजील और नामीबिया का दौरा किया। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''भारत अपने 'सुपर प्रीमियम फ्रीक्वेंट फ्लायर' प्रधानमंत्री का स्वागत करता है, जो शायद अगली विदेश यात्रा से पहले तीन हफ्तों के लिए देश में रहेंगे।'' उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा कि अब जब वे देश में हैं, तो शायद उन्हें मणिपुर जाने का समय मिल जाए, जहां लोग दो साल से अधिक समय से उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

जयराम रमेश का कहना है, ''वह यह भी समीक्षा कर सकते हैं कि पहलगाम में हुए आतंकी हमलों के दोषियों को अब तक न्याय के कठघरे में क्यों नहीं लाया गया, अपने गृह राज्य में लगातार गिरते-ढहते, नाकाम होते बुनियादी ढांचे पर ध्यान दे सकते हैं, और बाढ़ से तबाह हिमाचल प्रदेश के लिए सहायता राशि मंजूर कर सकते हैं।'' रमेश ने कहा, ''वह चाहें तो जीएसटी में व्यापक सुधार पर भी ध्यान दे सकते हैं, जिससे आम उपभोग को प्रोत्साहन मिल सके और कुछ खास बड़े कॉरपोरेट समूहों के अलावा बाकी निजी कंपनियों को भी निवेश के लिए प्रेरित किया जा सके।'' उन्होंने कहा कि बदलाव के तौर पर वह मानसून सत्र के लिए एजेंडा तय करने के उद्देश्य से सर्वदलीय बैठक की अध्यक्षता भी कर सकते हैं।

दूसरी तरफ कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने वडोदरा पुल हादसे को लेकर बीजेपी सरकार पर तीखा हमला करते हुए कहा कि यह हादसा सरकार की उदासीनता, नेतृत्व संकट और भ्रष्टाचार का नतीजा है। खड़गे ने आरोप लगाया कि सिर्फ भाषण और विज्ञापनबाज़ी में व्यस्त बीजेपी नेतृत्व और सरकार उदासीनता की सारी हदें पार कर चुके हैं। उन्होंने यह दावा भी किया कि यह नेतृत्व संकट, चौतरफ़ा भ्रष्टाचार और सरकार चलाने की क्षमता में कमी का नतीजा है। अधिकारियों ने बताया कि वडोदरा में बुधवार सुबह लगभग चार दशक पुराने एक पुल का कुछ हिस्सा ढह जाने के कारण 13 लोगों की मौत हो गई।

कांग्रेस अध्यक्ष ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, "देश में आए दिन दुर्घटनाएँ आम बात हो गई हैं। कभी रेल दुर्घटना, कहीं उद्घाटन के साथ ही पुल में दरार आना। अभी विमान दुर्घटना के हादसे से देश उबर नहीं पाया है कि कल गुजरात से पुल ढहने की खबर आ गई। 13 मासूम जानें चली गई।" उन्होंने पीड़ितों के परिजन के प्रति संवेदना प्रकट की। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, "ख़बरों के अनुसार तीन साल पहले ही पुल हिलने से खतरनाक स्थिति की बात कही गई थी। फिर भी कुछ नहीं किया गया। 2021 से यह गुजरात में पुल गिरने की सातवीं घटना है।"

संक्षिप्त ख़बरें

डिप्लोमा एवं कौशल विकास से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षित एवं प्रशिक्षित युवाओं को कराया जाएगा सेवायोजित

मीरजापुर। गुरुवार को जिला समन्वयक उ0प्र0 कौशल विकास मिशन मयंक मणि शुक्ला ने एक विज्ञप्ति के माध्यम से जानकारी देते हुए बताया है कि दिंनाक 15 जुलाई 2025 को विश्व युवा कौशल दिवस के शुभ अवसर पर जनपद मीरजापुर में स्थित राजकीय आई0टी0आई0 परिसर में दिंनाक 14 जुलाई 2025 को सुबह 11 बजे से एक वृहद रोजगार मेले का आयोजन किया गया है जिस मेले में लगभग 20 कम्पनियां, 1200 रिक्तियों के साथ प्रतिभाग कर रही है जिसके तहत् हाईस्कूल, इण्टिरमीडिएट, ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन, आई0टी0आई0, डिप्लोमा एवं कौशल विकास से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षित एवं प्रशिक्षित युवाओं को सेवायोजित कराया जाएगा तथा दिंनाक 15 जुलाई 2025 को विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों के मुख्य अतिथि द्वारा नियुक्ति पत्र का भी वितरण कर कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

गजेंद्र प्रताप सिंह एडवोकेट भारतीय किसान कल्याण संघ विधि प्रकोष्ठ के मंडल अध्यक्ष मनोनीत

कोरांव, प्रयागराज। भारतीय किसान कल्याण संघ संघ की एक आवश्यक बैठक कैंप कार्यालय आनंद नगर में हुई। जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इंजीनियर एस बी सिंह ने की। जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष पवनेश उपाध्याय के अनुमोदन पर गजेंद्र प्रताप सिंह एडवोकेट को विधि प्रकोष्ठ का प्रयागराज मंडल अध्यक्ष मनोनीत किया गया एवं उन्हें पूरे मंडल में इकाई का गठन करने का दायित्व दिया गया। जिस पर संगठन के राष्ट्रीय प्रवक्ता धर्मेन्द्र मिश्रा, जिला अध्यक्ष प्रयागराज सौरभ चतुर्वेदी आदि ने बधाई दी है।

एकदिवसीय संगीतमय राम कथा का हुआ आयोजन

चुनार मिर्जापुर। बुधवार को देर शाम श्री राघवेंद्र रामलीला कमेटी भवन में एक दिवसीय राम कथा का आयोजन किया गया।कथावाचक राकेश्वराचंद्र जी द्वारा सुनाए गए कथा से उपस्थित लोग भाव विभोर हो गए। इस दौरान आयोजक अमित कुमार गुप्ता, लक्ष्मी शंकर पांडेय, महेंद्र साहू, चंद्रहास गुप्ता,श्यामसुंदर शाह, आशीष सिंह, मुन्ना बिंद, श्रवण सेठ, अमित पटेल सहित बड़ी संख्या में महिला पुरुष श्रद्धालु उपस्थित रहे।

अधिकारियों की मेहनत से सुरक्षित बचा गाँव

स्वतंत्र प्रभात

रमियाबेहड़ खीरी। रमियाबेहड़ ब्लॉक क्षेत्र की ग्राम पंचायत सुजानपुर में बाढ़ का खतरा फिलहाल टल गया है। बाढ़ खण्ड द्वारा जिओ ट्यूब लगाकर परियोजना का काम किया गया था परियोजना प्रभावी ढंग से कार्य कर रही है जो की पूरी तरीके से सुरक्षित है। नदी का दबाव सुजानपुर के ऊपर ग्राम देवी पुरवा की तरफ बना हुआ है जिसको बचाने के लिए बाढ़ खंड द्वारा युद्धस्तर पर फ्लड फाइटिंग का कार्य किया जा रहा है, जिसका सकारात्मक असर अब जमीन पर दिखने लगा है। लगातार निगरानी और त्वरित कार्रवाई के चलते सुजानपुर गांव फिलहाल पूरी तरह सुरक्षित हैं।अधिकारियों का दावा है कि परियोजना पूरी सुरक्षित है और आगे अब फ्लड फाइटिंग का काम चल रहा है।जिससे अब गाँव को कटान से बचाया जा सकता है। बाढ़ खंड के अधिशासी अभियंता अजय कुमार ने जानकारी दी कि पहले से तैयार की गई परियोजनाएं पूरी तरह से कारगर साबित हो

रही हैं। नदी के जलस्तर में उतार-चढ़ाव को देखते हुए एहतियातन फ्लड फाइटिंग कार्य लगातार जारी है। विभागीय अधिकारियों की टीमें मौके पर डटी हुई हैं और स्थिति पर पैनी नजर बनाए हुए हैं।स्थानीय ग्रामीणों ने भी बाढ़ खंड की मुस्तैदी और तत्परता की खुलकर सराहना की है। ग्रामीणों का कहना है कि समय रहते उठाए गए कदमों की वजह से बाढ़ की तबाही से गांव बच गए । प्रशासन की सक्रियता से लोगों को बड़ी राहत मिली है।।

अलीगढ़ में प्रेमी ने प्रेमिका के पति को गोलियों से भूना

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। अलीगढ़ जिले में प्रेम-प्रसंग के चक्कर में पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या करा दी. पत्नी के आशिक ने गुरुवार को दिनदहाड़े प्रेमिका के पति को गोली मार दी. इसके बाद खुद जाकर थाने में सरेंडर कर दिया. मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा. फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य कलेक्ट किए हैं। पुलिस ने मृतक की पत्नी और हत्या करने वाले प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया है. दोनों से पूछताछ के बाद उन्हें जेल भेजा जाएगा. घटना अलीगढ़ के बरला थाना क्षेत्र में मोहल्ला कोठी में गुरुवार सुबह की है।

जानकारी के मुताबिक, मृतक का नाम सुरेश है. इसकी शादी 17 वर्ष पहले टूंडला के नगला बीच की रहने वाली बीना से हुई थी. इनके तीन बच्चे बेटा नीतीश (14), पुनीत (12) और बेटी रोशनी (10) वर्ष है. बताया जा रहा है, कि बीना का गांव के ही मनोज जाटव नामक युवक से बीते 10 वर्षों से अवैध संबंध थे. इस बात का पति सुरेश विरोध करता था, लेकिन दोनों का रिश्ता खत्म नहीं हुआ. यही कलह हत्या का कारण बन गया।

गुरुवार को प्रेमी मनोज बीना के पति सुरेश के घर के बाहर घूम रहा था. इस दौरान सुरेश ने टोका-टोकी की, तो दोनों में बहस होने लगी. तभी मनोज ने अपने पास रखे देसी तमंचे से सुरेश के सीने पर दो गोलियां दाग दीं. सुरेश वहीं ढेर हो गया. बीच-बचाव करने आए भाई विजय पर भी फायर किया गया, जिससे उसके चेहरे पर छर्रे लग गए हैं।

घटना के तुरंत बाद आरोपी प्रेमी मनोज सीधे बरला थाने पहुंचा और सरेंडर करते हुए हत्या की बात कबूल कर ली. पुलिस घटनास्थल पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मृतक की पत्नी बीना को भी हिरासत में ले लिया. बरला क्षेत्राधिकारी गर्वित सिंह ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और पूरे मामले की जांच जारी है।

पुलिस अधीक्षक ग्रामीण अमृत जैन ने बताया कि थाना बरला क्षेत्रान्तर्गत एक पुरुष

की हत्या करने की सूचना पर स्थानीय पुलिस द्वारा शुरुआती जांच पड़ताल में ज्ञात हुआ कि मृतक की पत्नी का प्रेम-प्रसंग करीब 7-8 साल से गांव के ही एक व्यक्ति से था। गांव के लोगों द्वारा भी इन्हें कई बार होटल आदि में पकड़ा गया था. इस कारण से इनका विवाद चल रहा था. मृतक की पत्नी द्वारा अपने प्रेमी को तमंचा उपलब्ध कराया गया. उसके प्रेमी ने उसके पति की गोली मारकर हत्या कर दी है. मृतक की पत्नी व उसके प्रेमी को हिरासत में ले लिया गया है। पूछताछ व अन्य साक्ष्यों के आधार पर अग्रिम वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

यूपी में कन्वर्ट हुई गाड़ियों की नई HSRP के लिए नहीं दर्ज करानी होगी FIR

वाहन स्वामियों को बड़ी राहत।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। परिवहन विभाग ने ऐसे वाहन स्वामियों को बड़ी राहत दी है, जो अपने वाहन को व्यावसायिक से निजी या फिर निजी से व्यावसायिक में कन्वर्ट कराते हैं. उन्हें बदली हुई नंबर प्लेट के लिए पहले एफआईआर करनी होती थी. उस एफआईआर को ऑनलाइन अपलोड करना होता है. विभाग ने एचएसआरपी (जारी करने वाली कंपनी को निर्देश दिया कि जब वाहन का कन्वर्जन होकर आरटीओ कार्यालय में दर्ज कराया जा रहा है और उसकी श्रेणी बदल रही है, तो फिर एफआईआर की जरूरत क्यों महसूस की जा रही है? कन्वर्जन के मामले में एफआईआर की कोई जरूरत नहीं होनी चाहिए। इसे हटाया जाए और जिस श्रेणी में वाहन दर्ज हो रहा है, उसकी नई नंबर प्लेट वाहन स्वामी को उपलब्ध कराई जाए. विभाग के इस फैसले के बाद एचएसआरपी जारी करने वाली कंपनी ने एफआईआर के विकल्प को हटा दिया है. बिना एफआईआर अपलोड किए ही के ही कन्वर्ट होने वाली गाड़ियों के लिए नई एचएसआरपी की बुकिंग की जा सकेगी।

प्रदेश में हजारों गाड़ियां होती हैं कन्वर्ट- उत्तर प्रदेश में प्राइवेट वाहनों का कॉमर्शियल उपयोग होते हुए परिवहन विभाग की प्रवर्तन टीम ने 1 से 11 जून तक 1474 गाड़ियां पकड़ी थीं। अधिकतर, गाड़ियों का कन्वर्जन कराया जा चुका है. वाहन स्वामियों के सामने समस्या यह आ रही थी, कि वाहन की श्रेणी बदलने के बाद भी नंबर प्लेट पहले वाले कलर की ही लगी रहती थी, क्योंकि नई नंबर प्लेट एफआईआर के बिना जारी नहीं होती थी। इससे कई बार पुलिस, प्राइवेट वाहन को कॉमर्शियल गतिविधि में लिप्त होने पर पकड़ लिया जाता था. जब कागज दिखाए जाते थे, तो सवाल जवाब हो रहा था, कि जब गाड़ी कॉमर्शियल हो गई तो नंबर प्लेट प्राइवेट की तरह सफेद क्यों है? इसके बाद वाहन स्वामियों ने इसकी जानकारी परिवहन विभाग के अधिकारियों को दी।

एडिशनल ट्रांसपोर्ट कमिश्नर (प्रवर्तन) संजय सिंह ने एचएसआरपी की बुकिंग करने वाली फर्म के प्रतिनिधि को निर्देशित किया कि इस समस्या को तत्काल दूर कराएं. कन्वर्ट होने वाली गाड़ियों के लिए जो एफआईआर की शर्त है, उसे हटाया जाए। इसके बाद यह प्रक्रिया शुरू की गई और अब बुक माय एचएसआरपी के ऐप पर कन्वर्ट होने वाली गाड़ियों के लिए एफआईआर का विकल्प हटा दिया गया है।

अब वाहन स्वामी ट्रांसफर वाले कॉलम पर जैसे ही क्लिक करेगा वैसे ही वाहन का नंबर फिल करने पर इस श्रेणी की नंबर प्लेट के लिए

अप्लाई कर सकेगा और दूसरी नंबर प्लेट बुक हो जाएगी. इससे वाहन स्वामियों की समस्या का समाधान हो गया है. हालांकि डैमेज हुई एचएसआरपी के लिए अभी भी एफआईआर की कॉपी अपलोड करना होगा. इसके बाद ही एचएसआरपी जारी होगी।

अपर परिवहन आयुक्त संजय सिंह का कहना है, कि ऐसे वाहन स्वामियों के सामने बड़ी समस्या खड़ी हो रही थी जो अपने वाहन को प्राइवेट से कॉमर्शियल या कॉमर्शियल से प्राइवेट में कन्वर्ट कराते थे. हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट के लिए एफआईआर की कॉपी अपलोड करनी होती थी जिससे वाहन स्वामियों को समस्या होती थी. कंपनी से वाहन स्वामियों को राहत देने के लिए एफआईआर का विकल्प हटाने को कहा गया था. अब यह हो गया है. इससे वाहन स्वामियों को वाहन कन्वर्ट कराने के बाद एचएसआरपी के लिए कोई दिक्कत नहीं होगी।

दिल्ली- एनसीआर में हिली धरती।, सुबह-सुबह महसूस किए गए भूकंप के तेज झटके

दिल्ली- एनसीआर में सुबह-सुबह भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए हैं। सुबह 9 बजकर 4 मिनट के करीब भूकंप के झटके महसूस किए गए। कुछ सेकेंड तक धरती हिली। इस दौरान लोग घबराकर घरों से बाहर निकल गए। फिलहाल कहीं से जान-माल के नुकसान की खबर नहीं है। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के मुताबिक, आज सुबह 9:04 बजे हरियाणा के झज्जर में रिक्टर पैमाने पर 4.4 तीव्रता का भूकंप आया। दिल्ली-एनसीआर में भी तेज झटके महसूस किए गए। इससे पहले, 17 फरवरी को दिल्ली और पूरे एनसीआर में सोमवार सुबह 5:36 बजे तेज भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। भूकंप के झटके इतने तेज थे कि जो लोग सो रहे थे, उनकी नींद टूट गई, और जो जाग रहे थे, वे दहशत में आ गए। लोगों ने तत्काल अपने घरों से बाहर निकलकर सुरक्षित स्थानों पर शरण ली और कुछ समय तक बाहर ही रुके रहे। भूकंप का केंद्र नई दिल्ली था और इसकी गहराई 5 किलोमीटर रही। भूकंप वैज्ञानिकों के अनुसार, हमारी धरती की सतह मुख्य रूप से सात बड़ी और कई छोटी टेक्टोनिक प्लेट्स से बनी है। ये प्लेट्स लगातार हरकत करती रहती हैं और अक्सर आपस में टकराती हैं। इस टक्कर के परिणामस्वरूप प्लेट्स के कोने मुड़ सकते हैं और अत्यधिक दबाव के कारण वे टूट भी सकती हैं। ऐसे में, नीचे से निकली ऊर्जा बाहर की ओर फैलने का रास्ता खोजती है और यही ऊर्जा जब जमीन के अंदर से बाहर आती है, तो भूकंप आता है।

उच्च न्यायपालिका में लैंगिक समानता की वकालत- महिला वकील 50% आरक्षण चाहती हैं

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न एक महिला की स्वतंत्रता और आजीविका कमाने की उसकी क्षमता को कमजोर कर सकता है, यह कमजोरी भारत की न्यायपालिका में लैंगिक समानता की कमी के कारण और भी बढ़ जाती है। कर्नाटक के बेंगलुरु में, भारतीय महिला वकीलों के महासंघ (IFWL) ने उच्च न्यायपालिका में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण की मांग करते हुए एक शक्तिशाली अभियान शुरू किया है। हाल ही में शहर के एक मंच पर उठाए गए इस पहल में लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा सहित पारदर्शी चयन विधियों की मांग की गई है, ताकि योग्यता आधारित नियुक्तियाँ सुनिश्चित की जा सकें और बहिष्कार के चक्र को तोड़ा जा सके।

वर्तमान में महिलाएं उच्च न्यायालयों में केवल 14.42% न्यायाधीश हैं और सर्वोच्च न्यायालय में केवल 6त्न सीटें रखती हैं, जो एक ऐसी प्रणाली को दर्शाता है जो अपारदर्शी, नेटवर्क-संचालित प्रक्रियाओं से प्रभावित है। IFWL वैधानिक निकायों और सरकारी पैनल में महिला अधिवक्ताओं के 50% प्रतिनिधित्व पर भी जोर देता है, जो कानूनी संस्थाओं पर हावी पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देता है।

यह साहसिक प्रस्ताव बहस को जन्म देता है- समर्थक इसे न्यायसंगत न्याय की दिशा में एक कदम बताते हैं, जबकि संदेहवादी सवाल करते हैं कि क्या प्रशिक्षण जैसे अतिरिक्त सुधारों के बिना कोटा गहरी जड़ें जमाए हुए पूर्वाग्रहों को मिटा सकता है। बेंगलुरु आंदोलन, हालांकि महत्वाकांक्षी है, एक ऐसी न्यायपालिका के लिए दबाव डालता है जो भारत की विविधता को प्रतिबिंबित करती है, महिलाओं को एक ऐसी प्रणाली को नया रूप देने के लिए सशक्त बनाती है जो अक्सर उन्हें चुप करा देती है।

संक्षिप्त खबरें

स्मृतिशेष संतराम यादव जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए किया हरिशंकरी पौध का रोपण

-प्रधान प्रतिनिधि अखिल कुमार यादव ने स्मृतिशेष को अर्पित की श्रद्धांजलि

बस्ती। बस्ती जिले के सदर विकासखंड अंतर्गत बिटिया रही हैग्राम पंचायत मरहा बस्ती सदर विकास खंड के ग्राम पंचायत मरहा में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अखिल कुमार यादव एवं उनके कुटुम्बीजनों ने अपने पारिवारिक सदस्य स्मृतिशेष संतराम यादव जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी पावन स्मृति को चिरस्थायी बनाने एवं उनकी आत्मा की शांति हेतु हरिशंकरी पौध (पीपल, पाकड़ व बरगद संयुक्त) का सामूहिक रूप से रोपण किया। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अखिल कुमार यादव ने इस अवसर पर कहा कि "इन पुण्यवृक्षों के रूप में पूज्य चाचा की स्मृति सदैव हमारे हृदयों में जीवित रहेगी। यह न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक पावन प्रयास है, बल्कि एक संस्कारित समाज की पहचान भी है।" इस कार्यक्रम में परिवार के सदस्य राहुल यादव, आदेश यादव, हरिकेश, मुलायम तथा अन्य ग्राम पंचायत कर्मियों ने भाग लिया और मिलकर पौधों की सेवा व संरक्षण का संकल्प लिया। हरिशंकरी पौधारोपण न केवल धार्मिक और पर्यावरणीय महत्व रखता है, बल्कि यह परिवार और समाज के लिए एक प्रेरणादायक संदेश भी देता है।

श्रावण मास में मदिरा, मांस, मछली की दूकानों पर रोक लगाने की मांग, सौंपा ज्ञापन

बस्ती। बस्ती जिले में विश्व हिंदू परिषद द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद के जिला संरक्षक प्रमोद पाण्डेय, राष्ट्रीय बजरंग दल के जिलाध्यक्ष मनमोहन त्रिपाठी, अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद जिलाध्यक्ष स्नेह पाण्डेय के नेतृत्व में पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा। मांग किया कि श्रावण मास में सनातन परम्परा की आस्था को देखते हुये 12 जुलाई से अयोध्या धाम से भद्रेश्वरनाथ धाम तक मार्ग के 500 मीटर के दोनों तरफ मदिरा, मांस, मछ्ली की दूकानों पर पूरी तरह से श्रावण मास तक पूरी तरह से प्रतिबन्ध लगाया जाय। ज्ञापन में कहा गया है कि श्रावण मास में लाखों कावरियें आस्था का जल लेकर अयोध्या से बस्ती आते हैं। ऐसे में उनकी अगाध श्रद्धा को देखते हुये मांस, मछली की दूकानों पर पूरी तरह से प्रतिबंध आवश्यक है। ज्ञापन सौंपने वालों में मुख्य रूप से वशिष्ठ मुनि, शिवेश, अजय कुमार, सोनू चौहान, ऋषभ शुक्ला, विनोद निषाद, अनिल कुमार, राज प्रकाश शुक्ल, हरिन्द्र सिंह, अनुराग शुक्ला, राजू चौहान, अमरदीप चौधरी, अमित सिंह, धर्मेन्द्र कुमार, गीता देवी, चन्द्रावती देवी, मुराती देवी, गीता रानी, सुमिरता, मालती देवी आदि शामिल रहीं।

दुर्घटना में चार गंभीर रूप से घायल, दो रेफर

लालगंज, प्रतापगढ़। अनियंत्रित कार के दुकान से टकराने से चार लोग घायल हो गये। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेजवाया गया है। प्रतापगढ़ लखनऊ राजमार्ग पर स्थित रायपुर तियांई चौराहे पर अचानक साइकिल सवार को बचाने में प्रतापगढ़ की ओर जा रही अज्ञात कार सुबह करीब साढ़े दस बजे अनियंत्रित होकर सड़क किनारे एक दुकान से टकरा गयी। इससे दुकान के आसपास मौजूद रानीगंज कैथौला निवासी पचीस वर्षीय शुभम पुत्र संतलाल, बछवल निवासी चालीस वर्षीय गोविन्द पुत्र गया प्रसाद सरोज व उनकी पत्नी तैतीस वर्षीया शिवानी तथा रायपुर भगदरा निवासी 55 वर्षीय मकबूल पुत्र तौफीक मोहम्मद घायल हो गये। आसपास के लोगों ने घायलों को इलाज के लिए ट्रामा सेंटर लालगंज भेजवाया। यहां हालत गंभीर देख चिकित्सकों ने शुभम व शिवानी को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। इधर घटना के बाद आसपास के लोगों ने चालक समेत कार को घेर कर पकड़ लिया। इसी बीच पहुंची पुलिस को देख लोगों ने उन्हें पुलिस के सुपुर्द कर दिया। घटना के चलते काफी देर तक हडकंप का माहौल बना दिखा। रानीगंज कैथौला चौकी प्रभारी विवेक यादव का कहना है कि तहरीर मिलने पर मुकदमा दर्ज किया जाएगा।

मनरेगा भ्रष्टाचार की जांच हेतु पहुंची टीम, गुणवत्ताविहीन निर्माण और फर्जी भुगतान की शिकायत

●-कुदरहा ब्लॉक के भक्तूपुर ग्राम पंचायत का मामलाजांच टीम ने बिंदुवार किया शिकायत का परीक्षण शिकायतकर्ता प्रेमचन्द्र चौघरी की शिकायत पर हुई भ्रष्टाचार की जाँच

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले केविकास खंड कुदरहा के ग्राम पंचायत भक्तूपुर में मनरेगा योजना के अंतर्गत हुए भ्रष्टाचार और गुणवत्ताहीन निर्माण की शिकायतों को जिलाधिकारी ने गंभीरता से लिया है। इसीक्रम में मंगलवार को जिलाधिकारी द्वारा गठित दो सदस्यीय जांच टीम ने संबंधित गांवों में पहुंचकर कार्यों की बिंदुवार जांच की। जांच टीम में लेखा परीक्षा अधिकारी अनिल कुमार सिंह और जेई अजय यादव शामिल थे। जाँच टीम भ्रष्टाचार की जाँच हेतु भक्तूपुर पहुंची, जहां स्थानीय शिकायतकर्ता प्रेमचंद चौधरी द्वारा की गई शिकायत की पड़ताल की गई। प्रेमचंद चौधरी ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया था कि ग्राम पंचायत भक्तूपुर में मनरेगा के तहत कराए जा रहे नाली निर्माण कार्य में मानकों की अनदेखी की गई है। शिकायत में कहा गया है कि ग्राम प्रधान चन्द्रकला (पत्नी सतिराम उर्फ भुक्कू) द्वारा राम सृज के घर से दल्लू के घर तक बनाई गई नाली की खुदाई जेसीबी मशीन से करवाई गई, जबकि शासनादेश के अनुसार यह कार्य मनरेगा मजदूरों से कराया जाना चाहिए था। शिकायतकर्ता के पास इस कार्य से संबंधित फोटो और वीडियो साक्ष्य मौजूद हैं। इसके अलावा लालगंज मार्ग से श्यामलाल के खेत तक सड़क के दोनों किनारों पर मिट्टी सफाई एवं भराई का कार्य भी ठेके पर कराया गया, जबकि कागजों में इसे मनरेगा मजदूरों से कराया गया दिखाया गया है। आरोप है कि दिनांक 4 मार्च 2025 को मस्टररोल संख्या 16586 से 16595 के माध्यम से 97 मजदूरों की फर्जी उपस्थिति दर्ज कर फर्जी भुगतान किया गया। शिकायत में हथियाँव खुर्द गांव में अन्य निर्माण कार्यों की स्थिति पर भी सवाल उठाए गए हैं। वहां 25 सितंबर 2023 को बनी नाली मात्र तीन महीनों में क्षतिग्रस्त हो गई, जिससे गंदगी और कीड़ों का प्रकोप बढ़ गया है। वहीं, 19 जुलाई 2023 को बनी सीसी रोड (आईडी संख्या 3153013019/आरसी/95848625582 32) भी चार महीनों में ही टूटकर चलने लायक नहीं बची है। शिकायतकर्ता ने मांग की थी कि मनरेगा योजना के तहत कराए गए इन कार्यों की उच्च स्तरीय जांच करवाई जाए, फर्जी भुगतान की रिकवरी की जाए और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाए। जांच टीम ने भक्तूपुर में प्रारंभिक जांच कर ली है और बताया कि रिपोर्ट जल्द ही जिलाधिकारी को सौंपी जाएगी। जिलाधिकारी द्वारा इस मामले को गंभीरता से लिया जा रहा है और जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। फ़िलहाल केवल यह देखना मात्र बाक़ी रह गया है कि जांच टीम द्वारा आख्या रिपोर्ट कब तक सौंपा जाएगा और जिलाधिकारी बस्ती उस रिपोर्ट पर क्या निर्णय लेंगे। यद्यपि जाँच टीम द्वारा शिकायतकर्ता को जाँच तिथि की कोई लिखित सूचना पूर्व से नहीं दी गयी थी एक दिन पूर्व रात में फोन के माध्यम से शिकायत कर्ता को सूचित कर जाँच टीम जाँच हेतु गांव में आ धमकी जिसके कारण उसे अपने गवाही - सफाई हेतु पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाया।

पानी में डूबने से 25 वर्षीय युवक की मौत

●- अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था मृतक मनोज प्रजापति, बेटे के मौत से मां-बाप का रो-रोकर बुरा हाल

स्वतंत्र प्रभात

रतनपुर/महराजगंज। परसामलिक थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत सेखुआनी चौराहे से करीब दो सौ मीटर पश्चिम नौतनवा-ठूठीबारी मुख्य मार्ग के उत्तर स्थित न्यू कालोनी के पास गुरूवार की सुबह गड्ढे में एक युवक डूब गया। पास के खेत में काम कर रहे लोग दौड़कर उसे पानी से बाहर निकाला लेकिन तब तक डूबने से उसकी मौत हो जुटी थी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त करने लगी। वहीं पुलिस व सोशल मीडिया के जरिए पता चलने पर परिजन घटनास्थल पर पहुंचे। परिजनों की सिफारिश पर पुलिस ने पंचनामा के कार्यवाही के बाद शव को सुपुर्द कर दिया। जानकारी के मुताबिक परसामलिक थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत सिसहनिया उर्फ शीशमहल टोला कल्याणपुर निवासी मनोज प्रजापति पुत्र सर्वजीत प्रजापति उम्र (25) का मानसिक संतुलन सही नहीं था। रोजाना सुबह साईकिल लेकर इधर-उधर अनायास घूमता रहता था। गुरूवार की सुबह साईकिल लेकर सेखुआनी चौराहे पर गया हुआ था। वापस घर लौटते समय सेखुआनी चौराहे से दो सौ मीटर पश्चिम बघेला नाला के पहले स्थित न्यू कालोनी के पास एक गढ्ढे में नहाते समय डूब गया। खेत में काम कर रहे लोग पानी में डूबता देख युवक को बचाने के लिए दौड़े और पानी से बाहर निकाला लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस उपनिरीक्षक अभिषेक जायसवाल व आदर्श सिंह ने शव को कब्जे में लेकर थाने लाई जहां पंचनामा की कार्यवाही के बाद शव को परिजनों की मांग पर सुपुर्द कर दिया। बताया जाता है कि मृतक मनोज प्रजापति अपने माता पिता का इकलौता बेटा था। आठ वर्ष पूर्व उसकी शादी हुई थी लेकिन मानसिक संतुलन सही नहीं रहने के कारण उसकी पत्नी उसे छोड़कर चली गई। इकलौते पुत्र की मौत से घर में कोहराम मचा हुआ है। पिता सर्वजीत व माता शीला का रो-रोकर बुरा हाल है। बेटे की मौत को मां सहन नही कर पा रही और रह-रह कर बेहोश हो जा रही है।

इस संबंध में थाना प्रभारी निरीक्षक योगेन्द्र कुमार राय ने बताया कि पानी में डूबने से युवक की मौत हो गई है। परिजन शव का पोस्टमार्टम नहीं करवाना चाह रहे थे इसलिए शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया है।

चीनी मिल समेत 14 सूत्रीय मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट में किसानों का धरना 209वें दिन जारी

स्वतंत्र प्रभात

देवरिया। चीनी मिल चलाओ संघर्ष समिति एवं संयुक्त महा मोर्चा के संयोजन में बैतालपुर चीनी मिल सहित 14 सूत्रीय मांगों को लेकर किसानों का धरना देवरिया कलेक्ट्रेट परिसर में आज 209 वें दिन जारी रहा ।

धरने की अध्यक्षता करते हुए पूर्व सांसद आस मोहम्मद ने कहा कि बैतालपुर चीनी मिल देवरिया के अस्मिता की प्रतीक है यही एकमात्र चीनी मिल है जिसके पास सर्वाधिक उपयुक्त क्षेत्र है केवल मिल गेट क्षेत्र ही इतना अधिक है जिससे मिल को पूरी क्षमता से चलाया जा सकता है इसी को आधार बनाकर बीते दिनों में पूर्ववर्ती सरकार ने अन्य मिल को बेचते समय इस मिल को नवीनीकरण करके चलाने हेतु अनुबंध करके विक्रय किया है और इसी अनुबंध के अनुसार किसान मिल को चलाने हेतु धरनारत हैं और सुबे के मुखिया ने भी कई बार मिल चलाने की देवरिया जिले में घोषणा किया पर उसे पूरा नहीं कर पाए। हम उनसे पुनः आग्रह करते हैं कि तत्काल मिल चालू कर अपने ही द्वारा किए वादे को पूरा करें। किसान अपने सहनशीलता के सीमा को पार कर शीघ्र बड़ा आंदोलन खड़ा करेंगे। इस अवसर पर बृजेंद्र मणि त्रिपाठी ,राकेश सिंह, वीरेंद्र, सुनील, बकरीदन उर्फ बरकत अली , दीनदयाल शर्मा, अशोक मालवीय, नईम खान, संजीव शुक्ला, विनोद पति, एकेश चंद्र मिश्रा, पन्नालाल पाठक, चंद्रदेव सिंह, धर्मेंद्र पांडेय, रजनीश कुमार उपाध्याय, जयप्रकाश, जितेंद्र यादव, जोगिंदर , जय श्री प्रसाद, वीरेंद्र यादव, राम प्रकाश सिंह, रामचंद्र प्रजापति, जयप्रकाश पासवान, परमानंद सिंह, अवधेश मणि त्रिपाठी, राम नारायण, सुरेंद्र, कृपा शंकर, संतोष कुमार यादव, रत्नेश मिश्रा, जगदीश यादव, अनूप कुमार, राजेश आजाद, रामकेवल शर्मा, शंभू नाथ तिवारी इत्यादि मौजूद रहे।

सिसेण्डी में बिजली समस्या को लेकर व्यापार मंडल के प्रतिनिधि मंडल अधिशासी अभियंता से मिलकर समाधान का मिला आश्वासन

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज, लखनऊ- मोहनलालगंज विकास खण्ड क्षेत्र के सिसेण्डी क्षेत्र में लगातार हो रही बिजली कटौती, लो-वोल्टेज और फॉल्ट की समस्याओं को लेकर स्थानीय व्यापारियों में आक्रोश बढ़ता जा रहा था। इसको लेकर बुधवार को जिला उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल सिसेण्डी के अध्यक्ष मोश इमरान खाँ, महामंत्री विरेन्द्र शुक्ला सोनू वरिष्ठ समाजसेवी ललित दीक्षित के नेतृत्व में व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने अधिशासी अभियंता श्रवण कुमार सिंह से मुलाकात की और क्षेत्र की गंभीर बिजली समस्याओं से अवगत कराया।व्यापार मंडल द्वारा अधिशासी अभियंता को एक ज्ञापन सौंपा गया, जिसमें क्षेत्रवासियों द्वारा विगत कई महीनों से झेली जा रही निम्नलिखित

समस्याओं को प्रमुखता से उठाया गया अनावश्यक विद्युत कटौती,लो-वोल्टेज की गंभीर समस्या, लाइनमैन द्वारा फोन न उठाना सिसेण्डी फीडर से न्यू पावर हाउस को जोड़ने की मांग ट्रांसफार्मर की क्षमता बढ़ाने की जरूरत है फाल्ट आने पर समय से कर्मचारी न पहुंचना,पुराने जर्जर तारों के स्थान पर नए तार लगाने की मांग इस मौके पर व्यापार मंडल के कोषाध्यक्ष सुनील गुप्ता, वरिष्ठ उपाध्यक्ष उपाध्यक्ष अंजनी शुक्ल, प्रदीप गुप्ता, शकील खान, इरशाद अहमद, चन्नी, संजय सिंह सहित कई अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।अधिशासी अभियंता श्रवण कुमार सिंह ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि पांच दिनों के भीतर सिसेण्डी की विद्युत समस्याओं का समाधान कर दिया जाएगा, और क्षेत्र को शीघ्र न्यू पावर हाउस से जोड़ा जाएगा ताकि लो-वोल्टेज और ट्रिपिंग जैसी समस्याओं से राहत मिल सके।व्यापार मंडल ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि निर्धारित समयसीमा में समाधान नहीं हुआ तो वे अधिशासी अभियंता कार्यालय के समक्ष धरना प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे, जिसकी समस्त जिम्मेदारी विद्युत विभाग एवं शासन-प्रशासन की होगी।यह पहल स्थानीय जनता के लिए बड़ी राहत की उम्मीद लेकर आई है। व्यापार मंडल की यह सक्रियता सराहनीय है और इससे सिसेण्डी क्षेत्र के नागरिकों की समस्याओं के शीघ्र समाधान की उम्मीद बढ़ी है।

हाइवे पर आग का गोला बनी बाइक जलकर राख

लालगंज, प्रतापगढ़। हाइवे पर अचानक तेज गति की बाइक आग का गोला बन गयी। नेशनल हाइवे रायबरेली प्रतापगढ़ पर गुरूवार को लालगंज कोतवाली के नया का पुरवा मेढ़ावां निवासी दिनेश कुमार त्रिपाठी पुत्र कृष्णानंद त्रिपाठी घरेलू सामान लेकर बाइक से घर जा रहे थे। अचानक हाइवे पर बाइक बंद हो गयी। दिनेश ने बाइक चालू करने का प्रयास किया तब उसमें से आग की लपटें निकलने लगीं। बदहवाश दिनेश बाइक छोड़कर दूर जान बचाने को भाग निकला। बाइक को आग का गोला देख राहगीरों में भी दहशत फैल गयी। कुछ देर के लिए नेशनल हाइवे पर आवागमन ठहर गया। घटना की सूचना पाकर कोतवाली के दरोगा दीपक यादव फोर्स के साथ पहुंचे। पुलिस ने वहां जमा भीड़ को हटाया। इधर फायर ब्रिगेड की टीम भी आग पर काबू पाने में जुटी। हालांकि बाइक पूरी तरह जलकर राख हो गयी।

स्वच्छ, हरा भरा रामनगर हमारा संकल्प- यशकान्त सिंह

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में एक पेड़ मां के नाम अभियान की कड़ी में बुधवार को रामनगर विकास खण्ड के ब्लाक प्रमुख यशकान्त सिंह के संयोजन में स्वच्छ, स्वस्थ रामनगर के संकल्पों के पास सघन स्वच्छता अभियान के बाद पौधरोपण किया गया। यशकान्त सिंह ने कहा कि स्वच्छता का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, कर्मयोगी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं स्वच्छता को लेकर हमेशा से सजग रहे है। वर्तमान समय में संचारी रोगों से बचाव हेतु दस्तक अभियान चल रहा है और वृहद वृक्षारोपण का कार्यक्रम भी चल रहा है। हम सभी ने यह तय किया है कि एक अभियान के रूप में विकास खण्ड को स्वच्छ व सुन्दर बनाने के लिए इस स्वच्छता अभियान को चरणबद्ध तरीके से गांव-गांव तक पहुँचायेगे । उन्होने सभी समाजसेवी संगठन, सरकारी व अर्द्धसरकारी संस्थाओं में काम करने वाले कर्मचारी, स्कूली बच्चों सभी को साथ में लेकर इस अभियान को सफल बनाने का आवाहन किया।

कार्यक्रम में खण्ड विकास अधिकारी राजेश कुमार सिंह, सहायक विकास अधिकारी (पं0) शिव कुमार लाल, ए0पी0ओ0 विजय प्रजापति, जे0ई0 (आर0ई0डी0) अरुणवीर सिंह, लेखाकर मनोज श्रीवास्तव, , अरविन्द, पूर्णमासी सोनकर, मण्डल अध्यक्ष भाजपा रामनगर, श्याम नाथ चौधरी, मण्डल महामंत्री गिरजेश मिश्रा, मण्डल महामंत्री गिरजेश यादव, प्रदीप सिंह, प्रशान्त सिंह, वीर श्रीवास्तव, रामसागर निषाद, सुशील चौधरी आदि शामिल रहे।

गुरु पूर्णिमा पर भाजपा द्वारा गुरु सम्मान कार्यक्रम का भव्य आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में गुरुवार को गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर भारतीय जनता पार्टी की ओर से जनपद भर में ÷गुरु सम्मान कार्यक्रम÷ का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर भाजपा पदाधिकारियों ने जिले के विभिन्न मठ-मंदिरों, गुरुद्वारों एवं शिक्षण संस्थानों में जाकर गुरुजनों, संत-महात्माओं, पुरोहितों और शिक्षकों का सम्मान किया।इस विशेष अभियान की जिम्मेदारी जिला महामंत्री चन्द्रशेखर मुन्ना एवं पूर्व मीडिया प्रभारी अमृत कुमार वर्मा को सौंपी गई थी, जिनके संयोजन में कार्यक्रम जिले के विभिन्न हिस्सों में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।पूर्व सांसद एवं असम राज्य प्रभारी हरीश द्विवेदी ने कम्पनी बाग स्थित गुरुद्वारा में ज्ञानी प्रदीप सिंह एवं ज्ञानी हर्षदीप सिंह को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भाजपा मात्र एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि यह विचारधारा, संस्कार और राष्ट्र निर्माण की संकल्प शक्ति है। उन्होंने अपने राजनीतिक, सामाजिक एवं वैचारिक गुरुओं को नमन करते हुए भारतीय संस्कृति में गुरु परंपरा के महत्व पर प्रकाश डाला।भाजपा जिलाध्यक्ष विवेकानंद मिश्र ने संत कबीर मठ, कटरा बस्ती के महंत श्रद्धेय राम लखन दास जी और माँ दुर्गा मंदिर, कप्तानगंज के महंत आद्या प्रसाद त्रिपाठी जी को अंगवस्त्र एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका सम्मान किया। उन्होंने कहा कि गुरु पूर्णिमा आत्मिक ऊर्जा, प्रेरणा और ज्ञान का पर्व है, जो हमें गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर देता है। ब्लॉक प्रमुख अनिल दुबे, अमृत कुमार वर्मा एवं ब्रह्मदेव यादव ने चित्रकूट से पधारे आचार्य डॉ. विपिन विराट महाराज को सामूहिक रूप से अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर जिले भर में आयोजित कार्यक्रमों में शिक्षकों को भी उनके शिक्षा क्षेत्र में योगदान के लिए सम्मानित किया गया। भाजपा कार्यकर्ताओं ने सम्मान-पत्र एवं मिठाई भेंट कर गुरुजनों का वंदन किया कार्यक्रम में प्रमोद पांडेय, अभिषेक कुमार, गौरव मणि त्रिपाठी, वरुण सिंह, गौरव अग्रवाल, कुलदीप सिंह, साहेब सिंह, परमजीत सिंह चिन्टू, हरि सिंह बब्बू, मनीष चौबे, भूपेंद्र सिंह राणा, दिव्यांशु दुबे, विनोद चौधरी, अमित शुक्ल, हनुमान प्रसाद सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रोड पर पानी का जलजमाव, आवागमन में दिक्कत

स्वतंत्र प्रभात

रतनपुर/महराजगंज। नौतनवां ब्लाक क्षेत्र के ग्राम पंचायत अमहवा में पानी का समुचित निकासी नहीं होने के कारण गांव के मुख्य सड़क पर पानी का जलजमाव है। ऐसे में लंबे समय से गांव के लोग पानी के जलजमाव से आवागमन करने को विवश हैं। वहीं जलजमाव से सबसे अधिक दिक्कत स्कूली बच्चों को झेलनी पड़ रही है। प्रतिदिन नौनिहाल जलजमाव से होते हुए स्कूल पहुंच रहे हैं। कई बार तो नौनिहाल पानी में गिरकर चोटिल भी हो चुके हैं। जानकारी के मुताबिक ग्राम पंचायत अमहवा में लंबे समय से हल्की बारिश होने से नाली का गंदा पानी ओवरफ्लो होकर मुख्य रोड पर जमा हो जाता है। पानी के निकासी के स्थान पर गांव के कुछ लोगों द्वारा अवैध कब्जा व अतिक्रमण किया गया है जिससे पानी का समुचित निवासी नहीं हो पा रहा है। जिसके कारण हल्की बारिश में ही गांव का सड़क सैलाब बन जाता है। लंबे समय तक

जलजमाव होने के कारण ग्रामीणों में संक्रामक बिमारियों का भी डर सताने लगा है। वहीं जलजमाव को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश भी बना हुआ है। वहीं ग्राम प्रधान द्वारा जल निकासी को लेकर कई बार वैकल्पिक व्यवस्था किया गया लेकिन जल निकासी के स्थान पर कब्जा होने के कारण जल जमाव की स्थिति लगातार बनी हुई है। इस संबंध में एडीओ पंचायत रामकृष्ण प्रसाद ने बताया कि जल्द ही जल निकासी का समुचित व्यवस्था किया जाएगा।

केला की खेती करने वाले कृषक मौसम आधारित फसल बीमा योजना का उठाये लाभ

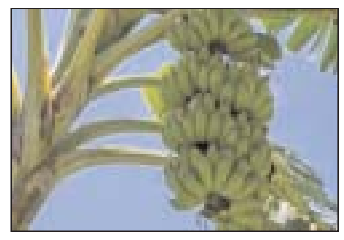

प्रतापगढ़। जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा ने पुर्नगठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना के सम्बन्ध में कृषकों को सूचित किया है कि यूनिवर्सल सोम्पो कम्पनी द्वारा केला की खेती करने वाले कृषकों को केला फसल पर बीमित राशि प्रति हेक्टेयर रूपये 150000 देय है, जिस पर किसान द्वारा देय प्रीमियम के रूप में रूपये 4500 है। अधिक जानकारी हेतु कार्यालय जिला उद्यान अधिकारी प्रतापगढ़ में किसी भी कार्य दिवस में सम्पर्क किया जा सकता है।

आईएएस सौम्य शर्मा ने गुरु पूर्णिमा पर वृद्धजनों से लिया आशीर्वाद

प्रतापगढ़। एलायंस क्लब व वृद्धाश्रम परिवार ने गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गुरुवार को वृद्धाश्रम में विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अभी हाल ही में आईएएस में चयन होने वाले सौम्य शर्मा ने सभी वृद्धजनों को सम्मानित कर आशीर्वाद लेते हुए कहा कि मुझे यहां पर आने पर जो प्रेरणा मिली है,मैं अपनी सर्विस के दरमियान वृद्धजनों की सेवा करने के लिए तत्पर रहूंगा। जब भी मुझे प्रतापगढ़ आने का अवसर मिलेगा मैं वृद्धजनों से आशीर्वाद लेने आया करूंगा। कार्यक्रम के आयोजक एलायंस क्लब के इंटरनेशनल डायरेक्टर समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य ने बताया कि गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर वृद्धजनों को सम्मानित किया गया।केक काटकर गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया गया। अंत में वृद्धजनों के साथ मुख्य अतिथि आईएएस सौम्य शर्मा ने पौधरोपण किया।इस अवसर पर सौम्य शर्मा के पिता सुरेंद्र शर्मा ने कहा कि वृद्धजनों की सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं है। मुझे वृद्धजनों से मिलकर जो सुख की अनुभूति हुई है वह कभी भी नहीं मिल सकती है। इस अवसर पर सुरेंद्र शर्मा, अंबिका प्रसाद, दादा जयराम, शिव बाबू, रेखा उमरवैश्य, आशिक अली, शिवचरण, आदर्श कुमार, विवेक कुमार, अमित कुमार, धर्मेंद्र कुमार, पंकज, सुनील कुमार आदि उपस्थित रहे।

गुरु पूर्णिमा पर गुरुजन सम्मानित

●भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं गुरु-शिष्य परम्परा- पवन

स्वतंत्र प्रभात

देवरिया। किसान मोर्चा भाजपा द्वारा गुरु पूर्णिमा के अवसर पर देवरिया नगर स्थित श्री रामजानकी मंदिर के पुजारी जयप्रकाश महाराज जी को किसान मोर्चा कार्यकर्ताओ ने अंगवस्त्र और बजरंगबली का चित्र भेंट कर उनका पूजन किया। इस अवसर पर किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष पवन कुमार मिश्र ने पुजारी जी का तिलक लगाकर पूजन करते हुए कहा कि गुरु पूर्णिमा को हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण पर्व है, हमारे धर्मग्रन्थो में गुरु में गु का अर्थ अंधकार या अज्ञान और रू का अर्थ प्रकाश है, इसलिए अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले को गुरु कहा जाता है। उन्होंने कहा कि गुरु का महत्व का हर व्यक्ति के जीवन मे होता है। गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

भाजपा नेता अम्बिकेश पाण्डेय ने कहा कि यह पर्व गुरुजनों के प्रति श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करने की प्रेरणा देता है। गुरु वंदन कार्यक्रम के माध्यम से हम अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं, जिससे हमारी सांस्कृतिक विरासत और सशक्त होती है।यह आयोजन राजस्थान की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समृद्धि को दर्शाने वाला एक अनूठा प्रयास है, जो गुरुजनों के योगदान को नई पीढ़ी तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस अवसर पर कुँवर राय, विजेंद्र चौहान, अंकुर राय, सुमन्त चतूर्वेदी,अनिल प्रसाद, सन्नी चतूर्वेदी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

ज़हरीला पदार्थ खाने से किशोरी की हालत नाजुक, जिला अस्पताल रेफर

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के पूरे कलिका बक्स गांव में एक 14 वर्षीय किशोरी ने बृहस्पतिवार को संदिग्ध रूप से कोई विषाक्त पदार्थ खा लिया। घटना की जानकारी मिलते ही परिजन घबरा गए और आनन-फानन में उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे। स्वास्थ्य केंद्र पर प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने उसकी हालत गंभीर देखते हुए उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। इमरजेंसी में मौजूद डॉक्टरों ने बताया कि किशोरी को समय रहते अस्पताल लाया गया, जिससे उसकी जान बचाने की कोशिश की जा रही है। परिवारीजनों ने डॉक्टरों को बताया कि किशोरी ने अनजाने में कोई जहरीला पदार्थ खा लिया था। हालांकि यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि यह घटना दुर्घटनावश हुई या इसके पीछे कोई अन्य कारण है। गांव में घटना को लेकर चिंता का माहौल है। लोग दबी जुबान में तरह-तरह की बातें कर रहे हैं। परिजन बेटी के लिए दुआ कर रहे हैं।

महिला से संबंध बनाने का आरोप, जेवर भी हड़पे

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव की महिला ने गाँव के ही युवक पर शादी का झांसा देकर सात साल तक अवैध संबंध बनाने, विश्वासघात करने और जेवर हड़पने का गंभीर आरोप लगाया है। पीड़िता ने कोतवाली पहुंचकर युवक के खिलाफ तहरीर दी और न्याय की गुहार लगाई है। पीड़िता का कहना है कि वह पहले से विवाहित थी। लेकिन युवक ने प्रेमजाल में फंसा कर उसे अपने साथ अलग अलग जगहों पर घुमाया और शादी का वादा कर संबंध बनाए। महिला के मुताबिक आरोपी लगातार शादी का भरोसा दिलाता रहा और इस दौरान उसने महिला से उसके कीमती जेवर भी ले लिए, जिन्हें बाद में बेच डाला। महिला ने बताया कि युवक की वजह से उसका वैवाहिक जीवन टूट गया और पति ने उसे घर से निकाल दिया। अब युवक न तो शादी करने को तैयार है और न ही साथ रखने को, उल्टा उसे धमका रहा है और जान से मारने की धमकी दे रहा है। इंस्पेक्टर प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि अभी तक मामला उनके संज्ञान में नहीं आया है। तहरीर मिलने पर मामले की जांच कर विधिक कार्रवाई की जाएगी।

राजेंद्र प्रताप सिंह के ब्लॉक अध्यक्ष बनने कांग्रेसियों में खुशी

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के बेहटा कला गांव निवासी युवा कांग्रेसी कार्यकर्ता राजेंद्र प्रताप सिंह को ब्लॉक कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उनके मनोनयन पर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं और पार्टी पदाधिकारियों ने खुशी व्यक्त की है। इसके अलावा पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष कामता प्रसाद गौड़ और सतीश पासवान को जिला सचिव बनाया गया। अपने मनोनयन पर पदाधिकारियों ने जिला अध्यक्ष पंकज तिवारी सहित प्रदेश के नेताओं का आभार व्यक्त किया। नए पदाधिकारी के मनोनयन पर वरिष्ठ कांग्रेसी नेता महेश प्रसाद शर्मा, पूर्व कांग्रेस प्रत्याशी सुधा द्विवेदी, राकेश भदौरिया, कांग्रेस सोशल मीडिया प्रदेश सचिव कमल सिंह चौहान राजू नेता राजकुमार द्विवेदी, आकर्षण द्विवेदी सहित तमाम कांग्रेसियों ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

एक पेड़ अपनी मां के नाम लगाकर करें प्रकृति का वंदन- राजेश शुक्ला

एक पेड़ अपनी मां के नाम अभियान के तहत खैराबाद के ग्राम पंचायत रहीमाबाद में सराय नदी के किनारे वृक्षारोपण महा अभियान के तहत भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष राजेश शुक्ला कारागार राज्य मंत्री सुरेश राही द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष राजेश शुक्ला ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा इस कार्यक्रम के तहत पर्यावरण के संरक्षण का विशेष कार्य किया जा रहा है उन्होंने कहा जन-जन से अपील है इस कार्य को अपना धार्मिक कर्तव्य समझकर सभी लोग सफल बनाएं। और अपनी मां के नाम एक पेड़ लगाकर प्रकृति रूपी मां का वंदन करें। जिला अध्यक्ष ने बताया कि आने वाले समय में इस अभियान के परिणाम के तहत वृक्षारोपण से जहां वायु प्रदूषण में कमी आएगी साथ ही साथ ग्लोबल वार्मिंग जैसी गंभीर समस्या से भी निजात मिलेगा इस अवसर पर कारागार राज्य मंत्री सुरेश राही ने सभी से वृक्षारोपण कर पर्यावरण के संरक्षण करने की अपील की।

धोखाधड़ी कर करोड़ों की जमीन बेचने वाला गैंग का सदस्य गिरफ्तार

● ......फर्जी रजिस्ट्री कर सेना के जवानों को बनाया था शिकार।

.....मोहनलालगंज पुलिस की बड़ी कार्रवाई, इनोवा क्रिस्टा सफारी स्विफ्ट बोलोरो भी बरामद।

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज। लखनऊ, एसीपी मोहनलालगंज रजनीश वर्मा के दिशा-निर्देशन एवं प्रभारी निरीक्षक दिलेश कुमार सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम ने एक लंबे समय से फरार चल रहे जमीन धोखाधड़ी गैंग के सक्रिय सदस्य को गिरफ्तार कर बड़ी सफलता प्राप्त की है। गिरफ्तार अभियुक्त मदनराम पुत्र विश्वनाथ निवासी राजा गांव, खरौनी, थाना बांसडीह जनपद बलिया बताया गया है। पुलिस ने उसके कब्जे से धोखाधड़ी की कमाई से खरीदी गई इनोवा क्रिस्टा कार, स्विफ्ट बोलोरो सफारी कार बरामद की है। पीड़ित नीलाम्बर झा ने मोहनलालगंज थाने में बीते 17 अप्रैल को मुकदमा दर्ज कराया था।उन्होंने बताया कि 2019 में उन्होंने अपनी पत्नी के नाम पर मोहनलालगंज स्थित प्लाटिंग में 1500 वर्गफुट की भूमि एच.के. इंफ्राविजन प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के माध्यम से प्रमोद कुमार उपाध्याय और विनोद कुमार उपाध्याय से खरीदी थी। लेकिन वर्षों बीत जाने के बावजूद उन्हें जमीन का कब्जा नहीं दिया गया।पीड़ित शिकायतकर्ता उस समय सेना में कार्यरत थे और ड्यूटी के चलते लखनऊ कम ही आना-जाना हो पाता था। इसी का फायदा उठाकर उनके साथ धोखाधड़ी की गई।इस तरह की धोखाधड़ी के कुल 19 मुकदमे मोहनलालगंज थाने में दर्ज हुए थे। पूर्व में इस मामले में गैंग के सरगना प्रमोद उपाध्याय को बीते 15 जून को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है।

मोहनलालगंज पुलिस की विवेचना में सामने आया कि मदनराम भी उक्त रियल एस्टेट कंपनी का एडिशनल डायरेक्टर था और उसने प्रमोद व विनोद उपाध्याय के साथ मिलकर 6 अलग-अलग मामलों में पीड़ितों से धोखाधड़ी की थी। पुलिस को लंबे समय से उसकी तलाश थी, जिसे आखिरकार बीते बुधवार को बलिया जनपद के राजा गांव खरौनी से गिरफ्तार किया गया।गिरफ्तार किए गए आरोपी ने स्वीकार किया कि वह सेना व अर्द्धसैनिक बलों के कर्मियों को विशेष रूप से निशाना बनाता था। उन्हें आकर्षक और सस्ते दामों में प्लॉट देने का झांसा देकर रजिस्ट्री करवाई जाती थी। लेकिन जिन जमीनों की रजिस्ट्री की जाती थी, वे या तो अस्तित्व में ही नहीं होती थीं या विवादित होती थीं। बाद में जब पीड़ित कब्जे की मांग करते थे तो आरोपी समय पर पैसा लौटाने का झांसा देकर उन्हें टालता रहता था।मोहनलालगंज पुलिस की यह कार्रवाई रियल एस्टेट की आड़ में चल रहे बड़े धोखाधड़ी गिरोह की कमर तोड़ने में मील का पत्थर मानी जा रही है। एसीपी रजनीश वर्मा ने पुलिस टीम की प्रशंसा करते हुए आगे भी ऐसे अपराधियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई का भरोसा दिलाया है।

न्यू स्टैंडर्ड पब्लिक स्कूल सलेथू में मनाया गया गुरु पूर्णिमा पर्व

स्वतंत्र प्रभात

महराजगंज/रायबरेली। न्यू स्टैंडर्ड पब्लिक स्कूल सलेथू में गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया गया। इस पावन अवसर पर छात्रों ने शिक्षक-शिक्षिकाओं को तिलक लगाकर आशीर्वाद लिया। प्रधानाचार्य राजीव सिंह द्वारा प्रार्थना सभा में महर्षि वेदव्यास के छाया चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किया गया। छात्र- छात्राओं द्वारा शिक्षकों के सम्मान में विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

छात्र-छात्राओं ने गुरु के महत्त्व पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुरु हमारे जीवन के अंधकार को दूर करके हमें सफलता की राह दिखाते है,वे हमारे चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस गुरु पूर्णिमा पर हम अपने शिक्षकों का धन्यवाद व आभार व्यक्त करते हैं और उनके द्वारा दिए गए ज्ञान को अपनाने का संकल्प लेते हैं। इस पावन अवसर पर प्रधानाचार्य राजीव सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि आज का दिन छात्रों के लिए शिक्षकों के सम्मान का दिन होता है। यह पर्व महर्षि वेदव्यास की जयंती के रूप में मनाया जाता है जिन्होंने मानव समाज को अनमोल ज्ञान दिया।गुरु पूर्णिमा भारतीय संस्कृति का पावन पर्व है जो ज्ञान,शिक्षण और मार्गदर्शक के प्रतीक गुरु को समर्पित होता है, यह दिन गुरु शिष्य परंपरा को सम्मान देने का उत्तम अवसर है7 हमारे माता-पिता भी हमारे शिक्षक की भांति होते है और वो भी सम्मान के अधिकारी है।अंत में प्रधानाचार्य ने सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को गुरु पूर्णिमा की शुभकामनाएं प्रेषित की। इस अवसर पर उप- प्रधानाचार्या रजनी श्रीवास्तव, शिक्षक-शिक्षकाएं व छात्र- छात्राएं उपस्थित रहे।

कॉलेज के संस्थापक की मनाई गई अठारहवीं पुण्यतिथि

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ- लतीफपुर गांव स्थित श्री महेश सिंह सरस्वती इंटर कॉलेज के संस्थापक व पूर्व प्रबंधक आनंद पाल सिंह की मनाई गई पुण्य तिथि।छात्र - छात्राओं को किया गया सम्मानित।मुख्य अतिथि के रूप में बच्चन लाल त्रिपाठी (सेवानिवृत्त स्थापना लिपिक जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय)पहुंचे।

गुरुवार को माल क्षेत्र के श्री महेश सिंह सरस्वती इंटर कॉलेज के संस्थापक व पूर्व प्रबंधक आनंद पाल सिंह की अठारहवीं पुण्यतिथि कॉलेज परिसर में मनाई गई। उनके चित्र पर दीप जलाकर, माल्यार्पण व पुष्प अर्पित कर दो मिनट का मौन रख उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

इस अवसर पर विद्यालय प्रबन्धक गीता सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि संस्थापक ने ग्रामीण क्षेत्र में विद्यालय की नींव रखी थी। उनकी सोच थी जब गांव के बच्चे पढ़ कर आगे जाएंगे तभी देश का विकास संभव है। इस सोच के साथ उन्होंने शिक्षा की अलख जगाई। आज विद्यालय द्वारा शिक्षित छात्र तमाम उपयोगी पद पर योगदान कर देश व राज्य का नाम रोशन कर रहे हैं। उनके योगदान को छात्र एवं अभिभावक सदा याद रखेंगे। मौके पर तमाम लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्रधानाध्यापक ने सभी का आभार व्यक्त किया।

श्री महेश सिंह सरस्वती इंटर कालेज के संस्थापक व पूर्व प्रबंधक आनंद पाल सिंह की 18वी पूण्य स्मृति दिवस पर विगत वर्षो की भांति बोर्ड परीक्षा में उत्तीर्ण हाई स्कूल मेंधावी छात्र छात्राओं को प्रबन्ध समिति द्वारा रु.51 सौ की कक्षा ग्यारह की फीस में छूट तथा कक्षा बारह में पहुंचने पर 51 सौ की फीस में छूट व स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ति पत्र

प्रदान किया गया। इसी तरह इंटर मीडिएट उत्तीर्ण छात्र/छात्राओं को एक हजार एक रूपए नकद पुरुस्कार तथा स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया इसी क्रम में लगातार 10 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण कर चुके सभी शिक्षको को ग्यारह सौ व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया तथा पूर्व छात्रों (1996 विद्यालय के प्रारंभ से) व उनके अभिभावकों को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

दबंग युवकों ने लाइब्रेरी संचालक और बिल्डिंग मालिक की जमकर की पिटाई, गले से सोने की चेन लूटी

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर जनपद सीतापुर के कोतवाली महमूदाबाद क्षेत्र में स्थित एक निजी लाइब्रेरी में उस वक्त हड़कंप मच गया जब कुछ दबंग युवकों ने लाइब्रेरी संचालक और बिल्डिंग मालिक की जमकर पिटाई कर दी। यह पूरी घटना वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है जानकारी के अनुसार, नगर स्थित इस लाइब्रेरी में अभय नामक युवक रोजाना पढ़ने आता था बुधवार शाम को वह लाइब्रेरी के पास बिल्डिंग के दूसरे पोर्शन में रेलिंग के पास खड़ा होकर बातचीत कर रहा था इसी दौरान भवन स्वामी शिवम कुमार वर्मा पुत्र स्व. कमल कुमार वर्मा ने उसे टोका और छत से हटकर लाइब्रेरी में जाकर पढ़ाई करने की सलाह दी बताया जा रहा है कि इसी बात को लेकर अभय और शिवम वर्मा में कहासुनी हो गई इसके बाद अभय ने फोन कर अपने कुछ अज्ञात साथियों को मौके पर बुला लिया जिन्होंने पहुंचते ही शिवम पर हमला कर दिया और उसकी बेरहमी से पिटाई की आरोप है कि इस दौरान पीड़ित के गले में पहनी सोने की चेन, जिसकी कीमत लगभग 1 लाख 87 हजार रुपए बताई जा रही भी आरोपियों ने लूट ली और मौके से फरार हो गए।

घटना के बाद नगर में आक्रोश फैल गया देर शाम पीड़ित पक्ष के लोग बड़ी संख्या में कोतवाली महमूदाबाद पहुंचे और आरोपियों के खिलाफ प्रार्थनापत्र सौंपा पीड़ित ने अभय और उसके अज्ञात साथियों के खिलाफ मारपीट, धमकी और लूटपाट का आरोप लगाया है कोतवाली पुलिस निरीक्षक अनिल सिंह का कहना है कि मामला दर्ज कर लिया गया है और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच कर उचित कार्रवाई की जाएगी जल्द ही आरोपियों को हिरासत में लेकर कार्रवाई की जाएगी!!

कावंड यात्रा की तैयारी बिजली के खंभों पर लगाई जा रही पॉलिथीन, श्रद्धालुओं की सुरक्षा का रखा जा रहा ध्यान

सीतापुर जनपद सीतापुर के लहरपुर में श्रावण मास की शुरुआत से पहले कांवड़ यात्रा की तैयारियां शुरू हो गई हैं विद्युत विभाग श्रद्धालुओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बिजली के खंभों पर पॉलिथीन लगा रहा है हर साल श्रावण मास में लाखों कांवड़िए रतनगंज से जल लेकर तंबौर और लहरपुर होते हुए छोटी काशी गोला गोकर्णनाथ जाते हैं क्षेत्र के प्रसिद्ध संत त्यागी बाबा इस यात्रा का नेतृत्व करते हैं इसके अलावा, क्षेत्र के विभिन्न गांवों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु बाबा जंगली नाथ मंदिर और बाबा कामेश्वर नाथ धाम सूर्यकुंड की यात्रा करते हैं। पिछले वर्षो में बिजली के खंभों पर करंट उतरने की घटनाएं हुई हैं सरकार के निर्देश पर विद्युत विभाग कांवड़ियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यह कदम उठा रहा है यात्रा मार्ग पर

स्थित सभी बिजली के खंभों को पॉलिथीन से ढका जा रहा है ताकि किसी भी तरह की दुर्घटना को रोका जा सके!!

आरेडिका व न्यू स्टैण्डर्ड स्कूल में पर्यावरण संरक्षण को समर्पित वृक्षारोपण कार्यक्रम

स्वतंत्र प्रभात

लालगंज (रायबरेली)। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना (आरेडिका) व न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिक स्कूल में वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। आरेडिका में महाप्रबंधक प्रशान्त कुमार मिश्रा के मार्गदर्शन में अधिकारियों, कर्मचारियों व महिलाओं ने विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण किया। प्रधान वित्त सलाहकार बीएल मीना ने स्पोर्ट्स ग्राउंड में पौधरोपण किया, जबकि आरपीएफ ने बैरक क्षेत्र में और अभियांत्रिकी विभाग ने तालाबों व सड़कों के किनारे पौधे लगाए। महिला कल्याण संगठन की सदस्यों ने ऑफिसर्स कॉलोनी में भागीदारी की। प्रधान मुख्य अभियंता सत्य प्रकाश यादव ने बताया कि जुलाई माह में कुल 25 हजार पौधे और 2.75 लाख बीज रोपित किए जाएंगे। उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभागों को स्वतंत्रता दिवस पर सम्मानित किया जाएगा।

इसी क्रम में न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिक स्कूल में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत वृहद वृक्षारोपण हुआ। पद्मश्री सुधा सिंह, डॉ.महादेव सिंह, रेंज ऑफिसर नीरज जोशी सहित अतिथियों ने पौधे लगाए। छात्रों ने स्लोगन व पोस्टर के माध्यम से जागरूकता फैलाई।

श्री अन् मिनीकिट वितरण का आयोजन

● किसान मोटे अनाजों की खेती पर दे रहे जोर- विजय निगम

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर 10 जुलाई बक्शी का कार्य स्थिति राजकीय कृषि बीज गोदाम में निशुल्क बीज मिनीकिट वितरण का आयोजन किया गया। बक्शी का तालाब के ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि रामेंद्र सिंह 'मोनू' एवं खंड विकास अधिकारी पूजा पांडे की उपस्थिति में हुआ प्रमुख रूप से दलहन, तिलहन एवं श्री अन्न की मिनी किट जैसे- उर्दू मूंग, तिल, ज्वार, बाजरा, कोदो, रागी इत्यादि का वितरण किया गया। ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि रामेंद्र सिंह ने श्री अन्न के महत्व के पर चर्चा की। खंड विकास अधिकारी श्रीमती पूजा पांडे ने मोटे अनाज के मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों को समझाया,तथा इसकी खेती के लिए कृषकों को प्रेरित किया। इस अवसर पर सहायक विकास अधिकारी कृषि विजय प्रकाश निगम ने विभागीय योजनाओं एवं पीएम किसान के विषय में कृषकों को विधिवत समझाया। उक्त कार्यक्रम में 40 से अधिक कृषकों को ब्लॉक प्रमुख द्वारा मिनी किट का वितरण किया गया। चंद्रभानु गुप्त कृषि महाविद्यालय के कृषि विशेषज्ञ डॉ सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि लगातार कृषि विभाग के प्रयास से राजधानी में मोटे अनाजों का रकबा बढ़ रहा है। इस कार्यक्रम में सहायक विकास अधिकारी सांख्यिकी विजय कुमार गौतम, कृषि विभाग के कार्मिक अखिलेश कुमार, पवन कुमार सिंह, दीपक कुमार यादव, कोमल यादव, मोहनी सैनी, रिचा सिंह, अविनाश कुमार सिंह, दीनदयाल यादव एवं सपना यादव शाहिद सभी कर्मचारी उपस्थित रहे किसानों को खरीफ सीजन की खेती के सार- संग्रह भी वितरित किए गए।

न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिक स्कूल में वेद व्यास जी की जन्म दिवस पर मनाया गई गुरु पूर्णिमा

● "गुरु ही वह दीपक हैं जो अज्ञान के अंधकार को दूर करते हैं और जीवन में सफलता की राह दिखाते हैं।"

स्वतंत्र प्रभात

लालगंज, रायबरेली- शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी एवं विधार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित शिक्षण संस्थान न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिक स्कूल में गुरुवार को गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने गुरु के महत्व पर प्रकाश डालते हुए भाषण, कविताओं के माध्यम से अपनी श्रद्धा प्रकट की। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रधानाचार्य शिवांग अवस्थी एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने दीप प्रज्वलन करके सरस्वती वंदना से किया। बच्चों ने 'गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु' श्लोक के साथ गुरु की महिमा का गुणगान किया।

कार्यक्रम कि अगली कड़ी में विद्यालय में गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य पर विभिन्न प्रकार कि प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया जैसे निबंध लेखन, वाद - विवाद,भाषण आदि पर बच्चों ने अपने अपने विचार प्रस्तुत किये।कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य ने अपने प्रेरणादायक भाषण में कहा कि "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरु- साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः "भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान बहुत ही आदरणीय है। "गुरु ही वह दीपक हैं जो अज्ञान के अंधकार को दूर करते हैं और जीवन में सफलता की राह दिखाते हैं।" कार्यक्रम में शिक्षकों, अभिभावकों व विद्यार्थियों की सहभागिता सराहनीय रही।

"एक पेड़ मां के नाम" अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात

सिधौली/सीतापुर। श्री गांधी महाविद्यालय, सिधौली सीतापुर में आज ÷एक पेड़ मां के नाम÷ अभियान के अंतर्गत एक प्रेरणादायक वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह ने की, जबकि कार्यक्रम का सफल संयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) इकाई के सक्रिय कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अजय कुमार द्वारा किया गया। इस अभियान का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ मातृ सम्मान की भावना को जाग्रत करना है। विद्यार्थियों, शिक्षकों और स्वयंसेवकों ने मिलकर महाविद्यालय परिसर में विभिन्न प्रजातियों के फलदार, छायादार और औषधीय पौधे रोपे। वृक्षों को माताओं के नाम समर्पित करते हुए प्रतिभागियों ने पर्यावरण संवर्धन का संकल्प भी लिया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह ने कहा "वृक्ष केवल हरियाली नहीं लाते, वे हमारे जीवन का आधार हैं। जब हम एक पेड़ मां के नाम लगाते हैं, तो यह एक भावनात्मक और सामाजिक जिम्मेदारी दोनों का परिचायक बनता है।"

कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अजय कुमार ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा "राष्ट्रीय सेवा योजना का मूल उद्देश्य समाज के प्रति जागरूकता और सेवा भावना को विकसित करना है। यह वृक्षारोपण अभियान उसी दिशा में एक सशक्त कदम है।" इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त शिक्षकगण, एनएसएस स्वयंसेवक, कर्मचारी और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए महाविद्यालय प्रबंधन ने वृक्षों की नियमित देखभाल और संरक्षण का संकल्प भी दोहराया।

शहर कांग्रेस के पदाधिकारी का पदभार ग्रहण समारोह

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर शहर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी का शपथ ग्रहण समारोह जेल रोड स्थित ट्रीट होटल में आयोजित किया गया कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद राकेश राठौर ने कांग्रेस के सामाजिक न्याय को जनता तक पहुंचाने का आवाहन शहर पदाधिकारी से किया कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शहर कोऑर्डिनेटर सिद्धार्थ शंकर त्रिवेदी ने आए हुए सभी पदाधिकारी का स्वागत करते हुए कहा कि शहर कांग्रेस सीतापुर जल्द ही अपनी नई कमेटी के साथ जनता से संवाद स्थापित करेगी एवं कांग्रेस संगठन को वार्ड एवं बूथ स्तर तक मजबूत करने का काम करेगी शहर अध्यक्ष शिशिर बाजपेई ने आए हुए सभी कांग्रेस पदाधिकारियों एवं वरिष्ठ कांग्रेस जनों का स्वागत करते हुए कहा कि कांग्रेस सदैव जन सरोकार की मांगों को उठाती रहेगी एवं बेरोजगारी, महंगाई, महिला उत्पीड़न, एवं शहर की ज्वलंत समस्याओं एवं स्थानीय मुद्दों पर सरकार को घेरती रहेगी। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिला कांग्रेस अध्यक्ष डॉ ममता वर्मा, पूर्व विधायक हरीश बाजपेई, पूर्व जिला अध्यक्ष रमेश निषाद, उत्कर्ष अवस्थी, विनीत दीक्षित, कयूम अंसारी, आनंद श्रीवास्तव आमोद मिश्रा संजीत नाथ गुप्ता जमुना प्रसाद शर्मा श्याम सुंदर दीपा वैश्य अरुण तिवारी शैलेंद्र सिंह टी एन सिंह यादव राकेश अवस्थी फरहत बेग सनी,संजय कुमार सनी, श्रीश चंद्र शुक्ला, जेपी शुक्ला अमित कुमार मिश्रा,रिजवान खान, उपदेश गुप्ता रामचंद्र भार्गव मीना मिश्रा प्रेमलता शुक्ला शाहवेज मुख्तार, डॉ रिचा मिश्रा पवन कुमार शुक्ला आशीष पांडे मशहूर अहमद खान अहमद अंसारी मथुरा प्रसाद यादव रविकांत धर्मेश दीक्षित आनंद नारायण सर्वेश प्रताप सिंह राकेश कुमार पाल नोमान अंसारी इमरान अली श्यामू पांडे अभय कुमार फरीद मोहसिन श्रीमती शिव प्यारी शाकिब अंसारी अंकित सिंह गिरीश शर्मा मोहम्मद सलीम सिद्दीकी, बेबी, आदि लोग मौजूद रहे।

भारत को जनसंख्या का तिलस्म भेदना होगा

अवरोध नही उत्पादक बने जनसंख्या।

भारत एक दशक के बाद सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश होगा और सबसे ज्यादा युवा जनसंख्या वाला भी देश होगा,अब समय आ गया है जब देश की सरकार और समूचे जनसंख्या प्रबंधन की इकाइयों को सक्रिय होकर बढ़ती जनसंख्या और उपलब्ध संसाधनों के बीच सामयिक संतुलन बनाकर बड़ी जनसंख्या को बोझ न मानकर एक शक्ति के रूप में स्थापित कर के इसका सर्वाधिक दोहन राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए निहित करें। निश्चित तौर पर यह हम पर है कि हमारी युवा जनसंख्या का उपयोग हम सही तरीके से विकास की गति के साथ साथ तालमेल बिठाकर इसे राष्ट्र के विकास के श्रोत की तरह विकसित करें द्य भारत की युवा और दिवा शक्ति के माध्यम से साइंस, टेक्नोलॉजी,मेडिकल, सेना, कंप्यूटर साइंस और स्वयं उद्यम के माध्यम से वैश्विक स्तर पर भारत को अग्रणी देश बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए द्य अब इस विशाल जनसंख्या का सीमित संसाधन पर कितना दबाव होगा, आप ये कल्पना कर सकते हैं। बहुत अधिक जनसंख्या देश में अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक समस्याओं को जन्म भी देती है। वर्तमान में भारत 141 करोड़ जनसंख्या (अनुमानित) के साथ विश्व में दूसरे नंबर पर है पहले नंबर पर चीन 145(अनुमानित)करोड़ की आबादी वाला देश है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1989 से 11 जुलाई को हर वर्ष जनसंख्या दिवस के रूप में मनाता है पर जनसंख्या नियंत्रण या जनसंख्या नियोजन पर भारत जैसे देश में कोई भी योजना नहीं बनती है। यही जनसंख्या बढ़ चुकी है और भारत में युवा जनसंख्या 55द्व से ज्यादा है तो इसका सकारात्मक उपयोग ही किया जाना युक्ति युक्त होगा। व्यापरिक दृष्टिकोण से भारत की जनसंख्या बाजार की ताकत है पर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से जनसंख्या विकास के लिए बड़ी बाधक भी है। अधिक जनसंख्या के दबाव में सीमित संसाधन छिन्न-भिन्न हो जाते हैं आम जनता को उनकी मूल जरूरतों की आवश्यक वस्तुएं नहीं मिल पाती और यदि मिलती भी है तो बहुत ऊंची दरों में या बहुत महंगाई के बाद।ऐसे में देश में अनेक समस्याएं पैदा होती है, और सबसे ज्यादा जनसंख्या के दबाव से विकास के लिए संकट खड़ा हो जाता है। विकास धीरे-धीरे मध्यम का अवरुद्ध हो जाता है। देश का आर्थिक नियोजन चरमराने लगता है। वर्ष 1951 से 81 के दशक को भारत की जनसंख्या की विस्फोटक अवधि के रूप में जाना जाता है। यह देश में मृत्यु दर के तीव्र स्खलन और जनसंख्या की उच्च प्रजनन दर के कारण हुआ है। वर्ष 1921 तक की अवधि में भारत की जनसंख्या की वृद्धि स्थिर अवस्था में रही क्योंकि इस अवधि में जनसंख्या वृद्धि की दर काफी निम्न थी। 1981 से लगातार अभी तक जनसंख्या की दर बढ़ती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा बढ़ती जनसंख्या के मुद्दों के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य इस वर्ष विश्व जनसंख्या दिवस स्लोगन 'परिवार नियोजन मानव का अधिकार' रखा गया है, ताकि बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं के प्रति जागरूक होकर लोगों द्वारा परिवार नियोजन पर उत्साहजनक जोर दिया जाए। यह स्लोगन यह संकेत करता है कि सुरक्षित एवं शैक्षिक परिवार नियोजन एक जिम्मेदार नागरिक का अधिकार है और यह सभी लोगों को सशक्त बनाएगा और देश में विकास की गति को तेज करने में सहायक भी होगा। भारत की जनसंख्या बढ़ने का प्रमुख कारण बढ़ती जन्म दर और कम मृत्यु दर भी है। जनसंख्या वृद्धि के कारण देश मैं बेरोजगारी गरीबी पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएं चुनौती बनकर सामने आई जो समाज व्यक्ति और राष्ट्र सभी के विकास को अवरुद्ध करती है। हमारे पास उपलब्ध संसाधन इतनी बड़ी आबादी के लिए कतई पर्याप्त नहीं है। विकास और देश की समृद्धि के लिए जनसंख्या नियंत्रण एक आवश्यक अंग हो सकता है। कई यूरोपीय देशों ने अपनी बढ़ती जनसंख्या एवं संसाधनों में उचित तालमेल हेतु परिवार नियंत्रण प्रणाली को का निर्णय लिया किंतु एक समय बाद वहां कार्यशील जनसंख्या की अपेक्षा वृद्धों की संख्या में वृद्धि हुई जिससे मानव संसाधन की समस्याएं उनके सामने आने लगी हैं। चीन में पहले जनसंख्या नियंत्रण किया गया था। सरकार ने वैधानिक रूप से एक या दो बच्चे पैदा करने की शर्तें लागू की थी, पर वहां बुजुर्गों, वृद्धों की संख्या में भारी वृद्धि होने के पश्चात चीन की सरकार ने ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने की अपनी जनता से अपील की है। जापान एक छोटा सा देश होने के बावजूद अपने सीमित संसाधनों के चलते अपने नवाचार तथा तकनीकी शक्ति के बल पर विकासशील देशों के समकक्ष खड़ा है।

भारत जैसे विशाल देश में जहां बहुत बड़ी जनसंख्या भी है और विकास के लिए आवश्यक संसाधन भी हैं, विकास करने के लिए केवल विशाल जनसंख्या के साथ सामंजस्य बिठाने की आवश्यकता होगी। भारत में जनसंख्या नियंत्रण के साथ-साथ उसके अनुपात में संसाधनों का संतुलन बना कर विकास की नई दिशा दी जा सकती है। संसाधनों की उचित दोहन हेतु सही और सटीक नीति तथा उसके क्रियान्वयन की आवश्यकता होगी। इसके अलावा नवाचार एवं उचित तकनीक प्रौद्योगिकी को भी अमल में लाना होगा। भारत विश्व का प्रथम देश है जिसने 1952 में परिवार नियोजन कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर शुरू किया इसका परिणाम भी अच्छा हुआ था कि पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या की वृद्धि में संतोषजनक गिरावट आई है। यह तो विदित है कि किसी भी राष्ट्र की संतुलित विकास की धारा तभी संभव है जब वहां के विकास में सहायक संसाधनों का संतुलन बना रहे। किसी एक घटक का संतुलन यदि गड़बड़ होता है तो विकास के लिए गंभीर समस्याएं जन्म लेना शुरू करती हैं। भारत की जनसंख्या इसी रफ्तार से बढ़ती रही तो दिन दूर नहीं जब संसाधनों की कमी से भारत को जूझना होगा फिर विकास की बात बेमानी हो जाएगी। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जनसंख्या दिवस मनाने का उद्देश्य है कि व्यक्ति समाज सरकार और योजना कानों के मन में इस विषय से संबंधित समस्याओं के प्रति चेतना संवेदना जगाना ही है ताकि लोगों में बढ़ती जनसंख्या से जुड़ी समस्याएं एवं अवरोधों के बारे में जागरूकता ज्यादा से ज्यादा विस्तारित हो। भारत के पास विकास के सभी मापदंड होते हुए भी देश पिछड़ा हुआ है, भारत में तकनीकी का कम विकास, कमजोर शिक्षा, परंपरागत स्रोत, कृषि का निम्न स्तर, आर्थिक असमानता जैसी अनेक समस्याएं हैं जो विकास मैं बाधक बनती रही है। वर्तमान में देश के पास प्राकृतिक एवं मानव संसाधन इतना है कि बढ़ती जनसंख्या की समस्याओं से आसानी से निपटा जा सके पर इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि संसाधनों का उचित दोहन तथा उसका सही उपयोग विकास की दिशा में भ्रष्टाचार से बचाकर किया जाए। यह अत्यंत उल्लेखनीय है कि जनसंख्या की समस्या से निपटने तथा विकास की दर को बढ़ाने की जिम्मेदारी केवल शासन प्रशासन की ही नहीं है इसके लिए आम नागरिक भी जिम्मेदार है क्योंकि समस्याएं खड़ी करने में आमजन का एक बड़ा वर्ग भी है, इसीलिए हम सबको जनसंख्या नियंत्रण और विकास की धारा को सही दिशा प्रदान करने के लिए सक्रिय सहयोग देना होगा तब ही देश एक सशक्त राष्ट्र बन पाएगा।

संजीव ठाकुर

बिहार में महिला आरक्षण

बिहार में आगामी नवम्बर-दिसम्बर महीने में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं जिसे देखते हुए सत्ता और विपक्ष के दल अपनी-अपनी राजनैतिक चौसर बिछाने लगे हैं। ताजा फैसले में राज्य की भाजपा-जद(यू) नीतीश सरकार ने सरकारी नौकरियों में महिलाओं के 35 प्रतिशत आरक्षण को राज्य की स्थायी निवासी महिलाओं के लिए आवश्यक करार दिया है। इससे पहले अन्य राज्यों की महिलाओं के लिए भी नौकरियों के द्वार खुले हुए थे। मुख्यमन्त्री नीतीश कुमार महिला वर्ग में लोकप्रिय समझे जाते हैं। इसकी कई वजहें समझी जाती हैं। पहली तो यह कि उन्होंने राज्य में पूर्ण शराबबन्दी करके घरेलू महिलाओं को राहत देने की कोशिश की थी। मुख्यमन्त्री का यह फैसला राज्य की महिलाओं ने बहुत सराहा था। इससे उनका पारिवारिक जीवन सुगम होने की संभावनाएं बढ़ी थीं। शराबबन्दी से गरीब तबके की महिलाओं में खुशी की लहर थी मगर दूसरा पहलू यह भी है कि इससे राज्य में अवैध तरीके से शराब तस्करी भी बढ़ी और राज्य में जहरीली शराब पीकर मरने वालों की संख्या में भी इजाफा हुआ। नीतीश सरकार ने इस समस्या का हल पुलिस प्रशासन की मार्फत ढूंढने की कोशिश की जिसमें उसे आंशिक सफलता ही मिल पाई। यह भी सच है कि अवैध शराब की राज्य में तस्करी अब भी हो रही है और प्रशासन इसे पूरी तरह बन्द करने में सफल नहीं हो सका है। किसी भी समाज में ऐसी बुराई को जड़ से समाप्त करना बहुत मुश्किल काम माना जाता है। फिर भी राज्य की महिलाओं ने मुख्यमन्त्री की शराबबन्दी की घोषणा का खुले दिल से स्वागत किया था। जहां तक महिलाओं के सरकारी नौकरियों में आरक्षण का सवाल है तो मुख्यमन्त्री ने यह फैसला 2016 में किया था। उस समय नीतीश बाबू जद(यू)-कांग्रेस व लालू जी की पार्टी राजद के महागठबन्धन की सरकार के मुखिया थे। इससे पहले 2015 को हुए राज्य विधानसभा चुनावों में इस गठबंधन को भाजपा के मुकाबले भारी सफलता मिली थी। इन चुनावों में राज्य की महिलाओं ने नीतीश बाबू का साथ दिया था। तभी से महिला वोट बैंक नीतीश बाबू का समझा जाता है। पिछले 20 साल से 2005 के बाद से नीतीश बाबू ही राज्य के मुख्यमन्त्री चले आ रहे हैं हालांकि राज्य में सत्तारूढ़ सरकार के गठबन्धन अदलते-बदलते रहते हैं। नीतीश बाबू कभी भाजपा के साथ मिलकर सत्ता में रहते हैं तो कभी कांग्रेस व लालू जी की पार्टी के साथ। अतः पिछले 20 सालों में बिहार सरकार ने जो भी फैसले जनहित में किये हैं उन सभी का श्रेय नीतीश बाबू को दिया जा सकता है। 2022 में उन्होंने बिहार में जातिगत सर्वेक्षण कराया था। उस समय नीतीश बाबू लालू जी की पार्टी के सहयोग से मुख्यमन्त्री बने हुए थे। इस सर्वेक्षण का श्रेय हालांकि लालू जी की पार्टी ने लेने का प्रयास किया मगर नीतीश बाबू ने स्पष्ट कर दिया कि इस फैसले में उनकी भागीदारी को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है क्योंकि उनके पास राज्य के अति पिछड़े वर्ग का व्यापक समर्थन है। इस जातिगत सर्वेक्षण में साफ हुआ था कि बिहार में 36 प्रतिशत लोग अति पिछड़े वर्ग के हैं। जातिगत सर्वेक्षण के बाद नीतीश सरकार ने गरीब वर्ग के लोगों की मदद के लिए कुछ जरूरी कदम भी उठाये और अति गरीब परिवारों को दो लाख रुपये की मदद देने का फैसला भी किया। इस प्रकार नीतीश बाबू इस वर्ग की सहानुभूति बटोरने में पुनः सफल रहे। जहां तक विपक्ष का सवाल है तो वह चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूचियों का पुनरीक्षण कराये जाने के खिलाफ व्यापक अभियान चलाये हुए हैं और इस सन्दर्भ में उसने बुधवार को बिहार बन्द का आयोजन भी किया गया। इस बन्द के सफल होने की खबरें भी आ रही हैं जिससे इस चुनावी राज्य में जनता बनाम चुनाव आयोग की स्थिति पैदा होती जा रही है लेकिन नीतीश बाबू इस विवाद से तटस्थ बने हुए हैं और वह मतदाता पुनरीक्षण प्रक्रिया पर अपनी जुबान नहीं खोल रहे हैं। इससे पता चलता है कि मुख्यमन्त्री इस घटना के राजनीतिक हानि-लाभ के समीकरणों को तोल रहे हैं और सही समय पर अपनी बात कहने के इन्तजार में हैं लेकिन इस विवाद से लोगों खासकर महिलाओं का ध्यान हटाने के लिए उन्होंने सरकारी नौकरियों में स्थायी निवास वाली महिलाओं का मुद्दा गरमा दिया है। जाहिर तौर पर इससे नीतीश बाबू का महिला वोट बैंक सशक्त होगा। अभी तक यह व्यवस्था थी कि 35 प्रतिशत महिला आरक्षण में किसी भी राज्य की महिलाएं बिहार में नौकरी पा सकती थीं। खासकर शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक की नौकरियों में बिहार से बाहर की महिलाओं को भी अच्छी-खासी संख्या में नैकरियां मिली थीं। अब ये सब नौकरियां केवल बिहार की स्थायी निवासी महिलाओं के लिए आरक्षित हो जायेंगी। इससे राज्य की राजनीति में जिस प्रकार जातिवाद का बोलबाला है वह भी कम होगा क्योंकि आरक्षण में हर जाति की महिला पात्र मानी जायेगी। इससे भाजपा को चुनावी मैदान में उतरने में मदद मिलेगी क्योंकि यह पार्टी मूल रूप से अगड़े समाज की पार्टी समझी जाती है। जद(यू) के साथ मिलकर ही भाजपा ने 2024 के लोकसभा चुनाव लड़े थे जिसमें उसे शानदार सफलता मिली थी। अतः विधानसभा चुनावों की चौसर में सत्ता व विपक्ष अपनी-अपनी गोटियां बहुत सावधानी के साथ बिछाते नजर आ रहे हैं।

सिखों के दो तख्तों में टकराव के लिए जिम्मेवार कौन?

इतिहास में पहली बार सिखों के दो तख्तों में टकराव देखने को मिल रहा है जिसे समाप्त करना अति आवश्यक है अन्यथा आने वाले दिनों में इसके गंभीर परिणाम देखने को मिल सकते हैं। युवा वर्ग इस सबके चलते ही आज सिखी से दूर होता चला जा रहा है मगर अफसोस कि इस ओर कोई ध्यान देने को तैयार नहीं। सिख समाज में जत्थेदारों का विशेष तौर पर दायित्व बनता है कि वह कौम के भीतर आए विवाद को समाप्त करके सभी सिखों को एकजुट होकर एक निशान साहिब के भीतर लाएं मगर आज तो जत्थेदार स्वयं विवाद के घेरे में आ चुके हैं अब इनमें एकजुटता कैसे और कौन लेकर आएगा यह अपने आप में प्रश्न बन गया है। असल में विवाद तब खड़ा हुआ जब श्री अकाल तख्त साहिब से ज्ञानी कुलदीप सिंह गढ़गज के द्वारा तख्त पटना साहिब से तनखैया और पंथ से निष्कासित पूर्व जत्थेदार रणजीत सिंह गौहर को माफ करते हुए उन्हें पहले की भान्ति सेवाएं निभाने हेतु आदेश जारी कर दिया इतना ही इसके साथ ही तख्त पटना साहिब के मौजूदा जत्थेदार सिंह साहिब ज्ञानी बलदेव सिंह और ज्ञानी गुरदयाल की सेवाओं पर रोक लगा दी गई। इस पर तख्त पटना साहिब के जत्थेदार सहित पांच प्यारे साहिबान के द्वारा ज्ञानी कुलदीप सिंह गढ़गज और ज्ञानी टेक सिंह को तनखैया करार देते हुए इस पूरे मामले में साजिशकर्ता के रूप में मानते हुए सुखबीर सिंह बादल को पेश होकर अपना पक्ष रखने के लिए 10 दिन का समय दिया गया। हालांकि चाहिए तो यह था कि सुखबीर सिंह बादल पेश होकर अपना पक्ष रखते और वह शायद चाहते भी थे मगर उनके कुछ सलाहकार ऐसे हैं जिन्होंने उन्हें ऐसा करने से रोका जिसके बाद विवाद बढ़ता चला गया। 40 दिनों बाद भी जब सुखबीर बादल पेश नहीं हुए तो तख्त पटना साहिब से उन्हें तनखैया कर दिया गया। जिसके बाद मानो पंजाब की राजनीति में भूचाल सा आ गया। सुखबीर के खिलाफ आदेश आते ही ज्ञानी कुलदीप सिंह गढ़गज तुरन्त हरकत में आए और अपने आका को बचाने के लिए उन्होंने तख्त पटना साहिब के दो सदस्यों हरपाल सिंह जौहल और डा. गुरमीत सिंह सहित ज्ञानी गुरदयाल सिंह को भी तनखैया कर दिया। इस पर संसार भर से सिख बुद्धिजीवियों द्वारा चिन्तन किया जा रहा है और उनका मानना है कि सभी तख्त अपने आप में सम्मान्नित हैं इसलिए सभी जत्थेदारों को चाहिए कि बड़े छोटे की बात ना करते हुए बिना वजह पंथ में उपजे मसले का समाधान निकालें। जो लोग स्वयं श्री अकाल तख्त साहिब के आदेशों को दरकिनार करते हुए अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने में लगे हैं आज वही अकाल तख्त की महानता की दुहाई दे रहे हैं इसलिए जत्थेदार साहिबान को चाहिए अपना नैतिक फर्ज समझते हुए राजनीतिक लोगों की ग्रिफत से बाहर आकर कौम हित में एकजुटता लाने की ओर अग्रसर हो और जल्द से जल्द इसका स्थाई हल निकाला जाए किसी एक व्यक्ति विशेष के लिए पूरी कौम को दाव पर लगाना किसी भी सूरत में सही नहीं है। दिल्ली यूनिवर्सिटी के छात्रों को पढ़ाया जाएगा सिख इतिहास ¬ इतिहास गवाह है कि सिख गुरु साहिबान से लेकर बाबा बंदा सिंह बहादुर जैसे अनेक सिख योद्धा हुए जिनका इतिहास अगर बच्चे पढ़ लें तो वह सिखों के प्रति हीन भावना रख ही नहीं सकते। इतना ही नहीं अगर देशवासियों ने इतिहास पढ़ा होता तो 1984 में सिखों का कत्लेआम भी नहीं होना था और सिखों को खालिस्तानी या आतंकी कहकर भी नहीं पुकारा जाता। दिल्ली यूनिवर्सिटी की पहल पर अब छात्र मुगल राज्य और समाज पर विशेष रूप से तथा सामान्य रूप से भारतीय इतिहास पर उभरते इतिहास लेखन में विद्यमान अंतराल को समझ सकेंगे। कोर्स में यूनिट एक के तहत विद्यार्थियों को सिख धर्म का विकास, मुगल राज्य और समाज, पंजाब सिख धर्म में शहादत और शहादत की अवधारणा, सिख गुरुओं के अधीन सिख, गुरु नानक देव जी से गुरु रामदास जी तक सिख धर्म का ऐतिहासिक संदर्भ पढ़ाया जाएगा। यूनिट दो में शहादत की गाथा के तहत आधिपत्य मुगल राज्य और दमन, गुरु अर्जन देव जी, जीवन और शहादत, राज्य की नीतियों पर प्रतिक्रियाएं, गुरु हरगोबिंद जी से गुरु हरकृष्ण जी तक, गुरु तेग बहादुर जी के जीवन और शहादत, भाई मति दास, भाई सती दास, भाई दयाला के संदर्भ पढ़ाए जाएंगे। दिल्ली यूनिवर्सिटी द्वारा इतिहास में सिख शहादतों और बहादुरी पर अंडरग्रेजुएट कोर्स शुरू करने को सिख समाज के लोग मोदी सरकार का सराहनीय कदम बताते हुए खास तौर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार प्रकट करते दिख रहे हैं। दिल्ली सरकार में मत्री मनजिन्दर सिंह सिरसा मानते हैं कि इससे ही सरकारों की सोच का पता चलता है एक ओर आजादी के बाद से कांग्रेस की सरकार ने देशवासियों पर जुल्म करने वाले अत्याचारियों का इतिहास स्कूलों कालेजों में बच्चों को पढ़ाया मगर अत्याचार की उस आग को ठण्डा कर देश और धर्म की रक्षा वाले गुरु साहिबान और सिख योद्धाओं के इतिहास से वंचित रखा। तख्त पटना साहिब कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी अध्यक्ष हरमीत सिंह कालका और महासचिव जगदीप सिंह काहलो सहित अन्य सिख नेता भी सरकार के इस कदम की प्रशंसा करते दिख रहे हैं।

संपादकीय

क्या लोकसभा रिजल्ट दोहरा पायेगी सपा

उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक दलों ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। आइए जानते हैं कि विभिन्न पार्टियों की रणनीति और संभावित परिणाम क्या हो सकते हैं। समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव 2024 में हुए लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में मिली सफलता से उत्साहित हैं और इस सफलता के द्वारा वो 27 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए दम भर रहे हैं। लेकिन क्या लोकसभा वाली सफलता सपा विधानसभा में दोहरा पायेगी इस पर अभी प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है। लोकसभा चुनाव के बाद उत्तर प्रदेश में विधानसभा उपचुनाव में सपा को पराजय का सामना करना पड़ा था। लोकसभा चुनाव में जिस अयोध्या की सीट पर मिली जीत पर अखिलेश यादव इतरा रहे थे उसी की विधानसभा सीट मिल्कीपुर उप चुनाव में वो हार चुके हैं। अखिलेश यादव ने लोकसभा चुनाव में जो सफलता प्राप्त की थी उसमें दलितों का एक बड़ा वर्ग उनके साथ गया था और इसीलिए अखिलेश यादव ने आगे की राजनीति के लिए पीडीए का नारा दिया है, पिछड़ा दलित और अल्पसंख्यक। इसी संयोजन से अखिलेश 27 का रण जीतने की तैयारी कर रहे हैं। जगह जगह पीडीए सम्मेलन किये जा रहे हैं, पीडीए को जोड़ा जा रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं कि बहुजन समाज पार्टी की नींव अब उत्तर प्रदेश में खिसक चुकी है। यदि वर्तमान स्थिति को देखें तो लोकसभा में उसका एक भी सांसद नहीं है जब कि उत्तर प्रदेश विधानसभा में मात्र उनका एक सदस्य है। लोकसभा चुनाव में मायावती की पार्टी के कमजोर होने का लाभ समाजवादी पार्टी को मिला था। अखिलेश यादव पूरी कोशिश कर रहे हैं कि लोकसभा की तरह विधानसभा चुनाव में भी दलित उनका उतना ही साथ दे तो वो बहुमत के करीब पहुंच सकते हैं। लेकिन इसमें कितनी सच्चाई है वह विधानसभा उपचुनाव में देखने को मिली है। विधानसभा उपचुनाव 9 सीटों पर हुए थे जिसमें भाजपा गठबंधन को 7 सीटों पर जब कि समाजवादी पार्टी को मात्र 2 सीटों पर विजय मिली थी। यही नहीं सपा अयोध्या की मिल्कीपुर विधानसभा सीट भी हार गई थी। अयोध्या के सांसद अवधेश प्रसाद के बेटे मिल्कीपुर से उप चुनाव लड़े थे। उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक दलों ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। सपा पीडीए को लेकर तैयारियां कर रही है तो भाजपा जनता पार्टी की रणनीति भी इसी दिशा में चल रही है। भाजपा ने हारी हुई सीटों पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए नई रणनीति तैयार की है। पार्टी ने 2022 के विधानसभा चुनाव में हारी सभी सीटों को श्रेणियों में बांटा है, ताकि कमजोर क्षेत्रों को मजबूत किया जा सके। पार्टी की नजर ओबीसी वर्ग और अनुसूचित जाति यानी एससी वोटबैंक पर है, जहां पार्टी को 2017 से कुछ नुकसान हुआ है। भाजपा गैर-प्रमुख एससी समुदायों पर विशेष ध्यान दे रही है और राजभर समुदाय के वोट बैंक को साधने की रणनीति भी बना रही है। भाजपा ने अपनी रणनीति को और प्रभावी बनाने के लिए व्यापक सर्वेक्षण शुरू किए हैं, जिसमें मतदाता व्यवहार, स्थानीय मुद्दे और विपक्ष की रणनीति का अध्ययन शामिल है। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने दलित-पिछड़ा गठजोड़ को मजबूत करने और इस एकता को राजनीतिक शक्ति में बदलने का आह्वान किया है। यदि बसपा इस अभियान में सफल होती है, तो वह 2027 के विधानसभा चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस के गठबंधन ने 2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में 43 सीटें जीती थीं, जिसने भाजपा को केवल 33 सीटों पर सीमित कर दिया था। भाजपा अब विपक्ष के इस गठबंधन को कमजोर करने की रणनीति पर काम कर रही है। 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर सभी पार्टियों ने अपनी तैयारियां अभी से ही शुरू कर दीं हैं। हालांकि मुख्य मुकाबला भाजपा गठबंधन और सपा गठबंधन के ही बीच में है। लेकिन बहुजन समाज पार्टी इस चुनाव में अपनी अच्छी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है। पिछले चुनाव में बसपा का कोर वोट भी बसपा से खिसका है। लेकिन उसके लिए पूर्व मुख्यमंत्री मायावती स्वयं जिम्मेदार हैं। क्योंकि पिछले दो-तीन चुनाव से वह स्वयं अपनी पार्टी को सम्हाल सकने में कामयाब नहीं हो सकीं हैं। बसपा के ज्यादातर बड़े नेता या तो पार्टी छोड़ कर जा चुके हैं या उनको अनुशासन हीनता के कारण पार्टी से निकाला जा चुका है। बसपा के कमजोर होने का लाभ पिछले लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को मिला है। पिछले लोकसभा चुनाव में बड़ी संख्या में दलित वर्ग ने समाजवादी पार्टी और कांग्रेस को वोट किया है और यही कारण है कि सपा कांग्रेस गठबंधन को लोकसभा चुनाव में बेहतर परिणाम हासिल हुआ था।

जितेन्द्र सिंह पत्रकार

सेना से सेवानिवृत्त जवान और शून्य आरक्षण की पीड़ा, बिहार-झारखंड में राज्य व्यवस्था की विफलता का आईना

देश की सरहदों पर तैनात सैनिक जब सर्दी, गर्मी, वर्षा और गोलीबारी की परवाह किए बिना अपने प्राणों की बाज़ी लगाते हैं, तो यह केवल उनकी नौकरी नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति उनका जीवन-समर्पण होता है। यह त्याग केवल एक सैनिक का नहीं, बल्कि उसके पूरे परिवार का होता है, जो वर्षों तक उसके बिना जीवन जीता है, बच्चों का लालन-पालन करता है और हर वक्त यह प्रार्थना करता है कि वह सकुशल लौट आए। लेकिन सबसे बड़ा दुःख तब होता है, जब वही सैनिक अपनी सेवा पूरी कर राज्य में लौटता है और पाता है कि उसके लिए न कोई नौकरी है, न कोई पुनर्वास योजना, न कोई सरकारी संवेदना। बिहार और झारखंड जैसे राज्य इस पीड़ा की सबसे बड़ी मिसाल बनकर सामने आते हैं। भारतीय सेना में इन राज्यों के हजारों युवक हर वर्ष भर्ती होते हैं, लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद जब वे अपने गृह राज्य लौटते हैं, तो राज्य सरकारें उन्हें बेरोज़गारी और उपेक्षा की खाई में धकेल देती हैं। उपलब्ध आँकड़े बताते हैं कि बिहार और झारखंड दोनों ही राज्यों में राज्य सरकार की नौकरियों के किसी भी समूह कक्षा क, कक्षा ख, कक्षा ग, और कक्षा घ में पूर्व सैनिकों के लिए एक प्रतिशत भी आरक्षण निर्धारित नहीं किया गया है। यह आंकड़ा कोई साधारण संख्या नहीं, बल्कि एक गहरी संवेदनहीनता का प्रतीक है। यह उस समाज की चुप्पी है, जो युद्ध के समय तो 'जय जवान' के नारे लगाता है, पर शांति के दिनों में उन्हीं जवानों को चौकीदार, मजदूर या ठेला चालक बनने पर मजबूर देखता है और चुप रहता है। झारखंड और बिहार की गलियों में आज भी अनेक सेवानिवृत्त सैनिक मिलते हैं, जो किसी ठेकेदार के अधीन दिहाड़ी पर काम कर रहे हैं, या फिर छोटी मोटी दुकान चलाकर गुजारा कर रहे हैं। क्या यह उस राष्ट्र के लिए शोभनीय है, जो अपने सैनिकों को सम्मान का प्रतीक मानता है? देश के कई अन्य राज्यों में, विशेषकर पंजाब, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, और कर्नाटक जैसे राज्यों में, राज्य सेवाओं में पूर्व सैनिकों के लिए 10 प्रतिशत से लेकर 15 प्रतिशत तक आरक्षण की व्यवस्था है। ये राज्य न केवल सैनिकों की सेवा भावना को सम्मान देते हैं, बल्कि उन्हें नागरिक जीवन में भी गरिमा से जीने का अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे में बिहार और झारखंड की यह उदासीनता एक प्रकार की सामाजिक नाइंसाफी है, जो लगातार बढ़ रही है। सैनिकों के साथ यह व्यवहार केवल एक वर्ग के साथ अन्याय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मा के साथ धोखा है। जब एक जवान अपना पूरा युवा जीवन सेना को देता है, तो वह केवल पेंशन या मेडल की आशा नहीं करता। वह राज्य से यह अपेक्षा करता है कि जब वह लौटेगा, तो उसे समाज में एक सम्मानजनक स्थान मिलेगा। लेकिन विडंबना यह है कि झारखंड और बिहार जैसे राज्य उसके स्वागत में बेरोजगारी, असुरक्षा और ठोकरें प्रस्तुत करते हैं। इस उपेक्षा की जड़ केवल नीति की कमी नहीं, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी है। न तो झारखंड सरकार ने पूर्व सैनिकों के लिए कोई पृथक पुनर्वास आयोग गठित किया है, न ही बिहार में कोई ऐसी कार्ययोजना अस्तित्व में है जो इन वीरों के भविष्य को सुरक्षित कर सके। दोनों ही राज्यों की सरकारें सेना भर्ती को तो बढ़ावा देती हैं, भर्ती रैलियों का आयोजन भी करती हैं, परंतु जब वही जवान वापस लौटते हैं तो उन्हें अनुपयोगी नागरिक की तरह देखा जाता है। यह भी समझने योग्य है कि सेना में कार्य करने के दौरान सैनिक अनेक प्रकार की तकनीकी, प्रबंधन, नेतृत्व, और आपदा प्रबंधन संबंधी दक्षताओं को सीखते हैं। ये सभी योग्यताएँ नागरिक प्रशासन, पुलिस सेवा, ग्रामीण विकास, आपदा राहत, परिवहन, सुरक्षा और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। लेकिन यदि राज्य सरकारें इन कौशलों का उपयोग ही नहीं करेंगी, तो यह राष्ट्रीय संसाधनों की भी भारी बर्बादी है।झारखंड जैसे राज्य में जहाँ आदिवासी समाज से बड़ी संख्या में युवा सेना में भर्ती होते हैं, वहाँ की सरकार का यह कर्तव्य बनता है कि वे अपने इन बच्चों को सेवानिवृत्ति के बाद ऐसा मंच दें, जिससे वे समाज की मुख्यधारा में पुनः सक्रिय भूमिका निभा सकें। यह केवल रोजगार का प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, गरिमा और राज्य के प्रति प्रतिबद्धता का भी प्रश्न है। अब आवश्यकता इस बात की है कि बिहार और झारखंड की सरकारें नींद से जागें। उन्हें चाहिए कि वे सेना से सेवानिवृत्त जवानों के लिए कम से कम 10 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करें, उनके लिए कौशल विकास और पुनः नियोजन कार्यक्रम चलाएँ, उनके लिए अलग से राज्य स्तरीय पूर्व सैनिक कल्याण बोर्ड की स्थापना करें, और उन्हें पुलिस, सुरक्षा, होम गार्ड, ग्राम रक्षा दल, वन सुरक्षा, और आपदा प्रबंधन जैसे विभागों में तत्काल नियुक्ति दें। इसके अतिरिक्त, इन राज्यों में सैनिक सम्मान निधि की स्थापना की जाए, जिससे आर्थिक रूप से पिछड़े पूर्व सैनिकों को आपातकालीन सहायता मिल सके। उनके बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वरोजगार के लिए विशेष अनुदान योजनाएँ चलाई जानी चाहिए। यह संपादकीय आलेख केवल आंकड़ों का हवाला नहीं, बल्कि एक पुकार है उन लाखों सैनिकों के लिए जो अब भी अपनी मिट्टी से प्यार करते हैं, जो अब भी राष्ट्र पहले के मूलमंत्र पर जीते हैं, और जो अब भी अपने राज्यों से सम्मान की एक छोटी सी उम्मीद लगाए बैठे हैं। यदि राज्य सरकारें इस पुकार को नहीं सुनतीं, तो यह चुप्पी केवल वर्तमान पीढ़ी के साथ नहीं, आने वाली पीढ़ियों के साथ भी अन्याय होगी। सैनिकों को सम्मान केवल शब्दों से नहीं, बल्कि नीति, योजना और क्रियान्वयन से देना होगा। अब समय आ गया है कि बिहार और झारखंड की सरकारें इन वीरों की पीड़ा को समझें और 'शून्य प्रतिशत' की इस असंवेदनशीलता को इतिहास में बदल दें।

अमित कुमार

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवि कुमार अवस्थी द्वारा अनवर ऑफसेट एम्- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उष्मान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित **संपादक-राजीव कुमार शुक्ल,** मो0- 7499472288
E-Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं संपादन हेतु पी आर बी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त खबरें

नौतनवां थानाध्यक्ष पर दुर्व्यवहार का आरोप

रतनपुर/महराजगंज। परसामलिक थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत बैकुंठपुर निवासी दीनानाथ साहनी पुत्र श्रीराम साहनी ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराते हुए नौतनवां थानाध्यक्ष पर दुर्व्यवहार का आरोप लगाया है। पीड़ित ने बताया कि नौतनवां थाना क्षेत्र के खैराटी गांव निवासी रिस्तेदार को एक रास्ते की जमीन के विवाद को लेकर नौतनवां थाने पर बुलाया गया था। आरोप है कि इस दौरान थानाध्यक्ष ने पीड़ित दीनानाथ के साथ दुर्व्यवहार करते हुए अनायास भीषण गर्मी में चार घंटे तक थाने में बंद कर दिए। दीनानाथ ने बताया कि वह एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं जो कई सामाजिक व राजनैतिक संगठनों के साथ जुड़कर समाज में अपनी सेवा दे चुके हैं ऐसे में नौतनवां थानाध्यक्ष द्वारा अनायास किए गए दुर्व्यवहार से वह दुखी व पीड़ित हैं। पीड़ित दीनानाथ ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर इसकी शिकायत करते हुए कार्यवाही की मांग की है।

एसएसबी के जवानों ने किया पौधारोपण

महराजगंज। एसएसबी की 22वीं वाहिनी महराजगंज के कमांडेंट शक्ति सिंह ठाकुर के निर्देशन में भगवानपुर वीओपी के जवानों ने सहायक कमांडेंट दलसणिया हरसुखलाल व ग्राम प्रधान गणेश मद्धेशिया के नेतृत्व में वृक्षारोपण अभियान के तहत गुरुवार को भगवानपुर क्षेत्र में 100 पौधों का रोपण किया है। जवानों ने वृक्ष लगाओ पर्यावरण बचाओ तथा एक पेड़ मां के नाम जैसे प्रेरणादायक नारों के साथ आयोजित इस अभियान में कुल 100 पौधे स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से लगाया। सहायक कमांडेंट दलसणिया हरसुखलाल ने कहा कि यह अभियान न सिर्फ पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक प्रेरक पहल है बल्कि समाज में हरियाली के प्रति चेतना जागृत करने का भी एक सराहनीय प्रयास है।

भगवान शिव के जलाभिषेक को तैयार दूसरी काशी

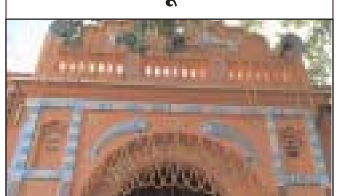

--फूल मालाओं से सजा दुग्धेश्वर नाथ मंदिर

रूद्रपुर, देवरिया। दूसरी काशी के रूप में विख्यात दुग्धेश्वर नाथ मंदिर भगवान शिव के जलाभिषेक के लिए सज धजकर तैयार है। नगर पंचायत प्रशासन सफाई व्यवस्था प्रकाश व्यवस्था व सजावट को अंतिम रूप देने में जी जान से लगा है। आज शुक्रवार से पवित्र श्रावण मास की शुरुआत हो रही है। दुग्धेश्वर नाथ मंदिर पर सावन भर भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया जाता है। दूर-दूर से आकर लोग दूग्धेश्वर नाथ का जलाभिषेक करते हैं और पुण्य के भागी बनते हैं। दुग्धेश्वर नाथ मंदिर देवरिया जनपद का एक पौराणिक स्थल है जिसे उप ज्योतिर्लिंग की मान्यता प्राप्त है। एसडीएम हरिशंकर लाल व कोतवाल विनोद कुमार सिंह मंदिर में सुरक्षित जलाभिषेक और श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण कर रहे हैं। नगर पंचायत प्रशासन खोया पाया विभाग के लिए व्यवस्था कर रहा है। जिसके माध्यम से लोग मेले में भूले भटके अपने परिचितों से संपर्क कर पाएंगे। श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए स्थानीय पुलिस बल के अलावा सोमवार व शुक्रवार को अतिरिक्त फोर्स की व्यवस्था भी की जाएगी। विगत दिनों जिला अधिकारी दिव्या मित्तल व पुलिस अधीक्षक विक्रांत वीर ने मंदिर का निरीक्षण किया था और नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी नितेश गौरव के साथ मेले से जुड़े सभी पहलुओं पर गहन विचार विमर्श किया था।

नपं अध्यक्ष ने किया सेल्फी प्वाइंट का उद्घाटन

रूद्रपुर, देवरिया। नगर पंचायत अध्यक्ष सुधा निगम ने सभासदों के साथ दूग्धेश्वर नाथ मंदिर के पीछे पोखर के पास बने सेल्फी पॉइंट का फीता काटकर उद्घाटन किया। सावन महीने में भगवान भोलेनाथ के जलाभिषेक को जुटे श्रद्धालु इस सेल्फी पॉइंट पर फोटो खिंचवाएंगे जिससे नगर पंचायत रुद्रपुर की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैलेगी। इस अवसर पर अधिशासी अधिकारी नितेश गौरव, वरिष्ठ लिपिक राम विनोद शुक्ला, सभासद सज्जाद अली, सुशील मद्धेशिया, मुकेश विश्वकर्मा, टिंकू पांडे, अनिल पांडे, विजय यादव, राम प्रवेश भारती, महंत विजय शंकर भारती, पंडित आदित्य पांडे आदि लोग उपस्थित रहे।

शिवलिंग समकक्ष हों, इतिहास और जनविश्वास दोनों मौन समर्थन दें तब संरक्षण और विकास के नाम पर भेदभाव क्यों किया जाए ?

●200 मीटर की दूरी पर स्थित पृथ्वी नाथ मंदिर को केंद्र सरकार की पर्यटन सूची में स्थान प्राप्त हो गया, और अब वहाँ चहुंमुखी विकास कार्यों की बौछार हो चुकी है – चमचमाती सड़कें, यात्री शेड, पीने का पानी, बिजली

ग्राम पंचायत पचरन में स्थित पचरन नाथ मंदिर ठीक इसी विडंबना का प्रतीक है।

स्वतंत्र प्रभात

गोण्डा। जब श्रद्धा समान हो, शिवलिंग समकक्ष हों, इतिहास और जनविश्वास दोनों मौन समर्थन दें तब संरक्षण और विकास के नाम पर भेदभाव क्यों किया जाए ? जनपद गोंडा के विकासखंड रूपईडीह अंतर्गत ग्राम पंचायत पचरन में स्थित पचरन नाथ मंदिर ठीक इसी विडंबना का प्रतीक है। महज 200 मीटर की दूरी पर स्थित पृथ्वी नाथ मंदिर को केंद्र सरकार की पर्यटन सूची में स्थान प्राप्त हो गया, और अब वहाँ चहुंमुखी विकास कार्यों की बौछार हो चुकी है – चमचमाती सड़कें, यात्री शेड, पीने का पानी, बिजली, प्रचार।लेकिन वहीं, पचरन नाथ मंदिर, जो कथाओं के अनुसार पांडवों की तपस्थली रहा है और जिसका शिवलिंग स्वयंभू बताया जाता है, आज भी अपने ही गाँव में उपेक्षा की छाया में है। टूटी दीवारें, अंधकार, और चंदे के सहारे चलती व्यवस्था क्या इस आस्था की गरिमा के साथ न्याय कर रही है ?

जब ब्लॉक स्तर पर होती है पहल, तो जिला और राज्य क्यों मौन ?

हाल ही में रूपईडीह ब्लॉक प्रमुख बबिता सिंह ने मंदिर परिसर में हाई मास्क लाइट लगवाकर सावन में श्रद्धालुओं को प्रकाश देने की जो पहल की, वह निश्चित ही सराहनीय है परंतु यह प्रश्न भी उठाती है कि जब एक ब्लॉक प्रतिनिधि मंदिर के महत्व को समझ सकती हैं, तो जिला प्रशासन, पर्यटन विभाग और राज्य सरकार क्यों चुप हैं? क्या धार्मिक धरोहरों की रक्षा केवल चुनावी मंचों की घोषणाओं तक सीमित रह गई है ?

संस्कृति का अपमान या प्रशासनिक उदासीनता ?

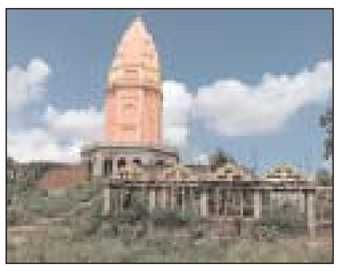

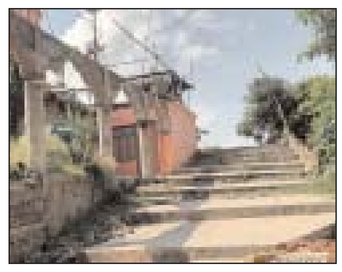

ध्यान देने वाली बात यह है कि पचरन नाथ मंदिर कोई साधारण स्थल नहीं, बल्कि संस्कृति, इतिहास और आस्था का त्रिवेणी संगम है। यदि ऐसे स्थलों को केवल इसलिए उपेक्षित रखा जाएगा कि वे किसी राजनैतिक प्राथमिकता में नहीं आते, तो यह न केवल धार्मिक पक्ष का अपमान है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत से सीधा विमुख होना भी है।

समय की मांग- सूची नहीं, संवेदना चाहिए

सरकारें यदि शिवलिंग को भी ÷सूची÷ में डालकर तय करेंगी कि कौन-सा मंदिर विकास योग्य है और कौन नहीं, तो फिर श्रद्धा, विरासत और इतिहास – इन सबकी भूमिका समाप्त हो जाएगी। विकास का अधिकार आस्था के मापदंडों पर नहीं, समानता की नींव पर आधारित होना चाहिए। विधायक का संकल्प, पर कार्यवाही कब? क्षेत्रीय विधायक विनय कुमार द्विवेदी का यह कथन कि "पचरन नाथ मंदिर को पर्यटन मानचित्र पर लाने हेतु मैं विधानसभा में पुनः आवाज उठाऊँगा," सराहनीय है – पर अब वक़्त है संकल्प से आगे बढ़कर ठोस कार्यवाही करने का। पचरन नाथ मंदिर अब एक प्रतीक बन चुका है – उस आस्था का, जिसे सम्मान नहीं मिला; उस संस्कृति का, जिसे सूची में जगह नहीं मिली; और उस संघर्ष का, जो श्रद्धालु वर्षों से करते आ रहे हैं।

शिव सबके हैं — तो फिर संरक्षण किसी एक का विशेषाधिकार क्यों?

दीनानाथ यादव ने उठाया बीड़ा – "पचरन नाथ मंदिर का जीर्णोद्धार करूगा । जब शासन और प्रशासन मौन हों, तब आस्था की लड़ाई आम जन ही लड़ते हैं। ग्राम पंचायत पचरन स्थित पचरन नाथ मंदिर, जो पांडवों की स्मृति और शिवभक्ति का एक ऐतिहासिक प्रतीक है, आज भी विकास की मुख्यधारा से दूर खड़ा है। लेकिन अब इस उपेक्षा को चुनौती देने का संकल्प लिया है दीनानाथ यादव ने एक साधारण ग्रामीण, पर असाधारण जज्बे के साथ।

चंदे से शुरू किया जीर्णोद्धार, गाँव-गाँव से मांग रहे सहयोग

दीनानाथ यादव ने मंदिर की खस्ताहाल स्थिति को देखकर खुद आगे बढ़ने का फैसला किया। बिना किसी सरकारी सहायता या संसाधन के, उन्होंने ग्रामवासियों से चंदा एकत्र करना शुरू किया, और जो थोड़ा-बहुत धनराशि जुटी, उससे मंदिर की टूटी दीवारों की मरम्मत, सफाई, रंगाई-पुताई जैसे कार्यों की पहल की। उनका कहना है "यह मंदिर हमारी पहचान है, हमारी संस्कृति है। जब कोई नहीं आया, तो मैंने ठाना कि चाहे जैसे भी हो, इसे फिर से सजाऊंगा, संवारूंगा। यह मेरी श्रद्धा का संकल्प है, न कि कोई प्रदर्शन।"

जब कोई प्रतिनिधि नहीं आया, तब एक श्रद्धालु ने उठाया दीपक

जहाँ एक ओर पृथ्वी नाथ मंदिर को सरकारी बजट, पर्यटन योजनाओं और प्रशासनिक तंत्र का पूरा लाभ मिल रहा है, वहीं ठीक उसी परिसर से कुछ कदम दूर यह ऐतिहासिक मंदिर आज भी ग्रामवासियों की उम्मीदों के सहारे है। दीनानाथ यादव जैसे लोग यह साबित करते हैं कि शिव की सेवा केवल सरकारों से नहीं होती, श्रद्धा से भी होती है।

स्थानीय जनता की भावनाएँ

गाँव के लोगों का कहना है कि दीनानाथ यादव मंदिर के लिए चुपचाप श्रम और सेवा कर रहे हैं, बिना किसी प्रचार या लाभ की अपेक्षा के। उनका यह प्रयास समाज के लिए प्रेरणा बन रहा है। जरूरत है सरकारी सहयोग की, न कि सिर्फ भाषणों की अब समय आ गया है कि ऐसे लोगों को न सिर्फ सराहा जाए, बल्कि शासन-प्रशासन द्वारा संरक्षण एवं आर्थिक सहयोग भी दिया जाए, ताकि यह मंदिर एक बार फिर अपनी पूर्ण गरिमा के साथ खड़ा हो सके। पचरन नाथ मंदिर अब एक व्यक्ति की जिद, एक ग्राम की आस्था और एक युग की संस्कृति का प्रतिनिधि बन चुका है। जब श्रद्धालु खुद संकल्प लें, तो सरकार को साथ देना ही होगा। "श्रद्धा जब संकल्प बन जाए, तो पत्थर भी मंदिर हो जाते हैं।"

गोरखपुर के इटौरा गांव में दिनदहाड़े हत्या, बाइक सवार हमलावरों ने अनिल यादव को धारदार हथियार से काट डाला

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- गोरखपुर जिले के बांसगांव थाना क्षेत्र के ग्राम इटौरा में गुरुवार को एक दिल दहलाने वाली घटना ने पूरे इलाके में सनसनी फैला दी। बाइक सवार दो अज्ञात हमलावरों ने धारदार हथियार से एक युवक की निर्मम हत्या कर दी। मृतक की पहचान अनिल यादव (पुत्र स्व. रामा यादव), निवासी गजारी, के रूप में हुई है। यह घटना दोपहर के समय हुई, जब अनिल अपने गांव के पास किसी कार्य से जा रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बाइक सवार दो युवकों ने अनिल को घेर लिया और उसका पीछा कर धारदार हथियार से ताबड़तोड़ वार किए। अनिल ने बचने की कोशिश की, लेकिन हमलावरों ने उसे दौड़ाकर मौत के घाट उतार दिया। घटना की सूचना मिलते ही बांसगांव पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ शुरू कर दी है और हमलावरों की तलाश में

छापेमारी कर रही है। प्रारंभिक जांच में पुरानी रंजिश को हत्या का कारण माना जा रहा है, लेकिन पुलिस अभी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंची है। स्थानीय लोगों में इस घटना से भय और आक्रोश का माहौल है। अनिल के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है, और वे इंसाफ की मांग कर रहे हैं। यह घटना गोरखपुर में बढ़ती आपराधिक घटनाओं की ओर इशारा करती है। हाल के महीनों में जिले में कई ऐसी वारदातें सामने आई हैं, जहां बाइक सवार बदमाशों ने गोलीबारी या धारदार हथियारों से हमले किए। इस हत्याकांड ने स्थानीय प्रशासन और पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े किए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि पुलिस की गश्त और निगरानी में कमी के कारण अपराधी बेखौफ हो गए हैं। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा और मामले की गहन जांच की जा रही है। एसएचओ प्रेम पाल सिंह ने बताया मृतक अनिल यादव के पट्टीदारों सोहन यादव मोहन मोहन यादव पुत्रगढ़ रामा यादव में पशु छोड़ने के विवाद हुआ जिसमें बाद कुल्हाड़ी से हत्या कर दी गई ।

गुरु पूर्णिमा पर कंपोजिट विद्यालय भीउरी में विशेष आयोजन

●बच्चों को सामुदायिक सेवा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें, यह उन्हें दसरों की मदद करना सिखाएगा प्रधाना चार्य सूर्य प्रकाश पांन्डेय

स्वतंत्र प्रभात

खजनी- गोरखपुर खजनी तहसील के कंपोजिट विद्यालय के बच्चों ने धूमधाम से मनाई गुरु पूर्णिमा आप उन्हें गुरुओं के महत्व के बारे में बता सकते हैं और उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने के तरीके सिखा सकते हैं। आप उन्हें गुरुचओं को उपहार देने, उनके साथ समय बिताने, या उनके द्वारा सिखाई गई बातों को याद करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। गुरु पूर्णिमा, जिसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण त्योहार है जो शिक्षकों और गुरुओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है। यह दिन बच्चों को यह सिखाने का एक शानदार अवसर है कि गुरु हमारे जीवन में कितने महत्वपूर्ण हैं और हमें उनका सम्मान क्यों करना चाहिए। यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं कि आप गुरु पूर्णिमा के दिन बच्चों के साथ क्या कर सकते हैं-

गुरुओं के बारे में बात करें

बच्चों को गुरुओं के महत्व के बारे में बताएं और उन्हें बताएं कि वे हमारे जीवन में ज्ञान और मार्गदर्शन कैसे प्रदान करते हैं।

गुरुओं को उपहार दें

बच्चों को अपने शिक्षकों या गुरुओं को उपहार देने के लिए प्रोत्साहित करें। यह एक फूल, एक ग्रीटिंग कार्ड, या एक छोटी सी मिठाई हो सकती है।

गुरुओं के साथ समय बिताएं

बच्चों को अपने शिक्षकों या गुरुओं के साथ समय बिताने के लिए प्रोत्साहित करें। वे उनके साथ बैठकर बातें कर सकते हैं, खेल सकते हैं, या उनके साथ कुछ समय बिता सकते हैं।

गुरुओं द्वारा सिखाई गई बातों को याद करें

बच्चों को अपने गुरुओं द्वारा सिखाई गई बातों को याद करने के लिए प्रोत्साहित करें। यह उन्हें यह समझने में मदद करेगा कि गुरुओं ने उन्हें क्या सिखाया है और वे इसे अपने जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं।

सामुदायिक सेवा में भाग लें

बच्चों को सामुदायिक सेवा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। यह उन्हें दूसरों की मदद करना सिखाएगा और उन्हें यह समझने में मदद करेगा कि गुरुओं ने उन्हें निस्वार्थ सेवा का महत्व सिखाया है। यह त्योहार बच्चों को यह समझने में मदद करने का एक शानदार अवसर है कि गुरु हमारे जीवन में कितने महत्वपूर्ण हैं और हमें उनका सम्मान क्यों करना चाहिए। आप यह वीडियो देखकर गुरु पूर्णिमा के दिन क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, जान सकते हैं- इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षक, छात्र, छात्रएं भाग लिए

गोला थाना क्षेत्र छीतौना गांव में करंट की चपेट में आने से ड्राइवर की दर्दनाक मौत

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- गोला बाजार क्षेत्र छीतौना गांव में एक दिल दहला देने वाली घटना ने पूरे इलाके को झकझोर कर रख दिया। राम नेवास के खेत में गिल्ली बनाने के दौरान ड्राइवर लाल बिहारी (32 वर्ष) की करंट लगने से दर्दनाक मौत हो गई। यह हादसा उस समय हुआ जब लाल बिहारी ट्रैक्टर से खेत में काम कर रहे थे। खेत में मोटर से पानी चल रहा था, और मोटर का तार मेड़ के रास्ते से गुजर रहा था। तार के कटे होने के कारण पानी में करंट उतर आया, जिसकी चपेट में लाल बिहारी आ गए। गोला तहसील रिपोर्टर वृजनाथ त्रिपाठी अनुसार, लाल बिहारी पुत्र स्व~ स्याम सुंदर ट्रैक्टर से उतरकर खेत में किसी काम के लिए गए थे। अचानक करंट की चपेट में आने से वह बेहोश होकर गिर पड़े। खेत में काम कर रहे अन्य मजदूरों ने तुरंत शोर मचाया और मदद के लिए दौड़े, लेकिन तब तक लाल बिहारी की हालत

गंभीर हो चुकी थी। आनन-फानन में उन्हें नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) गोला ले जाया गया। वहां मौजूद डॉक्टरों ने प्राथमिक जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस घटना ने पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ा दी।

सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। प्रारंभिक जांच में पुलिस ने पाया कि मोटर के तार की खराब स्थिति और लापरवाही इस हादसे का मुख्य कारण थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और खेत मालिक राम नेवास से भी पूछताछ की जा रही है। इस घटना ने एक बार फिर बिजली के खुले तारों और खेतों में सुरक्षा मानकों की अनदेखी के गंभीर परिणामों को उजागर किया है। ग्रामीणों ने प्रशासन से ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सख्त कदम उठाने की मांग की है। लाल बिहारी के परिवार में उनकी पत्नी और दो छोटे बच्चे हैं, जिनके सामने अब आजीविका का संकट खड़ा हो गया है।

मनचलों से परेशान नाबालिग बेटी के पिता की गुहार पर चार युवकों पर मुकदमा दर्ज, पुलिस कर रही दबिश

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर। गोला थाना क्षेत्र में नाबालिग बेटी से लगातार छेड़छाड़ और धमकी से परेशान पिता ने पुलिस से गुहार लगाई। पिता की तहरीर पर पुलिस ने चार युवकों पर बीएनएस की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। आरोप है कि एक युवक नाबालिग से एकतरफा प्रेम का दबाव बना रहा था और इंकार पर जान से मारने की धमकी दे रहा था। गोला तहसील ररपोर्टर बृजनाथ त्रिपाठी के प्राप्त जानकारी के अनुसार गोला क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसकी नाबालिग बेटी से गांव का एक युवक कई दिनों से छेड़खानी कर रहा था। बीते 21 जनवरी को जब वह पत्नी के साथ बाजार गया था, तभी उक्त युवक उसके घर में घुसकर बेटी से छेड़खानी करने लगा। बेटी के विरोध करने पर आरोपी ने उसे मारा और घायल कर दिया। विरोध करने पर गोली मारने की धमकी भी दी। पीड़ित पिता ने इस घटना का वीडियो होने की भी बात कही है।

घटना के बाद से किशोरी मानसिक तनाव में थी। बीते 5 जुलाई की रात आठ बजे पिता बेटी को डॉक्टर को दिखाने के बाद गांव लौट रहा था। रास्ते में आरोपी युवक अपने तीन दोस्तों के साथ बाइक रोककर खड़ा था। आरोप है कि उसने बाइक चला रहे व्यक्ति के सिर पर कट्टा सटा दिया और गाली-गलौज करते हुए जान से मारने की नीयत से दौड़ाया। किसी तरह जान बचाकर वह भाग निकला, लेकिन आरोपियों ने पिता को पकड़ लिया और मारपीट कर भद्दी-भद्दी गालियां देते हुए जान से मारने की धमकी दी। इस संबंध में कोतवाल गोला अंजुल चतुर्वेदी ने बताया कि पीड़ित की तहरीर पर विपिन पुत्र स्वामी नाथ निवासी बिशुपर गोला बाजार, सतेंद्र पुत्र रामसमुझ ,इंद्रजीत पुत्र स्वामी नाथ व एक अज्ञात के खिलाफ बीएनएस की धारा 115(2), 352, 351(3), 333, 126(2) व 74 में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस टीम आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है और जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पीड़ित परिवार ने पुलिस प्रशासन से सुरक्षा की मांग की है ताकि बेटी और परिवार सुरक्षित रह सके। वहीं गांव में घटना के बाद से दहशत का माहौल बना हुआ है।

पंद्रह घंटे बाद पानी में डूबे किशोर का शव बरामद

●घटनास्थल से करीब एक किलोमीटर दूर स्थित गजगड़हा नाले के पास मछुआरों के मदद से हुआ शव बराम

स्वतंत्र प्रभात

रतनपुर/महराजगंज। परसामलिक थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत पड़ौली निवासी कलामुद्दीन का 14 वर्षीय पुत्र मुस्ताक बुधवार को पड़ौली स्थित सुलिअहवा कर्बला के पास बटनी नाले में अपने कुछ दोस्तों के साथ नहा रहा था। नहाते वक्त गहरे पानी में चले जाने से वह डूब गया। नहा रहे अन्य साथियों द्वारा मुस्ताक को बचाने का प्रयास किया गया लेकिन पानी का बहाव तेज होने के कारण उसे नहीं बचा पाए और वह पानी के बहाव में डूब

गया। पुलिस व मछुआरों के मदद से शव का खोजबीन किया जा रहा था लेकिन कहीं उसका शव नहीं मिला। वहीं बृहस्पतिवार को सुबह होते ही पुनः मछुआरों द्वारा खोजबीन शुरू कर दिया गया जहां सुबह करीब सात बजे मछुआरों ने घटनास्थल से करीब एक किलोमीटर दूर स्थित गजगड़हा नाले के पास शव को ढूंढ निकाला। वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर परिजनों के मांग पर शव का पंचनामा भरकर परिजनों को सुपुर्द कर दिया।मृतक मुस्ताक तीन भाई व एक बहन में सबसे बड़ा था। मुस्ताक के मौत से बहन मुस्कान (10) भाई मुस्तकीम (8) मुस्तफा (4) व पिता कलामुद्दीन व माता नाजमा खातून का रो-रोकर बुरा हाल है। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक योगेन्द्र कुमार राय ने बताया कि शव को बरामद कर लिया गया है। परिजन शव का पोस्टमार्टम नहीं करवाना चाहते थे इसलिए परिजनों के मांग पर शव का पंचनामा भरकर उन्हें सुपुर्द कर दिया गया है।

जमीन बैनामा के नाम पर 2.15 लाख की ठगी, गोरखपुर में दो युवकों पर केस दर्ज

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- गोलाबाजार क्षेत्र में जमीन के सौदे के नाम पर एक महिला से लाखों रुपये की ठगी का सनसनीखेज मामला सामने आया है। नगर पंचायत के वार्ड नंबर 18 की रहने वाली बिंदू देवी, पत्नी संतोष, ने गोड़सरी और बाड़ीतरया गांव के दो युवकों पर 2.15 लाख रुपये हड़पने का गंभीर आरोप लगाया है। पुलिस ने पीड़िता की तहरीर पर दोनों आरोपियों के खिलाफ धारा 406 (आपराधिक विश्वासघात) के तहत मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।इस मामले ने स्थानीय लोगों में हड़कंप मचा दिया है। गोला बाजार संवादाता वृजनाथ त्रिपाठी अनुसार बिंदू देवी ने गोला थाने में दी गई तहरीर में बताया कि गोड़सरी निवासी गणेश, पुत्र छोटेलाल, ने जमीन का

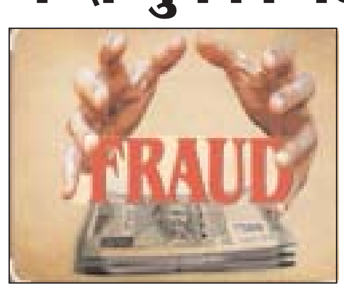

बैनामा कराने के बहाने उनसे एक लाख रुपये लिए। इसके बाद बाड़ीतरया गांव के भूस्वामी अरविंद, पुत्र अर्जुन प्रसाद, ने जमीन बेचने के लिए 1.15 लाख रुपये बयाने के रूप में वसूल किए। बिंदू ने सपने में भी नहीं सोचा था कि यह सौदा उनके लिए इतना महंगा पड़ेगा। बाद में उन्हें पता चला कि भूस्वामी अनुसूचित जाति से है, और कानूनी रूप से वह उसकी जमीन का बैनामा नहीं करा सकतीं। जब उन्होंने अपने पैसे वापस मांगे, तो दोनों आरोपी टालमटोल करने लगे।

बिंदू ने बताया कि 14 मई को थाने में सुलहनामा हुआ, जिसमें आरोपियों ने जल्दी रुपये लौटाने का वादा किया था। लेकिन महीनों बीत जाने के बाद भी न तो पैसा लौटाया गया और न ही कोई ठोस जवाब मिला। हताश होकर बिंदू ने पुलिस का दरवाजा खटखटाया। गोला थानाध्यक्ष अंजुल चतुर्वेदी ने बताया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए केस दर्ज कर लिया गया है और जांच तेजी से की जा रही है। यह घटना क्षेत्र में जमीन के सौदों में बढ़ती ठगी की वारदातों को उजागर करती है। स्थानीय लोग अब सतर्कता बरतने की सलाह दे रहे हैं। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि आरोपियों को जल्द पकड़कर पीड़िता को न्याय दिलाया जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

ब्लॉक प्रमुख के साथ सांसद विधायक ने माधव इंटरप्राइजेज का उद्घाटन किया

बरेली/नवाबगंज विधानसभा के अंतर्गत विकासखंड भदपुरा मैं स्थित क्यों लड़ियां के शारदा सागर खंड नहर शाहजहांपुर पर खोला गया नवीन प्रतिष्ठान माधव इंटरप्राइजेज काफी ता काटकर सांसद छत्रपाल सिंह गंगवार विधायक डॉक्टर एमपी आर्य भदपुरा ब्लॉक प्रमुख

रवि शंकर गंगवार के साथ प्रतिष्ठान पर पहुंचकर उद्घाटन किया। साथ ही इसके खुलने से क्षेत्र के लोगों को लाभ मिलेगा इस पर जनप्रतिनिधियों ने हर्ष व्यक्त किया और दुकान के संचालक को बधाई दी और कहा जनता के साथ सुंदर व्यवहार करना यहीं पर ब्लॉक प्रमुख रवि शंकर गंगवार ने भी कहा दुकानदार और ग्राहक के बीच एक पारिवारिक संबंध होता है यदि वह ग्राहक को संतोषजनक तरीके से व्यवहार करके कार्य करता है तो वह ग्राहक इसका स्थाई ग्राहक बन जाता है साथ ही अन्य को भी तोड़ कर लाने का कार्य करता है इसलिए दुकानदार को ग्राहक के प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहिए तभी व्यापार सफल होता है।

विद्यालय में हुआ वृक्षारोपण

लखीमपुर खीरी। ब्लॉक फूलबेहड़ के ग्राम श्रीनगर स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय में इंचार्ज प्रधानाध्यापक लक्ष्मी मेहरोत्रा ने विद्यालय के समस्त स्टाफ ग्राम प्रधान रसोईया और विद्यालय के छात्र-छात्राओ के सहयोग से उच्च प्राथमिक विद्यालय श्रीनगर में बीते दिवस वृक्षारोपण किया किया।

भानपुरी खजुरिया में लगाए गए 1000 पौधे

लखीमपुर खीरी। वन महोत्सव के अंतर्गत चल रहे एक पौधा मां के नाम कार्यक्रम के तहत ब्लाक तहसील पलिया के ग्राम भानपुरी खजुरिया में आज बुधवार को 1000 पौधे लगाए गए। उक्त जानकारी देते हुए नरेगा मेट पूनम ग्राम भानपुरी खजुरिया ने बताया कि इस मौके पर काफी ग्रामीणों ने वृक्षारोपण किया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से पंचायत मित्र संतोष ग्राम प्रधान प्रभुनाथ अनिल मधेशिया ओमप्रकाश सहित उमेश सरफराज हरे राम आदि लोगों ने सहयोग किया।

थाना शारदा नगर में 18 माह का कार्यकाल रहा अतिसराहनीय

बृजेश मौर्य ने संभाला थाना मैलानी का बताओ और प्रभारी निरीक्षक चार्ज

लखीमपुर खीरी निरीक्षक श्री बृजेश सिंह मौर्य जीआपने फरवरी/2024 को शारदा नगर थानाध्यक्ष का पद भार संभाला था। शारदा नगर थाने पर आपका अठारह माह का कार्यकाल अति सराहनीय रहा ।शारदा नगर थाने में आपकी निष्पक्ष कार्य शैली एक उदाहरण के तौर पर जानी जायेगी। बहुत से छोटे बड़े विवादों को आपने बड़ी कार्यकुशलता के साथ निस्तारित किया। आपके कार्यकाल में कुछ विवाद ऐसे आये जो समय समय पर आपको परेशान किया लेकिन आपने अपनी कुशलता से उनका निस्तारण कर समाज में अच्छी पुलिसिंग को दिखाया। श्री मान पुलिस अधीक्षक जी का जो भी निर्णय है वह अच्छा ही है। पर यहां जाने का दुख पूरे शारदा नगर थाना के क्षेत्र की जनता व मीडिया बंधुओ को है। मै किसी की बड़ाई बहुत कम लिखता हूं। लेकिन आपके बारे में लिखने के लिए कोई संकोच नही है। आपने पुलिस परिवार को अनुशासित रखने के साथ उनके मर्म को भी अच्छी तरह से परखा और प्यार दिया। आप चंद्रमा की तरह प्रकाशवान है, जहां रहेगें रोशनी विखेरेगें।

ग्राम पंचायत के विकास को आए सरकारी धन का बंदरबांट कर अर्श से फर्श पर पहुंचे प्रधान नरहर- आरोप

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी। विकासखंड फूलबेहड़ की चर्चित ग्राम पंचायत नरहर में ग्राम प्रधान पति मुन्ना लाल और पंचायत सचिव सौरव कुमार की मिलीभगत से विकास को आए सरकारी धन का बंदरबांट कर लाखों की नामी बेनामी संपत्ति बना लिए जाने के गंभीर आरोप लगाए गए हैं। मामले की लिखित शिकायत जिलाधिकारी खीरी से कर मामले की जांच टीम गठित कर निष्पक्ष जांच कराए जाने की मांग की गई है। डी.एम.दुर्गा शक्ति नागपाल को दिए गए शपथ पत्र के साथ शिकायत में ग्राम पंचायत नरहर में स्ट्रीट लाइट, नल रिबोर द्व1द्व मरम्मत तथा मनरेगा सहित भारत सरकार की अति आवश्यक योजना स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय निर्माण कार्य में व्यापक स्तर पर घोटाला किए जाने के गंभीर आरोप लगाए हैं।जिलाधिकारी खीरी को दिए गए शिकायती प्रार्थना पत्र में शिकायतकर्ता विश्राम पुत्र सोहनलाल निवासी रामपुरवा ग्राम पंचायत नरहर ने आरोप लगाया है की ग्राम प्रधान उषा देवी के पति मुन्ना लाल और पंचायत सचिव ने सरकार द्वारा आवंटित मान सरोवर के निर्माण में आपसी मिली भगत करके आधा अधूरा मानक विहीन कार्य कराकर सरकारी धनराशी का बंदर बाट कर लिया गया। वही शौचालय निर्माण में तो जमकर फर्जीवाडा करके शौचालय बनवाये बगैर ही फर्जी फोटो अपलोड कर पैसा निकाल कर बंदर वाट कर लिया गया। शिकायतकर्तागणों की माने तो नल मरम्मत व रिबोर तथा स्ट्रीट लाइट खरीद एवं दवा छिड़काव तथा ग्राम पंचायत की साफ सफाई के नाम परजमकर भ्रष्टाचार किया गया। कहीं भी आज तक दवा का छिड़काव नही हुआ है और ना ही साफ सफाई ।महज कागजों का पेट भरकर सरकारी धन से प्रधान पति द्वारा जमीन मकान व प्लांट लखीमपुर में ट्रैक्टर ट्राली जरूर बना डाली गई गांव में नलों की हालत मरम्मत व रिबोर की स्वयं दासता बयां कर रही है। पूरी ग्राम पंचायत की करा ली जाए जांच तो पता चल जाएगा कहां-कहां कितनी-कितनी स्ट्रीट लाइट लगवाई गई हैं। यही हाल मनरेगा में भी है यहां पर ग्राम पंचायत के सबसे मजबूत नामी ग्रामीण लोगों की फर्जी हाजिरी लगाकर सरकारी धन उन्हीं लोगों के खाते में पैसा लगाकर बंदर बांट कर लिया जा रहा है।जो लोग कभी भी मनरेगा खोदने नहीं जाते हैं उनके यहां हमेशा दो-चार मजदूर खुद ही मजदूरी पर लगाते हैं ऐसे लोगों के नाम पैसा भेज कर सरकारी धन का बंदरबांट किया जा रहा है उक्त आरोप लगाते हुए शिकायतकर्ता गणों ने मामले की जांच की गठित कर निष्पक्ष जांच कराए जाने की मांग की है। शिकायत कर्ता का आरोप है कि कि अबतक सैकड़ों प्रार्थना पत्र दिए जा चुके है लेकिन ऊपर तक सैटिंग गेटिंग के चलते आज तक जांच नहीं की गई और न ही कोई कार्यवाही ही की गई है। जिम्मेदारों की इस लापरवाही पूर्ण कार्यशैली से अजीज आशाराम और धीर सिंह ने जिलाधिकारी को शपथ पत्र के साथ शिकायत देकर कार्यवाही की मांग की है।

बाबा पारसनाथ शिव मंदिर के कपाट अब सुबह 4 से रात 10:30 बजे तक रहेंगे खुले

मैगलगंज क्षेत्र के मढिया घाट स्थित पौराणिक बाबा पारसनाथ जी शिव मंदिर के दर्शन समय में परिवर्तन किया गया है। अब मंदिर के कपाट प्रतिदिन सुबह 4:00 बजे से रात्रि 10:30 बजे तक खुले रहेंगे जिससे श्रद्धालु निर्बाध रूप से जलाभिषेक व दर्शन कर सकें। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक द्वारा मंदिर परिसर में सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए गए हैं। सुरक्षा व्यवस्था के तहत कई प्रमुख प्वाइंटों पर पुलिस बल तैनात रहेगा, और संपूर्ण सुरक्षा योजना तैयार कर ली गई है। श्रद्धालुओं के लिए पार्किंग व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई है, ताकि किसी प्रकार की असुविधा न हो। दर्शन के दौरान शांति, मर्यादा व स्वच्छता बनाए रखें और प्रशासन द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करें।

शासन के निर्देशानुसार ब्लॉक प्रांगण में प्रमुख के साथ सांसद विधायक ने किया वृक्षारोपण

स्वतंत्र प्रभात

बरेली/सांसद छत्रपाल सिंह गंगवार विधायक डॉक्टर एमपी आर्य ने भदपुरा ब्लॉक प्रमुख रश्मि गंगवार के साथ ब्लॉक प्रांगण में वृक्षारोपण किया और कहा प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार पूरे प्रदेश में 37 करोड़ वृक्ष लगाए जाएंगे जिन्हें मां के नाम एक पौधा लगाने का रूप दिया जाएगा।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा निर्देश जारी किया गया है जिसके तहत सभी जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारी कर्मचारियों को एक-एक वृक्ष लगाकर इसे सफल बनाने की आवश्यकता है इसी क्रम में भाजपा के सुंदरी मंडल अध्यक्ष जयदीप सिंह ने भी मां के नाम एक वृक्ष लगाने का कार्य किया इसी क्रम में मुड़िया चौधरी के ग्राम प्रधान वेदपाल सिंह कनौजिया ने भी मन के नाम एक पेड़ लगाकर प्रदेश सरकार द्वारा राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई गई है ।

यहीं पर ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि रवि शंकर गंगवार ने स्वतंत्र प्रभात से बात करते हुए कहा विकासखंड भदपुरा के अंतर्गत 79 ग्राम पंचायत हैं इन सभी ग्राम पंचायत में वृक्षारोपण करके पूरे ब्लॉक क्षेत्र में एक लाख से अधिक पौधे मां के नाम लगाकर वृक्षारोपण किया जाएगा जिसे सरकार की इस योजना को सफल बनाया जा सके इसके लिए ग्राम पंचायत को पौधे उपलब्ध कराए जा चुके हैं गड्ढे भी मनरेगा के तहत बनवा दिए गए हैं यदि कहीं नहीं बन पाए हैं तो वहां पर भी बनवा दिए जाएंगे और वृक्षारोपण करके सरकार की मनसा के अनुरूप कार्य किया जाएगा इसके लिए भाजपा के जनप्रतिनिधि एवं पदाधिकारी पूरी तरह समर्पित हैं।

क्यों लड़िया पुलिस ने एक ही दिन में दो वांछित अपराधियों को पकड़ कर जेल भेजा

स्वतंत्र प्रभात

बरेली/जनपद के थाना क्यों लड़िया में स्थित नाम जद दो अपराधी गंभीर धाराओं के लंबे समय से वांछित चल रहे थे जिन्हें यहां के प्रभारी निरीक्षक राजबली सिंह ने अपनी टीम के साथ अलग-अलग स्थानों से दोनों वांछित अपराधियों को पड़कर जेल भेजा है। इसमें पीलीभीत जनपद के थाना बीसलपुर के गांव चौसरा का हरिओम धारा 69 का वांछित अपराधी लंबे समय से पुलिस की पकड़ से बाहर चल रहा था इसे आज प्रभारी निरीक्षक राजबली सिंह ने मुखबिर की सूचना पर मेथी चौराहा से 9~30 बजे पकड़ लिया इसी क्रम में विक्रम निवासी जरौली शेरपुर थाना बिलग्राम जनपद हरदोई भी पास्को एक्ट में लंबे समय से वंचित चल रहा था।

यहां के प्रभारी निरीक्षक राजबली सिंह ने दिन के 11:00 बजे करीब केला डाडी शिव मंदिर के पास से पकड़ लिया पकड़े हुए दोनों अपराधियों को पुलिस ने मेडिकल परीक्षण करने के बाद उन्हें न्यायालय के सुपुर्द कर दिया गया जहां से उनको जेल भेज दिया गया है। क्यों लड़ियां पुलिस ने एक ही दिन में दो वांछित अपराधियों को पड़कर जेल भेजना का कार्य कर सराहनीय कार्य किया है जबकि यह दोनों अपराधी लंबे समय से पुलिस को चकमा दे रहे थे जिन्हें आज अलग-अलग स्थानों से पड़कर जेल भेज दिया गया है बुद्धिजीवियों ने पुलिस की इस कार्यवाही की सराहना की और प्रभारी निरीक्षक को बधाई दी।

गुरु पूर्णिमा पर साधु संतों को सम्मानित कर लिया- आशीर्वाद

सिद्धार्थनगर। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी द्वारा विभिन्न मठ मंदिरों में साधू संतों को सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में संगठन के निर्देशानुसार गुरुवार को निवर्तमान भाजपा मण्डल अध्यक्ष नितेश पाण्डेय ने प्राचीन समय माता मंदिर देवियापुर के महंत रामकुमार दास एवं वशिष्ठ पाण्डेय को अंग वस्त्र भेंट कर साधू संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान जिला उपाध्यक्ष पिछड़ा मोर्चा श्यामप्रकाश जायसवाल सावन प्रसाद हरिश्चंद्र संतोष कुमार नरेश कुमार रामकेश आदि उपस्थित रहे।

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता व पूर्व राज्य सभा सांसद जुगुल किशोर सर्वप्रथम तथागत गौतम बुद्ध और डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के चरणों में पुष्प अर्पित किया

स्वतंत्र प्रभात

मितौली खीरी। विकासखंड मितौली क्षेत्र के बटाऊ गांव में आषाढ़ पूर्णिमा के अवसर पर भाजपा प्रदेश प्रवक्ता व पूर्व राज्य सभा सांसद जुगुल किशोर सर्वप्रथम तथागत गौतम बुद्ध और डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के चरणों में पुष्प अर्पित किया। और यह पदयात्रा उनकी अगुवाई में निकाली गई। जिससे पदयात्रा में बुद्धम शरण गच्छामि के मंत्रो से गूंज उठा। जहां आषाढ़ पूर्णिमा के अवसर पर हजारों की संख्या में लोग। इस पद यात्रा में शामिल रहे। और भाजपा प्रदेश प्रवक्ता जुगल किशोर ने कहा कि मुझे अपने ननिहाल में आज तथागत गौतम बुद्ध की पदयात्रा में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ हैं यह बड़े सौभाग्य की बात है ।आषाढी पूर्णिमा इसलिए मनाई जाती हैं क्योंकि तथागत गौतम बुद्ध ने इसी दिन धर्म चक्र प्रवर्तन किया था और इसी दिन तथागत गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश दिया। और इसीलिए इसको गुरु पूर्णिमा के रूप में भी जाना जाता है। क्योंकि जो भी गुरु अपने शिष्यों को ज्ञान देते हैं उसी को गुरु पूर्णिमा के रूप में भी जाना जाता है। तथागत गौतम बुद्ध ने अपने उपदेशों को सारनाथ में दिया था। इसीलिए आषाढ़ पूर्णिमा बड़े हर्षोल्लास के साथ जगह-जगह मनाई जाती है।इस अवसर पर बहुजनों की बुलंद आवाज सचिन सिंह नितिन, एडवोकेट रजनी बौद्ध, पुत्तू लाल गौतम,वेदप्रकाश गौतम, शमशाद अली सहित सम्मानित लोग व महिलाएं मौजूद रहीं।

राष्ट्र की आर्थिक उन्नति में व्यवसायियों का बहुत बड़ा योगदान होता है- श्यामधनी राही

● अलीगढ़वा व्यापार संगठन के नए इकाई का गठन एवं शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। उत्तर प्रदेश व्यापार संगठन के तत्वाधान में अलीगढ़वा व्यापार संगठन के नए इकाई का गठन एवं शपथ ग्रहण समारोह नगर के एक विद्यालय परिसर में आयोजित हुआ। जहाँ नगर के व्यवसायियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।जिसके मुख्य अतिथि सदर विधायक श्यामधनी राही रहे। कार्यक्रम में नगर के व्यवसाइयों द्वारा सर्वसम्मति से अशोक कुमार वर्मा को नगर का अध्यक्ष चुना गया।

वहीं उद्योग व्यापार संगठन के जिलाध्यक्ष अजय कसौधन के द्वारा अलीगढ़वा नगर की घोषित हुई टीम में अशोक कुमार वर्मा- अध्यक्ष, दूधनाथ कसौधन- उपाध्यक्ष, अजीत कसौधन- उपाध्यक्ष, संजय कसौधन- महामंत्री, जगमोहन सहानी- मंत्री, प्रदीप कसौधन-मंत्री, रामनरायन कसौधन- मंत्री, महेश कुमार कसौधन- मंत्री, दिलीप कुमार कसौधन- मंत्री, सुभम मोदनवाल - मंत्री, राहुल कसौधन- कोषाध्यक्ष, जगदीश सहानी- मीडिया प्रभारी, मिठाई लाल कसौधन- वरिष्ठ सलाहकार चुने गए। कार्यक्रम के दौरान सदर विधायक श्यामधनी राही ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्र की आर्थिक उन्नति में व्यवसायियों का बहुत बड़ा योगदान होता है। नव गठित टीम से जुड़े सभी व्यापारी से अपील करते हुए उन्होंने कहा कि आप सभी अपने -अपने क्षेत्र में एक दूसरे से जुड़े रहकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में भी अपना योगदान देते रहे ताकि समाज में एक नया संदेश जाए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष व्यापार संगठन अजय कसौधन ने कहा कि जिला उद्योग व्यापार संगठन व्यापारी हितों को लेकर लगातार संघर्ष करता चला आ रहा है। कार्यक्रम को निवर्तमान मण्डल अध्यक्ष नितेश पाण्डेय, भीमचंद कसौधन, राणा प्रताप सिंह ,प्रदीप कुमार वर्मा, अध्यक्ष व्यापार संगठन बर्डपुर राजकमल जायसवाल, कंचन वर्मा आदि ने सम्बोधित किया।

बच्चों को कुपोषण, रतौंधी और संक्रमण से बचाने को स्वास्थ्य विभाग ने चलाया अभियान

● 9 माह से 5 वर्ष तक के बच्चों को पिलाई जाएगीविटामिन ए की खुराक

सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता व सीएमएस डॉ ज्योति मेहरोत्रा ने जिला महिला चिकित्सालय से किया कार्यक्रम का शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी। बाल स्वास्थ्य पोषण माह के अंतर्गत बुधवार को जिला महिला चिकित्सालय में सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता सीएमएस डॉ ज्योति मेहरोत्रा द्वारा विटामिन-ए खुराक पिलाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ फीता काट कर किया गया।सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने बताया कि 9 माह से 5 वर्ष तक की आयु के बच्चों को विटामिन ए की खुराक पिलाने के लिए विटामिन ए संपूर्ण अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य बच्चों में कुपोषण, रतौंधी और संक्रमण से लड़ने की शक्ति को बढ़ाना है।उन्होंने ने यह भी बताया कि आंगनवाड़ी केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के बाद घर-घर जाकर आशा कार्यकर्ताओं द्वारा बच्चों को विटामिन-ए की खुराक दी जाएगी। सीएमएस डॉ ज्योति मेहरोत्रा ने सभी अभिभावकों से अपील की है कि वे अपने बच्चों को विटामिन-ए की खुराक अवश्य दिलवाएं और अपने नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र या आंगनवाड़ी केंद्र से संपर्क करें। जिससे बच्चों का भविष्य सुरक्षित होगा और वह कई बीमारियों से बच सकेंगे। यह खुराक बच्चों को निःशुल्क दी जाती है और यह पूरी तरह सुरक्षित है। जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डॉ. रवि मोहन गुप्ता ने बताया कि यह अभियान 9 जुलाई से 9 अगस्त तक चलाया जाएगा, इसके लिए समस्त तैयारी पहले से ही पूर्ण कर ली गई हैं। इस दौरान डब्ल्यूएचओ एसएमओ डॉ. विकास सिंह, डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर चाई मुकेश चौहान सहित जिला महिला चिकित्सालय और डीआईओ कार्यालय के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

जमीनी विवाद में मारपीट कर जेठ की हत्या करने का आरोप, पीड़िता ने दी तहरीर

त्रिलोकपुर थाना क्षेत्र के पिपरा कानूनगो गांव का मामला

सिद्धार्थनगर। त्रिलोकपुर थाना क्षेत्र के पिपरा कानूनगो गांव में एक महिला ने जमीनी विवाद को लेकर गांव के ही कुछ लोगों पर मारपीट और हत्या का आरोप लगाया है। पीड़िता फूलमती पत्नी शिवपूजन ने थाने में तहरीर देकर बताया कि गुरुवार सुबह करीब 10 बजे उनके आबादी की जमीन पर गांव के कुछ लोग जबरन मकान निर्माण कर रहे थे। जब उन्होंने इसका विरोध किया तो आरोपितों ने उनके साथ मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान उनके सिर और पैर में गंभीर चोटें आई।फूलमती का कहना है कि वह किसी तरह भागकर थाने पहुंचीं, जहां प्रारंभिक रूप से समझौता हुआ। लेकिन जब वह घर लौटीं, तो देखा कि उनके जेठ कल्लू (65) पुत्र गंगाराम की उन्हीं लोगों ने मारपीट कर हत्या कर दी है।पीड़िता ने मामले में नामजद आरोपियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की है। इस संबंध में थानाध्यक्ष विपिन कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर प्राप्त हुई है और मामले की जांच की जा रही है।

लखनऊ मंडल सी. ए.फाइनल परीक्षा में पंचम स्थान प्राप्त कर बढ़ाया जिले का मान

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर- खीरी की बेटी अनुष्का ने लखनऊ मंडल में सीए फाइनल में हासिल की पांचवीं रैंक, डीएम ने किया सम्मानित।गोला तहसील के कालीचरनपुर गांव की बेटी अनुष्का वर्मा ने चार्टर्ड अकाउंटेंसी (सीए) फाइनल परीक्षा में लखनऊ मंडल स्तर पर पांचवां स्थान हासिल कर पूरे जिले को गौरवान्वित किया है। बुधवार को कलेक्ट्रेट में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने अनुष्का को प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। डीएम ने अनुष्का के साथ उपस्थित उनके दादा शिवनंदन वर्मा और माता आशा कुमारी को भी माला पहनाकर सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया।

डीएम बोलीं, अनुष्का पूरे जिले की प्रेरणा

कार्यक्रम में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने कहा कि परीक्षा पास कर अनुष्का सिर्फ सीए नहीं बनी, वह आज पूरे जिले के लिए एक प्रेरणा बन गई है। उसकी सफलता यह साबित करती है कि ग्रामीण क्षेत्र की बेटियां भी राष्ट्रीय स्तर पर झंडे गाड़ सकती हैं। अनुष्का की मेहनत, उसके परिवार का समर्पण और शिक्षा के प्रति उसका समर्पण, जिले की असली ताकत है। ये केवल एक रैंक नहीं, बल्कि आने वाले समय की नींव है।

परिवार की आंखों में गर्व के आंसू

सम्मान पाते वक्त मंच पर भावुक माहौल देखने को मिला। दादा शिवनंदन वर्मा ने भावुक होते हुए कहा कि बेटी की मेहनत रंग लाई। आज गांव से लेकर शहर और पूरे जिले में नाम हुआ है।

जन्मदिन पार्टी से लौटते समय करेंट की चपेट में आने से युवक की मौत

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। भवानीगंज थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत भड़रिया के टोला लालपुर से एक दिल को दहला देनी वाली घटना सामने आई है,जहां एक परिवार का हस्ता मुस्कराता चेहरा अब इस दुनिया में नहीं रहा और वह इस दुनिया को हमेशा के लिये छोड़कर चला गया। लालपुर गांव निवासी हरिहर कश्यप के 32 वर्षीय इकलौते पुत्र राहुल कश्यप का बीती बुधवार की रात्रि लगभग 11 बजे के आसपास करेंट की चपेट में आने से मौत हो गया।जानकारी के अनुसार मृतक राहुल कश्यप उक्त गांव निवासी ऐनुल्लाह के घर जन्म दिन पार्टी में शामिल होने के बाद अपने घर आये परिजनों ने बताया कि घर पर खाना खाया और फिर वह अपने नये घर पर चले गये,जहां करेंट की चपेट में आ गये।मृतक राहुल के पिता भी उसी घर पर सोये थे उन्होंने बताया कि जबतक मैं उठता तबतक वह जमीन पर गिर पड़े।थोड़ी देर में आसपास के लोगों की भारी भीड़ मौके पर इकट्ठा हो गई,आनन फानन में परिजन उन्हें बेंवा अस्पताल ले गये जहां डाक्टरों ने उन्हें मृत्यु घोषित कर दिया।मृतक राहुल अपने पिता का इकलौता पुत्र व तीन बहनों का इकलौता भाई था।घटना से आहत मृतक राहुल की पत्नी सहित परिजनों का रोकर बुरा हाल था।राहुल के एक 9 माह का बेटा हरिअंश है जिसके दिल में सुराख हो जाने के कारण मृतक राहुल उसका इलाज करा रहा था।अब उस मासूम के सिर से पिता का शाया उठ गया,घर के इकलौते चिराग के बुझ जाने से परिजनों पर ग़मों का पहाड़ टूट पड़ा है।राहुल बहुत ही मिलनसार व हसमुख थे जिनके मृत्यु की खबर से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई ।घटना की जानकारी होते ही हर कोई उनके घर पहुंच परिजनों को संतावना दे रहा था घटना से हर किसी की आंखें नम है।

थाना सरायममरेज पुलिस टीम द्वारा 01 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। पुलिस आयुक्त व अपर पुलिस आयुक्त के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस उपायुक्त गंगानगर व अपर पुलिस उपायुक्त गंगानगर के कुशल पर्यवेक्षण में व सहायक पुलिस आयुक्त हण्डिया के कुशल नेतृत्व में गंगानगर-जोन के थाना सरायममरेज पर पंजीकृत मु0अ0सं0-111/2025 धारा-190/ 191(2)/191(3)/115(2)/ 352/351(2)/74/109(1) में वांछित अभियुक्त लालजी पुत्र अमृतलाल निवासी ग्राम महरछा थाना सरायममरेज कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना सरायममरेज पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक-10.07.2025 को थाना सरायममरेज क्षेत्रान्तर्गत ग्राम महरछा के पास से गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी।

उल्लेखनीय है कि दिनांक-30.05.2025 को थाना सरायममरेज क्षेत्रान्तर्गत ग्राम महरक्षा में उपरोक्त अभियुक्त द्वारा अपने परिजनों के साथ मिलकर पुरानी रंजिश को लेकर मुकदमा वादी के घर में घुस कर परिवारजनों के साथ लाठी-डण्डों आदि से मार-पीट की गयी थी, जिसमें 1. राजू पुत्र संतलाल व 2. शुभम पुत्र संतलाल निवासीगण ग्राम महरक्षा थाना सरायममरेज कमिश्नरेट प्रयागराज के सिर में गम्भीर चोटें आयी थी जिसके सम्बन्ध में थाना सरायममरेज पर मु0अ0सं0-111/2025 उपरोक्त पंजीकृत किया गया था । मुकदमा उपरोक्त से सम्बंधित 01 अभियुक्त को पूर्व में गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा मे भेजा जा चुका है।

थाना थरवई पुलिस टीम द्वारा 01 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार।

थाना थरवई पर पंजीकृत मु0अ0सं0-192/2025 धारा-69/352/351(3) भा0न्या0सं0 से सम्बंधित वांछित अभियुक्त सौरभ पटेल पुत्र नरेन्द्र पटेल निवासी ग्राम रामनगर थाना थरवई कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना थरवई पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक-10.07.2025 को थाना थरवई क्षेत्रान्तर्गत ग्राम पैगम्बरपुर स्थित मनसैता पुल के पास से गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी।

संक्षिप्त खबरें

मजदूरी का पैसा न मिलने पर मजदूरों ने एसपी से लगाई न्याय की गुहार

ऊंज थाना क्षेत्र के मुंगरी गांव का मामला।

भदोही। ऊंज थाना क्षेत्र के मुंगरी गांव के दो दर्जन से अधिक मजदूरों ने बृहस्पतिवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर न्याय की गुहार लगाई है। जानकारी के मुताबिक मुंगरी गांव निवासी ने पुलिस अधीक्षक को दिये पत्र में बताया है कि ऊंज थाना क्षेत्र के अकोढ़ा गांव निवासी अनिल सोनार उर्फ ठेकेदार नामक व्यक्ति दो दर्जन से अधिक व्यक्तियों को सूरत में काम दिलाने के नाम पर ले गया जहां आम की रखवाली और आम तोड़ने का काम करवाया। काम समाप्त हो गया तो बिना मजदूरी दिये गांव भेज दिये और आश्वासन दिये कि कुल मजदूरी गांव में दूंगा। लेकिन गांव में आने पर मजदूरी का पैसा मांगने पर अनिल सोनार और उनके परिवार के लोग गाली और जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। आरोप लगाया कि ऊंज थाने में शिकायत करने पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। मजदूरों ने मजदूरों का पैसा दिलाने तथा आरोपी के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग की हैं।

आगामी श्रावण मेला/कांवड यात्रा 2025 को सकुशल सम्पन्न कराये जाने के दृष्टिगत क्षेत्रान्तर्गत मुख्य कावड़ यात्रा मार्ग का निरीक्षण

भदोही09/10.07.2025 की रात्रि को अभिमन्यु मांगलिक, पुलिस अधीक्षक भदोही, शुभम अग्रवाल अपर पुलिस अधीक्षक भदोही एवं अन्य अधीनस्थ पुलिस अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से आगामी श्रावण मेला/कांवड यात्रा 2025 को सकुशल सम्पन्न कराये जाने एवं कावड़ियों की सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत जनपद भदोही क्षेत्रान्तर्गत मुख्य कावड यात्रा मार्ग(प्रयागराज-भदोही भीटी बॉर्डर से वाराणसी-भदोही बाबूसराय बॉर्डर तक) का निरीक्षण कर समस्त तैयारी पूर्ण कर उचित व्यवस्थापन करने हेतु तथा सुरक्षा व्यवस्था को चाक-चौबन्द करने हेतु सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। इस दौरान यातायात व्यवस्था, ट्रैफिक डायवर्जन प्वाइंट, कांवड शिविरों एवं वाहन पार्किंग के लिए चिन्हित स्थानों, बैरिकेटिंग व्यवस्था, कांवड़ मार्ग पर लगाये जा रहे चेतावनी/सांकेतिक बोर्ड एवं मेडिकल कैम्प के लिए चिन्हित स्थानों का निरीक्षण किया गया।

प्राथमिक विद्यालय चककुसही में आयोजित हुआ पुस्तक वितरण समारोह

सुरियावां के प्राथमिक विद्यालय चककुसही में बच्चों को पुस्तकें बाटी गई। मुफ्त पुस्तकें पाकर बच्चों के चेहरे खिल गए। प्राथमिक विद्यालय चककुसही में प्रधानाध्यापक वेद प्रकाश व ग्राम प्रधान दिनेश कुमार ने बच्चों को पुस्तक वितरण किया। प्राथमिक विद्यालय चककुसही की एसएमसी उपाध्यक्ष फूलपती देवी और सदस्य किरण चौहान ने भी बच्चों में पुस्तकें बांटीं। इसके साथ ही विद्यालय सेवित क्षेत्र में स्कूल चलो अभियान रैली एवम संचारी रोग जागरूकता अभियान रैली निकाली गयी। इस दौरान विद्यालय के अध्यापक प्रशान्त कुमार देवेन्द्र कुमार पांडेय, एनम प्रियंका सरोज, एसएमसी उपाध्यक्ष फूलपती देवी, सदस्य किरण देवी, लालता प्रसाद, शीतला चौहान के साथ अन्य गणमान्य अभिभावक उपस्थित रहे।

अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का महा महोत्सव है गुरु पूर्णिमा- श्री राजरज महाराज जी

सम दिवसीय श्रीमद भागवत कथा का यज्ञ एवं भंडारे के साथ हुआ समापन

चुनार मिर्जापुर। गुरुवार को नगर स्थित राजरतन लॉन में गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर आयोजित सात दिवसीय श्रीमद् भागवत गीता कथा एवं भक्ति यज्ञ का का समापन हवन यज्ञ के साथ हुआ। वृंदावन से पधारे श्री राजरस महाराज जी ने कहा कि अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का महा महोत्सव है गुरु पूर्णिमा।इस दौरान सत्यम,गिरिजा,कैलाश,काजू सोनकर सहित बड़ी संख्या में महिला पुरुष श्रद्धालु उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी के मार्गदर्शन में जनपद के सभी विभागों में आयोजित हुआ जनसंवाद दिवस

● जनसंवाद दिवस पर 298 असंतुष्ट शिकायतकर्ताओं को सुनते हुए 175 का किया गया प्रभावी निस्तारण

स्वतंत्र प्रभात

भदोही 10 जुलाई 2025 -जिलाधिकारी शैलेष कुमार द्वारा जनशिकायतों का समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने की दिशा में प्रत्येक बृहस्पतिवार ''जनसंवाद दिवस'' (विभागवार समस्या निस्तारण हेतु विशेष दिवस) का आज सभी विभागों द्वारा आयोजन कर शिकायतों का प्रभावी निस्तारण किया गया। जिलाधिकारी शैलेष कुमार के निर्देश के क्रम में अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) कुंवर वीरेन्द्र मौर्य की देख रेख में समन्वित शिकायत निवारण प्रणाली आइजीआरएस व अन्य शिकायती पोर्टल पर लम्बित वादों के निस्तारण के सम्बन्ध में असंतुष्ट फीडबैक वाले शिकायतों पर प्रभावी कार्रवाई कर त्वरित निस्तारण किया किया। संबंधित विभागीय अधिकारियों ने अपने विभाग में जनसंवाद दिवस का आयोजन कर बताया कि मा. मुख्यमंत्री शिकायत पटल एवं अन्य पटल पर प्राप्त शिकायतों में असंतोषजनक फीडबैक शिकायतों का आज त्वरित व गुणवत्तापूर्ण समाधान किया गया।

जिलाधिकारी द्वारा आईजीआरएस सहित सभी शिकायतों का त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश के अनुपालन में प्रत्येक बृहस्पतिवार ''जन संवाद दिवस'' में असंतुष्ट फीडबैक में से आज 298 शिकायतों का लगभग सभी कार्यालयाध्यक्षों द्वारा असंतुष्ट शिकायतकर्ताओं व अन्य रिपीटेड/डिफाल्टर/ सी श्रेणी के शिकायतकर्ताओं से स्वयं एवं अधीनस्थ के द्वारा सुनवाई किया गया तथा मौके पर 175 शिकायतों का गुणवत्ता परक त्वरित निस्तारण किया गया। शेष असंतुष्ट शिकायतों का विभागीय गठित कमेटी द्वारा निस्तारण किए जाने के क्रम में आवश्यक कार्यवाही की गयी। जो असंतुष्ट शिकायत कर्ता सम्बन्धित कार्यालय नही पहुँच पाये है वे अपनी शिकायते अगले जनसंवाद दिवस में सम्बन्धित विभागीय कार्यालय पर उपस्थित होकर अवगत करायें।

जिलाधिकारी ने कहा कि जन सुनवाई पोर्टल पर प्राप्त जन शिकायतों का समयबद्ध गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता में है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री संदर्भ, जिलाधिकारी संदर्भ जनसुनवाई पोर्टल पर कोई शिकायत लंबित रहती है तो संबंधित विभाग के प्रति यह माना जाएगा कि वह अपनी कार्यशैली में कोई परिवर्तन नहीं कर रहा है उसके प्रति फिर विभागीय कार्यवाही तय है। जिलाधिकारी ने सभी विभागाध्यक्षों को सख्त निर्देश दिया कि किसी भी विभाग का कोई मामला डिफाल्टर, सी श्रेणी, रीपिटेड न हो, इस सन्दर्भ में लापरवाही व शिथिलता बरतने पर कड़ी कार्यवाही करते हुए उनके खिलाफ शासन को पत्र प्रेषित कर दिया जाएगा। ''जनसंवाद दिवस''/विभागवार समस्या निस्तारण हेतु विशेष दिवस पर पुलिस अधीक्षक, अपर पुलिस अधीक्षक, पुलिस उपाधीक्षक कार्यालय,जिला पूर्ति अधिकारी कार्यालय, जिला कार्यक्रम अधिकारी कार्यालय, विद्युत कार्यालय भदोही, जिला बेसिक अधिकारी कार्यालय सहित समस्त थानें, तहसील, विकास खण्ड ,अधिशाषी अधिकारी कार्यालय सहित सभी विभागों द्वारा असंतुष्ट शिकायतों के संतुष्टि परक निस्तारण पर बल दिया गया।

ग्राम पंचायत में पड़ा है आधा अधूरा आवास नहीं हुआ पूर्ण कौन है जिम्मेदार

स्वतंत्र प्रभात

हलिया मिर्जापुर। हलिया विकास खण्ड के ग्राम पंचायत बरगढ़ा मे आधा अधूरा पड़ा है आवास कौन है जिम्मेदार ग्रामीणों ने बताया कि हम सब अनपढ़ हैं पढ़े लिखे हैं नहीं ग्राम प्रधान के द्वारा आवास बनवाने के नाम पर ले लिया गया पैसा और आवास नहीं बनवाया गया जिससे आधा अधूरा आवास पड़ा है और प्रती आवास के लाभार्थियों से ?10000 भी ग्राम प्रधान के द्वारा लिया गया है यहां तक की आवास सत्यापन के नाम पर भी ग्राम प्रधान के द्वारा ?500 प्रति आवास लिया गया है ग्राम प्रधानों की वसूली की सिलसिला नहीं बंद हो रही है जबकि सरकार लाभार्थियों के खाते में पैसा दे रही है लेकिन फिर भी आवास के लाभार्थियों से ग्राम प्रधान और उनके चहेते के द्वारा पैसा वसूल लिया जाता है ग्रामीणों ने जिला प्रशासन का ध्यान आकर्षित कराते हुए बताया कि जो सरकार का पेमेंट आया था सब ग्राम प्रधान हजम करके बैठ गए ऐसे भ्रष्ट ग्राम प्रधान के ऊपर जिला प्रशासन कार्रवाई करें जिससे गरीब परिवार के साथ इस तरीके की हरकत ग्राम प्रधान ना करें।

गुरु शिष्य परंपरा का उत्सव है गुरु पूर्णिमा

स्वतंत्र प्रभात

चुनार मिर्जापुर। गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर गुरुवार को श्री परमहंस आश्रम सक्तेशगढ़ चुनार में भव्यता और कृतज्ञता से स्रोत है सतगुरुदेव भगवान की आनंद को अनुभूति से भक्ति सरोवर है सत्य की खोज के पद पर चलकर स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज ईश्वर के स्वरूप बन गए हैं कल्याण की मंगल कामना से लाखों भक्तों के मार्गदर्शन में भक्त का कल्याण कर रहे हैं। 23 वर्ष की आयु में पूज्य महाराज जी सत्य की खोज में परमहंस जी के पास आ गए थे ज्ञात हो कि परमानंद जी का आश्रम चित्रकूट में अनसूइया सतना मध्य प्रदेश में जंगली जानवरों के बीच था। सिद्ध ऋषि ने बताया जाता है कि परमहंस जी को स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज के आने की सूचना कई साल पहले ही प्राप्त हो गई थी स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज ने श्री भागवत गीता पर आधारित एक ग्रंथ यथार्थ गीता की रचना की है जो काफी लोकप्रिय है बता दे कि गुरु पूर्णिमा जिसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है भारतीय संस्कृत में एक महत्वपूर्ण पर्व है जो गुरु के प्रति सम्मान और कृतज्ञता करने के लिए मनाया जाता है गुरु पूर्णिमा गुरु शिष्य परंपरा का उत्सव है जो ज्ञान और मार्गदर्शन के महत्व को दर्शाता है गुरु पूर्णिमा गुरु और शिष्य के बीच के पवित्र बंधन का प्रतीक है यह दिन गुरु के प्रति सम्मान और कृतज्ञता प्राप्त करने का है जिन्होंने ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करके जीवन को संदेश बनाता है।गुरु आज्ञन के अंधकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश की ओर ले जाता है।और उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में मदद करते हैं गुरु पूर्णिमा आध्यात्मिक विकास का भी पर्व है गुरु शिष्यों को आत्म सत्कार और मुक्ति के मार्ग पर ले जाते हैं गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु की शिष्य पूजा करते हैं उनके चरणों में पुष्प अर्पित करते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं गुरु पूर्णिमा के सदुरु सभी दुखों को नष्ट कर देते हैं लोग ज्ञान और शिक्षा को फैलाने का भी संकल्प लेते हैं गुरु पूर्णिमा के दिन योगदान करते हैं और पूर्ण के कार्य करते हैं सतगुरु सत्य का मार्ग दिखाते हैं और अज्ञानता को दूर करते हैं सतगुरु एक माध्यम का प्रतीक होता है जो ईश्वर की ओर से ले जाता है सतगुरु से आध्यात्मिक ज्ञान अनुभव के मामले में बहुत आगे होते हैं और मोक्ष प्राप्त करने में मदद करते हैं। सद्गुरु भगवान का अवतार होते हैं सद्गुरु स्वामी सभी बुराइयों को त्यागने और भक्ति करने की शिक्षा देते हैं सद्गुरु सभी दुखों को नष्ट कर सकते हैं और अपने भक्तों की खुशियां दे सकते हैं सतगुरु हमें भक्ति भाव वादी दुनिया से बचने में मुक्त करने के लिए आते हैं और धर्म मुख्य प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर जयगुरुदेव आश्रम पर जुटे प्रेमी,विधिवत मनाई गुरु पूर्णिमा

स्वतंत्र प्रभात

भदोही गुरुवार 10 जुलाई 2025 को गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर जनपद भदोही के विभिन्न स्थानों से आए सत्संगी प्रेमियों ने जयगुरुदेव आश्रम चकपड़ौना पर गुरु महाराज का विधिवत पूजन,सत्संग व उसके उपरांत भोजन प्रसाद वितरण किया।जनपद के सत्संगी प्रेमी प्रातः ही आश्रम पहुंचकर प्रांगण में स्थित मंदिर की साफ-सफाई में लग गए ततपश्चात प्रेमियों के एकत्रीकरण पर संस्थाध्यक्ष श्रद्धेय पंकज जी महाराज के निर्देशानुसार शब्द स्वरूप परम संत बाबा जयगुरुदेव जी महाराज की अमरवाणियों को सत्संगी जनों को सुनाया गया और उसे जीवन में अनुकरण करने हेतु कहा गया।जनपद अध्यक्ष श्री प्रेमशंकर मौर्य के मथुरा कार्यक्रम में जाने के कारण कार्यक्रम का संयोजन जगन्नाथ मौर्य और जयकुमार ने किया।उपस्थित प्रेमियों को डॉ.विजय श्रीवास्तव ने सम्बोधित करते हुए बताया कि- गुरु पूर्णिमा के पर्व का आदिकाल से ही महात्म्य रहा है इसी पुनीत दिन आदिगुरु परमेश्वर शिव ने ऋषिमुनियों को शिवज्ञान प्रदान किया था व महर्षि वेद व्यास का जन्म हुआ था।

गुरु शब्द का संस्कृत में अर्थ होता है -अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना। गुरु के महात्म्य को ऋषि मुनियों ने वर्णित किया है-

चिंतामणिर्लोकसुखं सुरद्रु- स्वर्गसम्पदम्।
प्रयच्छति गुरु- प्रीतो वैकुण्ठं योगिदुर्लभम्।।

अर्थात किसी व्यक्ति को चिंतामणि मिल जाए तो स्वर्ग के सभी सुख मिल जाते हैं, पर यदि गुरु प्राप्त हो जाए तो उसे वैकुंठ प्राप्त हो जाता है, जो योगियों को भी दुर्लभ है।

रामचरितमानस में गोस्वामीजी ने भी कहा है-

गुरु बिन भव निधि तरइ न कोई।
जौं बिरंचि संकर सम होई।।

अर्थात गुरु के बिना कोई भवसागर नहीं तर सकता, चाहे वह ब्रह्मा जी और शंकर जी के समान ही क्यों न हो। जिस ज्ञान की प्राप्ति के बाद मोह उत्पन्न न हो, दुखों का शमन हो जाए तथा परब्रह्म अर्थात स्वयं के स्वरूप की अनुभूति हो जाए, ऐसा ज्ञान गुरु कृपा से ही प्राप्त हो सकता है। इसीलिए कहा जाता है कि-

"ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति- पूजामूलं गुरोः पदम्,मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरो- कृपा"

गुरु जीव को सांसारिक माया,मोह के बंधनों मुक्त कर मोक्ष की प्राप्ति कराते हैं;चराचर जगत में दो प्रकार की विद्याएं हैं- परा विद्या और अपरा विद्या। इन्हें ही उपनिषदों में श्रेय तथा प्रेय के नाम से जानते हैं। जो परा-अपरा विद्या का ज्ञान कराकर शिष्य को मोक्ष प्राप्त करा दे, ऐसा महान गुरु दुर्लभ है यदि ऐसा गुरु प्राप्त हो जावे तो जीव 84 लाख योनियों के जंजाल से मुक्त हो जावे इसलिए पूर्ण और समर्थ गुरु की तलाश करना ही मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिए और गुरु मिलने पर गुरु के बताए रास्ते पर चलकर भवसागर से पार पा लेने में ही मनुष्य जन्म प्राप्त करने की सार्थकता सिद्ध हो सकती है। सत्संग कार्यक्रम के दौरान कई प्रेमीजन उपस्थित रहे जिनमें छोटेलाल कैशियर, इंद्रजीत, बबलू यादव, डॉ कृपा, जगदीश चन्द्र श्रीवास्तव, अंकित मालवीय, शंकर, अभिनन्दन, कृतिका, निधि आदि रहे।

सांसे हो रही है कम आओ वृक्ष लगाए हम जिला उपाध्यक्ष विपुल सिंह

● जनसंवाद दिवस पर 298 असंतुष्ट शिकायतकर्ताओं को सुनते हुए 175 का किया गया प्रभावी निस्तारण

स्वतंत्र प्रभात

हलिया, मिर्जापुर। लालगंज विकासखंड के ग्राम पंचायत अतरैला राजा गाव मे बुधवार को 37 करोड़ वृक्षारोपण महा अभियान 2025 के तहत भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष व ग्राम प्रधान अतरैला राजा डॉक्टर महानारायण भारती के द्वारा एक पेड़ मां के नाम फलदार वृक्ष आम का लगाया गया। पौधा लगाने के दौरान भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष विपुल सिंह ने बताया कि वृक्ष को सुरक्षित रखें सांसे हो रही है कम ऑक्सीजन वृक्ष से ही मिलता है हर वर्ष कुछ न कुछ वृक्षारोपण करना चाहिए वृक्षारोपण करने से शरीर को ऑक्सीजन मिलता है जिससे हम सब मिलकर हर वर्ष एक पौधा मां के नाम जरूर लगाए। ग्राम प्रधान डॉक्टर महानारायण भारती ने बताया कि आई स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण सृजित करने हेतु बृहद वृक्षारोपण अभियान में प्रतिभा कर अधिक से अधिक पौधे आरोपित करें। इस मौके अनिरुद्ध तिवारी सचिव सतेन्द्र मिश्रा तकनिकी सहाय राजीव यादव ब्रिज लाल सत्यनारायण पचायत सहायक सहित मनरेगा मजदूर ग्रामीण मौजूद रहे।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया रक्षा मंत्री का जन्म दिन

स्वतंत्र प्रभात

सीखड़। देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का 75जन्मदिन उनके भांजे चन्द्र शेखर सिंह के मिसिरपुरा आवास पर धूमधाम से मनाया गया। हर वर्ष उनका जन्म दिन मनाते चलें आ रहे उनके भांजे चन्द्र शेखर सिंह ने कहा कि देश के यशस्वी रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का आज 75 जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। रक्षा मंत्री का मिसिरपुरा से ढेर सारी यादें जुड़ी हैं। मीरजापुर जनपद उनका कर्मस्थली क्षेत्र रहा है। उन्होंने कहा कि बचपन से ही रक्षा मंत्री में देश प्रेम,देश भक्ति कूट कूट कर भरा था जो आज पूरा देश देख रहा है। रक्षा मंत्री में शुरूसे ही संघर्षशील, कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदारी और देश प्रेम की भावना देखने को मिलती है, जो हम लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत है। ऐसे यशस्वी रक्षा मंत्री को भगवान स्वस्थ, दीर्घायु रखें यही कामना करता हूं। भाजपा के वरिष्ठ युवा नेता आलोक सिंह ने कहा कि देश के रक्षा मंत्री का जन्म दिन यादगार बनाने के लिए एक पीपल का वृक्ष व एक फलदार आम का वृक्ष लगाया गया। उपस्थित भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा केक काट कर व मिष्ठान वितरण कर हर्षोल्लास के साथ रक्षा मंत्री का जन्म दिन मनाया। उक्त अवसर पर श्यामधर चतुर्वेदी, चंद्रहास गुप्ता,बबलू शुक्ला, शुभम पाठक, भाजपा मंडल अध्यक्ष विजय भारद्वाज, नीरज सिंह, मानवीर, आशीष पाठक, अवशेष सिंह, हेमंत मिश्रा सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर तीन कुंडिय यज्ञ का हुआ आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

चुनार मिर्जापुर। नगर के बालूघाट स्थित गायत्री मंदिर में गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गायत्री परिवार द्वारा तीन कुंडिय यज्ञ का का आयोजन किया गया। जिसमें गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ जन कल्याण के लिए हवन किया गया। तत्पश्चात प्रसाद वितरण किया गया।

इस अवसर पर केवला शंकर, महेंद्र गुप्ता, विनोद शर्मा, बाबू नन्दन सिंह, लवकुश गुप्ता, कुबेर केशरी, कृष्णकुमार गुप्ता, बिंद्रा प्रसाद गुप्ता, भोला नाथ वर्मा, भरत कुमार जौहरी, दीप कुमार अग्रवाल, सुनील कुमार चक्रवाल, संतोष कुमार, माखन लाल पटवा, श्यामनाथ कुशवाहा, विपत, रामशंकर पांडेय, आलोक साहनी, बीरबल, दीना नाथ गुप्ता, पारस नाथ श्रीवास्तव, कौशलेश गुप्ता, संजय कुमार गुप्ता सहित बड़ी संख्या में महिला पुरुष श्रद्धालु उपस्थित रहे।

जिला स्तरीय जूनियर बालिका कबड्डी एवं हाकी बालक प्रतियोगिता का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

भदोही। जिला स्तरीय जूनियर बालिका कबड्डी एवं हाकी बालक प्रतियोगिता का आयोजन आज दिनांक 10 जुलाई 2025 को स्पोर्ट्स स्टेडियम मुसीलाटपुर भदोही में आयोजित हुई कबड्डी एवं हाकी प्रतियोगिता में कुल छः छः टीमों ने प्रतिभाग किया हाकी प्रतियोगिता का पहला मैच पार्वती पब्लिक स्कूल ज्ञानपुर एवं कंपोजिट विद्यालय अमिलोरी भदोही के मध्य खेला गया जिसमें कंपोजिट विद्यालय एक गोल कर विजई रही। दूसरा मैच उच्च प्राथमिक विद्यालय फ़तूपुर भदोही एवं स्टेडियम बी के मध्य खेला गया जिसमें उच्च प्राथमिक विद्यालय फ़तूपुर दो एक से विजई हुई। तीसरा मैच स्टेडियम ए एवं कंपोजिट विद्यालय के मध्य खेला गया जिसमें स्टेडियम ए दो जीरो से विजई हुई। प्रतियोगिता का चौथा मैच राज एकेडमी भदोही एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय फ़तूपुर भदोही के मध्य खेला गया जिसमें उच्च प्राथमिक विद्यालय फ़तूपुर भदोही तीन दो से विजई हुई। प्रतियोगिता का फाइनल मैच स्टेडियम ए बनाम उच्च प्राथमिक विद्यालय फ़तूपुर भदोही के मध्य खेला गया जिसमें स्टेडियम ए दो एक से विजई होकर प्रतियोगिता का फाइनल मैच अपने नाम किया। वहीं कबड्डी बालिका प्रतियोगिता का पहला मैच नेशनल भदोही एवं गोपीगंज के मध्य खेला गया जिसमें गोपीगंज 18-06 से विजई रही। दूसरा मैच राज एकेडमी एवं वुडवर्ड पब्लिक स्कूल भदोही के मध्य खेला गया जिसमें वुडवर्ड पब्लिक स्कूल 09-03 से विजई हुई। प्रतियोगिता का पहला सेमीफाइनल मैच स्टेडियम और गोपीगंज के मध्य खेला गया जिसमें स्टेडियम 39-35 से विजई रही। दूसरा सेमीफाइनल में चौरी भदोही एवं वुडवर्ड पब्लिक स्कूल भदोही मध्य खेला गया जिसमें 24-15 से विजई रही। प्रतियोगिता का फाइनल मैच स्टेडियम एवं वुडवर्ड के मध्य खेला गया जिसमें स्टेडियम 26-98 से विजई होकर प्रतियोगिता का फाइनल मैच अपने नाम किया। प्रतियोगिता का उद्घाटन एवं समापन तथा पुरस्कार वितरण के मुख्य अतिथि श्री मुसीलाट बिना विश्व पदक विजेता एवं श्री अशोक कुमार गुप्ता राष्ट्रपति अवॉर्डी के द्वारा किया गया। हाकी निर्णायक की भूमिका में मुनव्वर हुसैन, रमेश गौतम, संजय गौतम, विकास बिंद, अमन गौतम, विकास पाल, आशीष बिंद, विनय चौरसिया, एवं कबड्डी में अंतेश मिश्रा, श्वेता पटेल, दीपक पाल, प्रिंस मिश्रा, शिव कुमार, अजय यादव एवं आदि लोगों ने निभाई। अंत में श्री धर्मेंद्र कुमार उप क्रीड़ाधिकारी भदोही द्वारा मुख्य अतिथि का आभार प्रकट करते हुए खिलाड़ियों को आशीर्वाद एवं उपस्थित सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कल दिनांक 11 जुलाई 2025 को प्रातः 9:00 बजे से हैंडबॉल बालक एवं कुश्ती बालक का प्रतियोगिता आयोजन किया जाएगा।

अभिमन्यु मांगलिक, पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा प्रतिदिन की भांति जनता दर्शन में आए फरियादियों की सुनी गई समस्याएं

● प्राप्त जन शिकायतों के त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु सम्बन्धित को दिए गए आवश्यक दिशा-निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

भदोही प्रतिदिन की जा रही जनसुनवाई के क्रम में आज दिनांक-10.07.2025 को अभिमन्यु मांगलिक, पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा पुलिस कार्यालय पर जनता दर्शन में आये फरियादियों की समस्याएं/शिकायतों को सुना गया। जनसुनवाई के दौरान प्राप्त शिकायतों के शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु सम्बन्धित को आदेशित किया गया। महोदय द्वारा सभी थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया कि जनसुनवाई/महिला हेल्पडेस्क को और अधिक प्रभावशाली बनाये ताकि पीड़ित/शिकायतकर्ता को अनावश्यक रुप से अपने थाने से पुलिस कार्यालय आने की आवश्यकता न हो। साथ ही जिस समस्या का समाधान थाना स्तर से हो सकता है उनका समाधान थाना स्तर पर ही समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर कराना सुनिश्चित करें। इसी क्रम में जनपद के समस्त राजपत्रित अधिकारीगण व थाना प्रभारियों द्वारा कार्यालय/थाना पर जनसुनवाई करते हुए प्राप्त जन शिकायतों का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित कराया जा रहा है।

संक्षिप्त खबरें

बार एसोशिएशन तहसील कोराव के मीडिया प्रभारी बने सुनील कुमार पाण्डेय

कोरांव प्रयागराज। बार एसोशिएशन तहसील कोराव के बार एसोशिएशन की तरफ से पूर्व ऑडिटर सुनील कुमार पाण्डेय एडवोकेट को मीडिया प्रभारी नियुक्त करते हुए बार अध्यक्ष ने शुभकामनाएं दीं। बता दे कि समाचार पत्र में उत्कृष्ट कार्य से प्रभावित होते हुए बार एसोशिएशन तहसील कोराव के अध्यक्ष रामबहादुर सिंह एवं मंत्री लक्ष्मीकांत शुक्ल ने पूर्व ऑडिटर सुनील कुमार पाण्डेय को बार एसोशिएशन तहसील कोराव का मीडिया प्रभारी नियुक्त किया है इस दौरान उपजिलाधिकारी संदीप तिवारी, तहसीलदार विनय बरनवाल, नायब तहसीलदार, डईया राममूर्ति, नायब तहसीलदार बड़ोखर रणविजय सिंह, कोषाध्यक्ष धर्मेंद्र तिवारी, वरिष्ठ अधिवक्ता बालगोविंद पाण्डेय, रवींद्र नाथ मिश्रा, अरुण मिश्रा बाबा, ललन कुमार तिवारी, श्री प्रकाश श्रीवास्तव, श्याम सुन्दर तिवारी, योगेंद्र नाथ द्विवेदी, विनीत मिश्रा, कौशलेश तिवारी, श्याम मिश्रा, निशा श्रीवास्तव, विद्यानंद वर्मा, निपेंद्र मिश्र, रवि प्रकाश तिवारी, रजनीश मिश्रा,शिवानंद मिश्रा,मणि शंकर शर्मा, यादवेंद्र अहीर, भास्कर यादव, विवेक गौतम आदि अधिवक्ताओं ने बधाई दी।

आशा मिश्रा बनी जिला महामंत्री

गोंडा। कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के अनुमोदन पर जिला अध्यक्ष पूर्व विधायक राम प्रताप सिंह ने आशा मिश्रा निवासी पथवलिया पोर्टरगंज गोन्डा को जिला महामंत्री/प्रभारी विधि प्रकोष्ठ बनाए जाने पर खुशी की लहर दौड़ गई है। आशा मिश्रा को बधाई देने वालों में जिलाध्यक्ष पूर्व विधायक राम प्रताप सिंह, डिम्पल सिंह,बेबी मिश्रा,सैयद महबूब अहमद एडवोकेट, यावर अब्बास एडवोकेट, आरिफ रजा एडवोकेट, जमील खान एडवोक, नसीम खान एडवोकेट, अशोक दुबे एडवोकेट, सच्चिदानंद मिश्रा एडवोकेट, गिरवर चतुर्वेदी एडवोकेट, प्रदुमन शुक्ला एडवोकेट, शादाब खान एडवोकेट, कुतुबुद्दीन डायमंड, अभिषेक तिवारी, डॉ अब्दुस्सलाम, हाजी जैनुल आब्दीन, सगीर खान, अशफाक अहमद, निशा खातून, शाहिदा अंजुम, आरिफ अली कुरैशी, राजू सेवादल, हरिराम, अजय कुमार रस्तोगी, भगौती सोनी, केटी तिवारी सहित अनेकों ने बधाइयां दी है।

नल में करेंट उतरने से एक युवक की हुई मौत

सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ बढ़नी हाइवे मार्ग पर तहसील परिसर के बगल नवनिर्मित मकान के पास नल में करेंट प्रवाहित होने से एक युवक की मौत हो गई।मृतक अशोक कुमार (45)पुत्र दुखहरन शोहरतगढ़ थाना क्षेत्र के नारायनपुर गांव का रहने वाला था। गांव वालों ने बताया कि वह नशे का आदी था। वह गुरुवार की रात 7 बजे नशा करने के बाद सड़क के पास बन रहे मकान के सामने लगे नल को छुआ कि मोटर में करंट प्रवाहित होने से उसकी दर्दनाक मृत्यु हो गई। वहां से गुजर रहे कुछ लोगों की निगाह पड़ी तो देखा कि एक व्यक्ति का शव पड़ा है।मृतक का शव कुछ देर तक वहां पड़ा रहा।घटना की सूचना मिलते ही स्वजन रोते-रोते वहां पहुंच गये और दहाड़ मारकर रोने लगे। इस संबंध में थानाध्यक्ष विदेश्वरी मणि त्रिपाठी ने बताया कि पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

ओवर टेकिंग मामले में विवाद, घटना के दौरान एक व्यक्ति की डूबने से मौत, शव बरामद

देवरिया। गत 8 जुलाई को मोटर साइकिल एवं कार में ओवरटेकिंग को लेकर हुए विवाद में रोहित विश्वकर्मा निवासी बरियारपुर गायब मिले। इस सम्बन्ध में अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी अरविन्द वर्मा ने बताया कि परिजनों की तहरीर पर केस दर्ज किया गया है। नामित अभियुक्तों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है एवं साक्ष्य संकलन तथा तलाश के क्रम में एसडीआरएफ की टीम एवं गोताखोरो ने रोहित विश्वकर्मा का शव छोटी गण्डक नदी से खोज निकाला है। परिवारीजनों से शव की पहचान करायी गयी है। शव को कब्जे में लेकर रामपुर कारखाना थाने की पुलिस द्वारा पोस्टमार्टम की कार्यवाही करायी जा रही है।

बॉम्बे हाईकोर्ट ने दलित लॉ स्टूडेंट की हिरासत में मौत के बाद एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। बॉम्बे उच्च न्यायालय ने हाल ही में 35 वर्षीय दलित कानून के छात्र सोमनाथ सूर्यवंशी की हिरासत में मौत से संबंधित एक मामले में प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) दर्ज करने का आदेश दिया [विजयाबाई व्यंकट सूर्यवंशी बनाम राज्य एवं अन्य]। सोमनाथ सूर्यवंशी उन लोगों में शामिल हैं जिन्हें नवंबर 2024 में भारत के संविधान की प्रतिकृति को तोड़े जाने के विरोध में गिरफ्तार किया गया था। उनकी मां ने दावा किया कि उनके बेटे को अवैध रूप से गिरफ्तार किया गया और जेल में पुलिस की बर्बरता का सामना करना पड़ा, जिसके कारण 15 दिसंबर, 2024 को उसकी मौत हो गई।दूसरी ओर, पुलिस ने दावा किया कि सूर्यवंशी ने गिरफ्तारी के बाद सीने में दर्द और बेचैनी की शिकायत की थी और उनकी मौत दिल का दौरा पड़ने से हुई थी।

सूर्यवंशी की मां ने अंततः इस मामले में उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया, क्योंकि राज्य के प्राधिकारियों ने उनके बेटे की असामयिक मृत्यु पर आपराधिक मामला दर्ज करने में विफलता दिखाई थी। उन्होंने यह भी दिशा-निर्देश मांगे कि न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा हिरासत में हुई मौतों के मामलों की जांच पूरी करने के बाद अधिकारियों से क्या अपेक्षा की जाती है।

4 जुलाई को जस्टिस विभा वी कंकनवाड़ी और जस्टिस संजय ए देशमुख की बेंच ने कहा कि पुलिस को इस मामले में एफआईआर दर्ज करनी चाहिए थी। ऐसा न किए जाने पर कोर्ट ने अंतरिम आदेश पारित कर एक सप्ताह के भीतर आपराधिक मामला दर्ज करने का निर्देश दिया।

अदालत ने निर्देश दिया, "हम प्रतिवादी नंबर 1 और पुलिस निरीक्षक मोंढा पुलिस स्टेशन, परभणी को याचिकाकर्ता (मृतक व्यक्ति की मां) द्वारा दिए गए 18.12.2024 के शिकायत आवेदन के आधार पर एफआईआर दर्ज करने का निर्देश देने के लिए बाध्य हैं। ऐसी एफआईआर एक सप्ताह की अवधि के भीतर दर्ज की जानी चाहिए और पुलिस अधीक्षक, परभणी को निर्देश दिया जाता है कि वे पुलिस उपाधीक्षक स्तर के पुलिस अधिकारी को जांच सौंपें।"

दरअसल 10 नवंबर 2024 को हिंदू सकल समाज मोर्चा ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों की खबरों के खिलाफ महाराष्ट्र के परभणी में एक प्रदर्शन का आयोजन किया था।इस विरोध प्रदर्शनों के दौरान, एक व्यक्ति ने कथित तौर पर डॉ. बी.आर. अंबेडकर की प्रतिमा के पास रखी भारत के संविधान की प्रतिकृति को तोड़ दिया।इस बर्बरता के कारण 11 नवंबर 2024 को और अधिक विरोध प्रदर्शन हुए। कथित तौर पर विरोध प्रदर्शन हिंसक हो गया, जिसके बाद पुलिस ने घरों पर छापेमारी की और सोमनाथ सूर्यवंशी समेत कई लोगों को हिरासत में लिया। उनकी मां ने दावा किया है कि उनके बेटे को गलत तरीके से गिरफ्तार किया गया और वह संविधान के अपमान के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन का हिस्सा था।उनकी मां ने दावा किया कि गिरफ्तारी के बाद सोमनाथ और अन्य लोगों की बुरी तरह पिटाई की गई।

सोमनाथ की मृत्यु 15 दिसंबर 2024 को न्यायिक हिरासत में हुई थी, पोस्टमॉर्टम में मौत का कारण कई चोटों के कारण सदमे से बताया गया था।परिणामस्वरूप, सोमनाथ की मां ने उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर जेल में अपने बेटे की मौत के लिए जिम्मेदार पुलिस अधिकारियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने के निर्देश देने की मांग की। उन्होंने हिरासत में महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाले पुलिसकर्मियों के खिलाफ कार्रवाई, दोषी अधिकारियों को निलंबित करने और मजिस्ट्रेट द्वारा हिरासत में मौत की जांच पूरी करने के बाद प्रक्रिया के संबंध में दिशानिर्देश जारी करने की भी मांग की।

सोमनाथ की माँ ने दावा किया कि पुलिस ने उन पर परभणी से दूर चुपचाप अंतिम संस्कार करने का दबाव बनाया था। उन्होंने कहा कि पुलिस के खिलाफ़ मामला न उठाने के लिए उन्हें 50 लाख रुपये की पेशकश भी की गई थी। इसलिए उन्होंने हाई कोर्ट से हस्तक्षेप करने का आग्रह किया। उन्होंने दावा किया कि राज्य सरकार उन पुलिसकर्मियों को बचाने की कोशिश कर रही है जो उनके बेटे की मौत के लिए जिम्मेदार हैं। न्यायालय ने कहा कि प्रथम दृष्टया इस मामले में संज्ञेय अपराध सामने आया है और इसलिए पुलिस ललिता कुमारी दिशानिर्देशों के तहत एफआईआर दर्ज करने के लिए बाध्य है।इसलिए, इसने मामले में एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया। इसने कहा कि हिरासत में मौत की जांच में दिशा-निर्देश तैयार करने सहित याचिका में उठाए गए बाकी मुद्दे अभी लंबित हैं। मामले की अगली सुनवाई 30 जुलाई को होगी।

प्रयागराज जंक्शन पर विक्षिप्त का तांडव, रेलवे कर्मी की हत्या, RPF जवान घायल, फिर ट्रेन से कटकर दी जान

● पूर्वा एक्सप्रेस के सामने कूदकर की खुदकुशी, मौत से पहले प्लेटफॉर्म 7/8 पर लोहे की रॉड से हमला

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। बुधवार रात प्रयागराज रेलवे जंक्शन पर दिल दहला देने वाली घटना हुई, जब एक विक्षिप्त व्यक्ति ने अचानक प्लेटफॉर्म नंबर 7/8 पर ड्यूटी कर रहे रेलवे कर्मचारी पर लोहे की रॉड से हमला कर दिया। इस हमले में रेलवे हेल्पर अमित कुमार पटेल (निवासी प्रयागराज) गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना रात करीब 10 बजे की है।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, विक्षिप्त युवक अचानक भागता हुआ आया और अमित पटेल के सिर पर दो-तीन बार लोहे की रॉड से प्रहार किया। उसी समय वहां मौजूद आरपीएफ जवान माधव सिंह (झांसी डाक ड्यूटी पर प्रयागराज आए थे) ने बीचबचाव की कोशिश की, लेकिन वह भी घायल हो गए। घटना के बाद हमलावर विक्षिप्त व्यक्ति प्लेटफॉर्म से दौड़ता हुआ पूर्वा एक्सप्रेस के आगे कूद गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इधर गंभीर रूप से घायल अमित कुमार पटेल को रेलवे अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

वहीं, घायल आरपीएफ जवान माधव सिंह ड्यूटी पूरी कर बुंदेलखंड एक्सप्रेस से झांसी लौट रहे थे, लेकिन नैनी स्टेशन पर उनकी तबीयत बिगड़ने पर उन्हें ट्रेन से उतार लिया गया और इलाज के लिए भेजा गया। रेलवे और सुरक्षा एजेंसियां इस सनसनीखेज घटना की जांच में जुट गई हैं। जंक्शन पर सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल उठ खड़े हुए हैं। आरपीएफ और जीआरपी द्वारा स्टेशन पर लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

टुड़ियार पंप कैनाल के बंद होने से किसानों पर धान रोपाई पर मडराया संकट

● उपजिलाधिकारी ने ग्रामीणों की शिकायत पर जेई को फटकार लगाते हुए शीघ्र चालू कराने का दिया निर्देश।

स्वतंत्र प्रभात

कोरांव प्रयागराज। तहसील कोराव अंतर्गत ग्राम पंचायत टुड़ियार में बेलन नदी पर लगे पंप कैनाल को पिछले छः माह से बंद होने की वजह से कई गावों की धान की खेती पर संकट मडरा रहा है जिसको लेकर ग्रामीणों ने गुरुवार को उपजिलाधिकारी से मुलाकात करते हुए शिकायत दर्ज कराई है।

बताते चले कि इस समय ग्रामीण क्षेत्रों में धान की रोपाई तेजी से चल रही है ग्राम पंचायत टुड़ियार में बेलन नदी पर लगे पंप कैनाल का आलम यह है कि पिछले छः माह से बंद पड़ा है जिससे ग्राम सभा दादर, पोखरदि, चिराव, चंदपुर दादर, द्वटुड़ियार, बड़ोखर की किसानों की धान की रोपाई का कार्य पिछड़ रहा है जिसको लेकर ग्रामीणों ने उपजिलाधिकारी संदीप तिवारी से मुलाकात करते हुए पंप कैनाल को शीघ्र चालू कराने को कहा उपजिधिकारी ने किसानों की समस्या को गंभीरता से लेते हुए जेई से फोन पर वार्ता कर फटकार लगाई और कहा कि हर हालत में शुक्रवार तक पंप कैनाल शुरू हो जाना चाहिए ग्रामीणों में मुख्य रूप से विपुल द्विवेदी, ब्रह्मानंद तिवारी, मोनू मिश्रा,अंकित मिश्रा, रंगलाल गुप्ता, मौजी लाल,आदिवासी अधिवक्ता शशि द्विवेदी, अनूप मिश्रा, बृजेश तिवारी के अलावा आदि ग्रामीण मौजूद रहे।

नवोदित और एन. एस. के. कॉन्वेंट प्रयागराज में भारी उत्साह से मनाई गई गुरु पूर्णिमा

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज गुरुओं के सम्मान में आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाए जाने वाले गुरु पूर्णिमा को नवोदित इंटर कॉलेज और एन.एस.के. कॉन्वेंट में बहुत ही उत्साह के साथ मनाया गया।इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा अपने गुरुओं के सम्मान में वंदन एवं अन्य प्रस्तुतियां दी गई। इस अवसर पर कॉलेज के प्रबंधक संतोष त्रिपाठी द्वारा यह बताया गया कि इस दिन चारों वेदों का ज्ञान देने वाले महर्षि वेदव्यास का जन्मदिन मनाया जाता है क्योंकि उन्होंने ही सर्वप्रथम मानव जाति को चारों वेदों का ज्ञान दिया था।इसी कारण उन्हें प्रथम गुरु भी कहा जाता है । गुरु के महत्व के बारे में बताते हुए यह भी बताया गया की गुरु ही अपने शिष्यों के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर देते हैं बिना गुरु के जीवन पशु के समान होता है अतः हमें अपने गुरुओं का सम्मान के साथ ही उनकी बातों का भी अनुसरण करना चाहिए। इस अवसर पर कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रताप बहादुर सिंह शिक्षक विजय शंकर मिश्र ज्ञानेंद्र मिश्रा अशोक त्रिपाठी संदीप सिंह उत्तम सिंह बघेल दीपक विश्वकर्मा प्रदीप मिश्रा राजेश सिंह कमलाकर सिंह पुष्पराज सिंह एलन वर्मा सोमेश शुक्ला रावेंद्र शिवेंद्र सिंह कामिनी सिंह अनीता सिंह अर्चना सिंह सोनाली पांडे माया सिंह प्रतिमा सिंह हीरा आदि समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

कैंब्रिज हाईस्कूल एण्ड कॉलेज में हर्षोल्लास के साथ मनाई गई गुरु पूर्णिमा।

शंकरगढ़ नगर क्षेत्र में स्थित कैंब्रिज हाईस्कूल एण्ड कॉलेज में गुरु पूर्णिमा दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विद्यालय के बच्चों के द्वारा प्रार्थना सभा आयोजित की गई। बच्चे , शिक्षक और सुविचार, श्लोक आदि की सुंदर प्रस्तुति दी। विद्यालय के बच्चों ने अपने गुरु जन को पुष्प और माला अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रबंधक संतोष त्रिपाठी ने बताया कि गुरु पूर्णिमा गुरुओं के सम्मान में उनके वंदन और उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए मनाया जाने वाला आध्यात्मिक पर्व है। इस अवसर पर विद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी बालेंद्र पांडे, मनी शंकर दुबे,मनोज तिवारी, इमरान अहमद, दीपक केसरवानी,धर्मराज कुशवाहा,पंकज श्रीवास्तव, राजेश गोस्वामी, पंकज मिश्रा, अखिलेश पांडेय, नरेश श्रीवास्तव, अनुभव पांडेय, राजेश गोस्वामी, मीरा श्रीवास्तव, रीना गोस्वामी, वंदना शुक्ला,रीतू सुसारी, सोमवती विश्वकर्मा,सिम्मी गुप्ता, मधु केसरवानी, प्रीति सेन, निहारिका सेन,पूनम द्विवेदी,अंजू गुप्ता,सीमा सिंह,कोमल त्रिपाठी,शिक्षक-शिक्षिकाएं और बच्चे उपस्थित रहे ।

मुख्य मण्डल प्रभारी मान सिंह कुशवाहा का जनपद आगमन पर हुआ स्वागत

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट ब्यूरो: बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के निर्देश पर बसपा नेता मान सिंह कुशवाहा को पार्टी का चित्रकूट धाम मण्डल का मुख्य मण्डल प्रभारी बनाया गया है। गुरुवार को उनके चित्रकूट आगमन पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया।

जिला मुख्यालय स्थित कार्यालय में गुरुवार को आयोजित कार्यक्रम में बसपा जिलाध्यक्ष अधिवक्ता शिवबाबू वर्मा ने कहा कि नवनियुक्त मुख्य मण्डल प्रभारी मान सिंह कुशवाहा अब तक चित्रकूट के जिला प्रभारी थे। अब बसपा मुखिया के निर्देश पर संगठन द्वारा उनकी जिम्मेदारी बढ़ा दी गई है। उम्मीद है कि नवनियुक्त मुख्य मण्डल प्रभारी पूरे क्षेत्र में पार्टी के जनाधार को बढ़ाते हुए संगठन मजबूत करेंगे। इस दौरान नवनियुक्त मुख्य मण्डल प्रभारी मान सिंह कुशवाहा ने कहा कि पार्टी द्वारा जो जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई है, कार्यकर्ताओं के सहयोग से वह निष्ठापूर्वक काम करते हुए बसपा मुखिया के विश्वास पर खरे उतरेंगे। इस मौके पर वामसेफ के जिला संयोजक बृजमोहन वर्मा, रोहित सिंह पटेल, नत्थू प्रसाद वर्मा, चैतुराम वर्मा, सुरेश सिंह कुशवाहा फौजी आदि मौजूद रहे।

केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी कल जाएंगे जयपुर, पौधरोपण अभियान का करेंगे उद्घाटन

स्वतंत्र प्रभात

केंद्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी कल यानी शुक्रवार को एक दिवसीय दौरे पर जयपुर आएंगे। इस दौरान वो वृक्षारोपण अभियान और कृषि-कौशल सशक्तिकरण कार्यक्रम में भाग लेंगे। मंत्री की यह यात्रा महत्वाकांक्षी ग्रीन कैंपेन 'चौधरी चरण सिंह पारिवारिक वानिकी मिशन' के हिस्से के रूप में निर्धारित है।

केंद्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी कल यानी शुक्रवार को एक दिवसीय दौरे पर जयपुर आएंगे। इस दौरान वो वृक्षारोपण अभियान और कृषि-कौशल सशक्तिकरण कार्यक्रम में भाग लेंगे। मंत्री की यह यात्रा महत्वाकांक्षी ग्रीन कैंपेन 'चौधरी चरण सिंह पारिवारिक वानिकी मिशन' के हिस्से के रूप में निर्धारित है। जहां वो चौधरी चरण सिंह विचार मंच के तहत जयपुर ग्रामीण के नेवटा बांध पर बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान का उद्घाटन करेंगे।

इस मिशन का उद्देश्य भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में 2027 तक 125 'स्मृति वन' (संस्थागत वन) स्थापित करना और 1.25 करोड़ वृक्ष लगाना है। वृक्षारोपण अभियान के बाद जयंत चौधरी जयपुर के बिड़ला ऑडिटोरियम में एक जनसभा को संबोधित करेंगे। यह दौरा चौधरी चरण सिंह राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान (सीसीएस एनआईएएम), जयपुर में समाप्त होगा, जहां मंत्री वेयरहाउसिंग डेवलपमेंट एंड रेगुलेटरी अथॉरिटी (डब्ल्यूडीआरए) के सहयोग से कृषि वस्तु गुणवत्ता परखकर्ताओं के लिए पूर्व-शिक्षण मान्यता (आरपीएल) कार्यक्रम के अंतर्गत कौशल प्रमाण पत्र वितरित करेंगे।

जयपुर से होगी अभियान की शुरुआत

इस मिशन को चौधरी चरण सिंह विचार मंच अन्य सामाजिक संगठनों और सामुदायिक भागीदारी से आगे बढ़ा रहा है। राजस्थान में राजस्थान शिक्षक संघ शेखावत के नेतृत्व में प्रदेशभर के शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों की सहभागिता से 10 लाख पौधे लगाने का संकल्प लिया गया है। इसकी शुरुआत शुक्रवार को जयपुर जिले की सांगानेर पंचायत समिति के नेवटा ग्राम पंचायत से होगी. जहां 'चौधरी चरण सिंह स्मृति वन' की स्थापना के लिए भव्य पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है. इस कार्यक्रम में केंद्रीय जयंत चौधरी के साथ राजस्थान शिक्षक संघ शेखावत के प्रदेशाध्यक्ष महावीर सिहाग, जनप्रतिनिधिगण, सामाजिक कार्यकर्ता और कई गणमान्य लोग भाग लेंगे।

प्रदेशभर में 500 से ज्यादा जगहों पर पौधारोपण

इस अवसर पर प्रदेशभर में 500 से ज्यादा जगहों पर करीब एक लाख पौधे लगाए जाएंगे. ये पौधारोपण एक अभियान की शुरुआत है जो चौधरी चरण सिंह की जयंती वर्ष तक चलता रहेगा. संघ के पदाधिकारियों के अनुसार 'हम हर शिक्षक को एक हरित संरक्षक बनाएंगे और हर स्कूल को एक छोटा पारिवारिक वन देने का प्रयास करेंगे'।

चौधरी चरण सिंह- किसान चेतना से हरित चेतना की ओर

दरअसल चौधरी चरण सिंह का पूरा जीवन किसानों के कल्याण और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को समर्पित था. ऐसे में अब उनके विचारों को जलवायु न्याय और हरित विरासत से जोड़कर प्रस्तुत किया जा रहा है. पारिवारिक वानिकी मिशन न सिर्फ वृक्षारोपण का अभियान है, बल्कि यह समाज में प्रकृति के प्रति पारिवारिक जुड़ाव और जिम्मेदारी का भाव भी विकसित करता है।

इस साल राजस्थान में 20 लाख पौधारोपण का लक्ष्य

इस साल राजस्थान में 20 लाख पौधारोपण का लक्ष्य है. इसमें से 7 लाख पौधे पारिवारिक वानिकी जन पौध शालाओं में इस मिशन के तहत तैयार किए जा रहे हैं. 5 लाख सहजन के पौधे बीकानेर जिले में शिक्षा विभाग के सहयोग से चौधरी चरण सिंह विचार मंच बीकानेर चैप्टर अपने खर्च पर विकसित करवा रहा है. इसके लिए 100 स्कूलों में 100 चौधरी चरण सिंह जन पौधशालाओं का विकास करवाया जा रहा है, जहां सहजन के उच्च गुणवत्ता के 5 लाख पौधे तैयार कर सितंबर में जिले भर की बालिकाओं को एक ही दिन में 'चौधरी चरण सिंह घर -घर सहजन अभियान' के तहत निशुल्क वितरित किए जाएंगे. वहीं अगले साल यानी 2026 में 50 लाख और शेष पौधे 2027 में लगाने का लक्ष्य है. यह मिशन देश के अधिकाधिक राज्यों में चलाया जाएगा।

द्विवार्षिक अधिवेशन में परिषद के अध्यक्ष चुने गए संदीप श्रीवास्तव

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट ब्यूरो: उत्तर प्रदेश राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद का द्विवार्षिक अधिवेशन गुरुवार को जिला मुख्यालय के पुरानी बाजार स्थित रामलीला भवन में किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से हुए चुनाव में संदीप श्रीवास्तव को अध्यक्ष चुना गया।

कार्यक्रम में परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष ई हरि किशोर तिवारी ने कहा कि आयुष्मान योजना का लाभ कर्मचारी व उनके आश्रित परिवारों को दिया जाना चाहिए ताकि गंभीर बीमारियों के इलाज में कर्मचारियों की सारी जमापूंजी खर्च न हो। प्रांतीय महामंत्री शिवबरन सिंह यादव ने कहा कि सरकार को पुरानी पेंशन व्यवस्था बहाल करें ताकि कर्मचारियों का मनोबल ऊंचा हो एवं उनका भविष्य सुरक्षित हो। संरक्षक वीरेन्द्र कुमार द्विवेदी ने कहा कि सरकार को कर्मचारियों मांगे पूरी करनी होंगी। इस दौरान कर्मचारियों की समस्याओं से सम्बन्धित ज्ञापन भी दिया गया। इस दौरान परिषद को मजबूत बनाने के लिए मण्डल अध्यक्ष ओम प्रकाश मिश्र के नेतृत्व में चुनाव सम्पन्न कराया गया। जिसमें सर्व सम्मति से वीरेन्द्र कुमार द्विवेदी को संरक्षक, संदीप श्रीवास्तव को अध्यक्ष, अशोक कुमार यादव को उपाध्यक्ष, राजेन्द्र सिंह को जिला महामंत्री, ब्रजेश कुमार यादव को कोषाध्यक्ष तथा सुरेन्द्र पाण्डेय को चुना गया। इस मौके पर परिषद के रुपेश कुमार पाण्डेय, सुजीत, कृष्ण पाल सिंह, अनिल कुमार, अजय कुमार पाण्डेय, जगबलि सिंह, अखिलेश कुमार पाण्डेय, अनुराग द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

साहित्य सम्मान के लिए 18 अगस्त तक करें आवेदन

चित्रकूटः जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने बताया कि उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा संचालित बाल साहित्य संवर्द्धन योजना के अंतर्गत वर्ष 2024 के लिए 10 बाल साहित्य सम्मानों सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान, सोहन लाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान, निरंकार देव सेवक बाल साहित्य इतिहास लेखक सम्मान, अमृतलाल नागर बाल कथा सम्मान, शिक्षार्थी बाल चित्रकला सम्मान, लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल साहित्य पत्रकारिता सम्मान, डॉ रामकुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान, आचार्य कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान, जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान एवं उमाकान्त मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान के लिए साहित्यकारों व साहित्यिक संस्थाओं से संस्तुतियाँ आमंत्रित की गयी है। बताया कि इस योजना के तहत 10 सम्मानों के लिए संस्तुतिकर्ता अपनी संस्तुति नाम, पता, दूरभाष सहित तथा जीवनवृत्त संस्तुति प्रपत्र निर्धारित प्रारूप में भरकर डाक द्वारा संस्थान को भेज सकते है। बताया कि प्रत्येक सम्मान की धनराशि इक्यावन हजार रूपये होगी, जिसकी अन्तिम तिथि 18 अगस्त है।

संक्षिप्त खबरें

हिरणपुर कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष मनोवर आलम ने ग्रामीण विकास मंत्री को सौंपा ज्ञापन

पाकुड़, झारखंड- गोड्डा में आयोजित कांग्रेस पार्टी की एक महत्वपूर्ण बैठक में प्रखंड अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष एवं प्रभारियों ने हिस्सा लिया। इस बैठक में प्रदेश प्रभारी राजू, प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, माननीय मंत्री दीपिका पांडे सिंह तथा विधायक दल के नेता प्रदीप यादव उपस्थित रहे।बैठक के उपरांत हिरणपुर प्रखंड अध्यक्ष मनोवर आलम ने प्रभारी मंत्री को एक आवेदन सौंपा, जिसमें हिरणपुर प्रखंड में संचालित विभिन्न योजनाओं में व्याप्त अनियमितताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया गया।उन्होंने ग्रामीण जल छाजन मिशन के अंतर्गत हो रहे तालाब निर्माण कार्यों में सरकारी राशि की बड़ी पैमाने पर हो रही लूट का मुद्दा प्रमुखता से उठाया।इसके साथ ही सदर अस्पताल में प्रत्येक दिन अल्ट्रासाउंड जांच की व्यवस्था सुनिश्चित करने का भी अनुरोध किया गया।मनोवर आलम ने ग्रामीण विकास मंत्री से आग्रह किया कि वे प्रखंड का दौरा करें, क्योंकि अबुआ आवास योजना के तहत लाभुकों को राशि नहीं मिलने के कारण वे मायूस हैं।उन्होंने प्रखंड के अधिकारियों के प्रति अपनी नाराजगी भी मंत्री के समक्ष मौखिक रूप से प्रकट की। इस पर मंत्री ने शीघ्र ही जिले में आने का आश्वासन दिया।

सुरेखा प्रकाश भाई पब्लिक स्कूल में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

चौपारण हजारीबाग झारखंड- नवभारत जागृति केंद्र द्वारा संचालित सुरेखा प्रकाश भाई पब्लिक स्कूल में गुरुवार को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा में सफल विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। समारोह का उद्घाटन विद्यालय प्रबंधक गन्धर्व गौरव एवं प्राचार्या रीना पाण्डेय ने संयुक्त रूप से किया। जबकि मंच संचालन राकेश रंजन ने किया। कार्यक्रम में शीर्ष 10 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र, जबकि शीर्ष 20 विद्यार्थियों को रजत पदक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। विद्यालय प्रबंधक व प्राचार्या ने विद्यार्थियों की मेहनत एवं शिक्षकों के मार्गदर्शन की सराहना की। उन्होंने कहा कि विद्यालय के पारिवारिक माहौल और शिक्षकों के सहयोग से विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षकों अमृता मैसी, पवन कुमार, मुकेश कुमार पाठक, आशीष पाण्डेय, शैलेन्द्र गुरु, अमित कुमार, मिथुन पाण्डेय, पूर्णिमा कुमारी एवं शंकर सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम का समापन विद्यालय प्रबंधक गंधर्व गौरव और प्राचार्या रीना पांडे द्वारा परस्पर प्रशंसा और बधाई के साथ हुआ, जिसमें शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त करने में टीम वर्क और समर्पण के महत्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम के अंत में प्रबंधक गंधर्व गौरव और प्राचार्या रीना पांडे ने सफल छात्रों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

बिजली तार के साथ पेड़ गिरा, बड़ा हादसा टला

चौपारण हजारीबाग झारखंड- चतरा मोड़ से महाराजगंज जाने वाली सड़क पर आज सुबह भारी बारिश के कारण एक बड़ा पेड़ टूटकर बीच सड़क पर गिर गया। स्थिति और गंभीर तब हो गई जब वह पेड़ बिजली के तार के साथ गिरा, जिससे इलाके में कुछ घंटे के लिए बिजली आपूर्ति ठप हो गई। गनीमत रही कि उस समय सड़क से कोई वाहन नहीं गुजर रहा था, अन्यथा बड़ी अनहोनी हो सकती थी। कुछ दिन पहले भी इसी मार्ग पर दादपुर के पास पेड़ गिरा था, जिसमें स्कूली बच्चों से भरी एक गाड़ी बाल-बाल बच गई थी। लगातार हो रही इस तरह की घटनाओं ने प्रशासन की लापरवाही और पेड़ों की देख-रेख को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

आषाढ़ पूर्णिमा की पूनीत बेला में श्रद्धालुओं ने की भगवान-भगवती की भक्तिपूर्ण अर्चना

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़िया, पाकुड़, झारखंड- आषाढ़ पूर्णिमा की मंगलमयी बेला में बीते गुरुवार को बड़ी संख्या में पाकुड़िया के शिव, काली और बजरंगबली मंदिरों में भक्तों ने भक्ति-भाव से भगवान शिव, माता पार्वती, मां काली, बजरंगबली तथा श्रीरामचंद्र जी की आराधना कर मंगल कामना की।दस जुलाई को गुरु पूर्णिमा और व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। सनातन संस्कृति में गुरु का महत्व चिरकाल से अत्यधिक रहा है।व्यास जी, पराशर मुनि के पुत्र हैं और मान्यता है कि वे अब तक जीवित हैं। उल्लेखनीय है कि बजरंगबली और अश्वत्थामा की भांति उन्हें भी ईश्वरीय वरदान प्राप्त है।गुरुदेव व्यास जी ने पुराणों एवं महाभारत जैसे दिव्य महाकाव्यों की रचना की है।कहा जाता है कि एक समय वे अपनी कुटिया के बाहर बड़े चिंतित होकर विचरण कर रहे थे, तभी देवर्षि नारद जी वहां पहुंचे।नारद जी को देखकर महर्षि व्यास ने उन्हें प्रणाम किया और अपनी चिंता का कारण जानना चाहा।

तब नारद जी ने कहा – ÷व्यास! आपकी चिंता का मूल कारण यह है कि आपने भगवान श्रीकृष्ण के वचनों का समावेश महाभारत में नहीं किया।÷इसके पश्चात व्यास जी ने इसकी महत्ता को लोकहित में जाना और भगवान श्रीकृष्ण के अमृत वचनों का समावेश कर स्वयं को धन्य माना।गुरु की महत्ता और विशिष्टता के निमित्त भगवान

श्रीकृष्ण एवं श्रीराम ने भी मानव रूप में गुरुओं से सभी प्रकार की शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की।यद्यपि आज के समय में गुरु-शिष्य परंपरा में कुछ विकृति दिखाई देती है, परंतु इसमें किसी एक पक्ष को दोष देना अनुचित होगा।तथापि श्रेष्ठ गुरुओं और शिष्यों की

महत्ता सदैव बनी रहेगी, अन्यथा मार्गदर्शन कौन करेगा?आषाढ़ पूर्णिमा पर प्रखंड के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में भक्तों ने भक्ति-भाव से पूजन कर मंगल कामना की।वहीं, इस पावन अवसर पर कई लोगों ने अपने घरों में भगवान सत्यनारायण की कथा का भव्य आयोजन कर प्रसाद वितरण किया।गुरु व्यास पूर्णिमा पर बड़ी संख्या में लोगों ने अपने-अपने गुरुओं के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

देसी पाठ्यक्रम के इनपुट डीलर को वितरण किया गया डिप्लोमा का सर्टिफिकेट

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़ , झारखंड- बीते दिन आत्मा सभागार, पाकुड़ में देसी (छ्वश्वस्ढ्ढ) पाठ्यक्रम बैच 2018-19 (टीपी नंबर 739) के इनपुट डीलर को डिप्लोमा का सर्टिफिकेट वितरण किया गया।

जिला कृषि पदाधिकारी मृत्युंजय कुमार सह - परियोजना निदेशक, आत्मा , पाकुड़ के द्वारा 40 डिप्लोमा प्रशिक्षणार्थियों को सर्टिफिकेट वितरण किया गया। जिला कृषि पदाधिकारी मृत्युंजय कुमार द्वारा बताया गया कि देसी पाठ्यक्रम के इनपुट डीलर किसानों को प्रशिक्षण में प्राप्त खेती-बाड़ी की तकनीकी जानकारी दें। किसान इनपुट डीलर के पास जो भी खेती बाड़ी से संबंधित समस्या लेकर आते है, उनका अपने स्तर से निदान करें। ऐसे डिप्लोमाधारी इनपुट डीलर से किसानों को अपने ग्राम पंचायत में ही तकनीकी जानकारी मिल सके, इसके लिए देसी पाठ्यक्रम मैनेज, हैदराबाद और समेति, झारखंड, रांची के मार्गदर्शन में संचालित किया जाता है।

किसानों को ऐसे डिप्लोमाधारी इनपुट डीलर से खेतों में गुणवत्तायुक्त इनपुट सामग्री जैसे बीज , खाद , खरपतवारनाशक , कीटनाशक की जानकारी मिलेगी तथा किसानों के फसलों के उत्पादन को बढ़ाने में सहायता मिलेगी। किसानों को बिरसा फसल विस्तार योजना एवं राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एवं पोषण मिशन योजना अंतर्गत मक्का और उरद बीज का वितरण किया। मु0 शमीम

अंसारी, फैसिलिटेटर देसी ने बताया कि इनपुट डीलर को हमेशा किसानों को वैज्ञानिक तकनीक का प्रचार प्रसार करना चाहिए।इस कार्यक्रम मे उप परियोजना निदेशक आत्मा, पाकुड़, प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक - सह - फैसिलिटेटर, देसी पाठ्यक्रम, पाकुड़, मो0 मेहबुब आलम, संजय कुमार एवं आत्मा के अन्य कर्मी उपस्थित थे।

रविंद्र भवन में विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ संवाद सह-सम्मान समारोह का किया गया आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़, झारखंड- पाकुड़ के रविंद्र भवन में एक दिवसीय सम्मान समारोह आयोजन में पाकुड़ उपायुक्त मनीष कुमार के हाथों शिक्षक रतन प्रमाणिक हुए सम्मानित! शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और स्कूलों को संवारने की जिम्मेदारी अब सिर्फ शिक्षकों की नहीं, बल्कि हर ग्रामवासी की है—यही संदेश लेकर प्रोजेक्ट परख 2.0 के तहत आयोजित किए गए संवाद-सह-सम्मान समारोह में पाकुड़ जिला के सैकड़ों विद्यालय प्रबंधन समिति (VEC) अध्यक्ष, सचिव, बीआरपी, सीआरपी, सभी विद्यालय के शिक्षक, मुखिया और जेएसएलपीएस की दीदियां जुटीं। कार्यक्रम की शुरुआत उपायुक्त मनीष कुमार, जिला शिक्षा अधीक्षक नयन कुमार और जिला शिक्षा पदाधिकारी अनीता पुरती ने दीप प्रज्वलन से की। मंच से शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ बने ड्ढश्वष्ट अध्यक्षों एवं शिक्षक को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।सबसे अच्छे ऑनलाइन कोर्स विद्यालय में शत-प्रतिशत उपस्थिति वाला छात्र एवं छात्राएं हो।उपायुक्त मनीष कुमार ने मंच से साफ कहा—÷विद्यालय में बच्चों और शिक्षकों की उपस्थिति सौ फीसदी होनी चाहिए, और इसमें प्रबंधन समिति की भूमिका सबसे अहम है। मध्यान्ह भोजन समय पर मिले, विकास मद की राशि बच्चों के हित में खर्च हो—यह सब आप सबके समर्पण से ही संभव है।" माता-पिता से खास अपील।डीसी ने अभिभावकों को भी एक जिम्मेदारी सौंपी—"जब बच्चा स्कूल से लौटे तो उससे जरूर पूछें कि उसने आज क्या सीखा। यही सवाल बच्चे के भीतर जिज्ञासा और सुधार का बीज बोता है। कार्यक्रम में न सिर्फ संवाद हुआ, बल्कि प्रेरणादायक वीडियो दिखाकर सभी को शिक्षा के प्रति सजग किया गया। साथ ही मंच पर बच्चों का जन्मदिन केक काटकर मनाया गया—जो पूरे माहौल को भावनात्मक बना गया।स्वच्छता और नशा मुक्ति की अपील की गई अंत में सभी प्रतिभागियों को स्वच्छता और नशामुक्ति की शपथ दिलाई गई। 'बोलेगा पाकुड़' जैसी पहलों के साथ धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का रंग पूरे आयोजन में छाया रहा।

गुरु पूर्णिमा पर पुजारी सुबोध पांडे को किया गया सम्मानित

स्वतंत्र प्रभात

चौपारण हजारीबाग झारखंड- गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर झापा पंचायत अंतर्गत बेंदुआरा गांव स्थित शिव मंदिर में परंपरागत रूप से पुजारी सुबोध पांडे जी को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय हिंदू फ्रंट के हजारीबाग जिला अध्यक्ष मुकुंद साव, पूर्व मुखिया पूर्णिमा देवी, ग्राम के बुजुर्ग रामलाल चंद्रवंशी, वरिष्ठ समाजसेवी अजीत प्रसाद गुप्ता, रामपाल सिंह, समाजसेवी राकेश कुमार उर्फ मुन्ना, सामाजिक कार्यकर्ता सुशील साहू, मनोज कुमार, रेखा देवी एवं माला देवी सहित कई सम्मानित व्यक्तित्वों की उपस्थिति रही।

समारोह के दौरान सभी ने अपने-अपने गुरुओं को श्रद्धापूर्वक नमन किया तथा गुरु परंपरा की महत्ता पर प्रकाश डाला। ज्ञातव्य है कि बेंदुआरा के शिव मंदिर में हर वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु, पुरोहित एवं पुजारियों को सम्मानित करने की परंपरा रही है, जो आज भी सामाजिक एकता और सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजे हुए है। इस आयोजन ने क्षेत्र में धार्मिक

भावना को और मजबूत किया तथा गुरु-शिष्य परंपरा के प्रति लोगों में श्रद्धा को पुनः जागृत किया।

तालझारी में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का हुआ उद्घाटन, उपायुक्त हेमंत सती ने लिया जायजा

स्वतंत्र प्रभात

साहेबगंज झारखंड- तालझारी प्रखंडवासियों के लिए स्वास्थ्य सुविधा के क्षेत्र में एक बड़ी सौगात के रूप में आज नवनिर्मित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) तालझारी का भव्य उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर उपायुक्त हेमंत सती ने विधिवत रूप से फिता काटकर भवन का उद्घाटन किया और उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। उद्घाटन समारोह के पश्चात उपायुक्त ने नवनिर्मित भवन के सभी वार्डों - पुरुष, महिला, प्रसव कक्ष, आपातकालीन सेवा कक्ष, ओपीडी व औषधि वितरण केंद्र - का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अस्पताल की स्वच्छता, दवा की उपलब्धता, चिकित्सा उपकरणों की स्थिति, रोगियों की सुविधा एवं स्वास्थ्यकर्मियों की उपस्थिति की गहन समीक्षा की। उन्होंने स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा कि ÷स्वास्थ्य सेवा जनहित का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। इसमें किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस दौरान उपायुक्त ने डॉक्टरों एवं स्वास्थ्यकर्मियों से व्यक्तिगत रूप से बातचीत कर उनकी आवश्यकताओं को भी सुना। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सीएचसी तालझारी में सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हों, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को समुचित चिकित्सा सुविधा सुलभ हो सके।इसके अतिरिक्त उपायुक्त हेमंत सती ने तालझारी प्रखंड में स्थित बाल संरक्षण कार्यालय का भी दौरा किया। कार्यक्रम के अंत में उपायुक्त ने स्वास्थ्य केंद्र में वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। उनका यह दौरा प्रशासनिक

तत्परता और जनसरोकार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।मौके पर प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, स्वास्थ्य केंद्र के समस्त चिकित्सक, नर्स, पारा मेडिकल स्टाफ सहित कई स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीण बड़ी संख्या में मौजूद थे। सभी ने स्वास्थ्य केंद्र की शुरुआत को तालझारी के लिए एक ऐतिहासिक कदम बताया और उपायुक्त का आभार प्रकट किया।

भैस चोर गिरोह फिर से हुआ सक्रिय कस्वे की चार भैंसे हुई गायब

मानिकपुर, चित्रकूट: बरसात का मौसम आते ही भैस चोर सक्रिय हो गए है। हर वर्षो की तरह शनिवार को कस्वे के शिवनगर तहसील के समीप रहने वाले रामबाबू पाल पुत्र नत्थू पाल ने दोपहर करीब दो बजे अपनी भैसों को टहलाने को छोड़ी थी बरसात होने के चलते चरते चरते भैंसे पास के जडेरा नाला तक जा पहुँची और रहस्यमय तरीके से चोरों ने जडेरा नाले के पास पिकप वाहन में लाद कर रफूचक्कर हो गए। अभी बिगत माह रानीपुर ग्राम के कुबरी से 16 भैंसे मुन्ना यादव पुत्र बुवा राम यादव की चोरी हो गयी थी लेकिन कोई रता पता नहीं चल पाया है। हर वर्ष पाठा क्षेत्र में भैस चोरों का गिरोह सक्रिय हो जाता है ज्यादातर जून-जुलाई में भैसों की चोरियां होती है शनिवार को 06-07 लीटर दुध देती 04 भैसों की चोरी महज सरे शाम जडेरा नाले के पास से हुई है लोडर के निशान से प्रतीत होता है कि चोरों ने भैसों को वाहन से लेकर गए है। जानकारों का कहना है कि मानिकपुर पाठा क्षेत्र भैस चोरी के लिए सबसे मुफीत माना जाता है क्योंकि सड़क मार्ग से चोरों को आने जाने में कोई बाधा नही है बेधड़क वाहन बगैर किसी रोक टोक के आते जाते है। मानिकपुर से धारकुंडी के रास्ते रीवा सतना मार्ग मझगवां के रास्ते भी और डभौरा व राजापुर कही भी आया जाया जा सकता है। भैसों के चोरी के बाद से पीड़ित परिवार परेशान है स्थानीय थाने में होलिया कटवाई गयी है लोगो से अपील है अपने जानवरो पर पैनी निगाह रखे और यदि कोई जानवर लेकर वाहन जाते दिखे तो उस पर निगाह रखे।

त्रिवेणीगंज पीएचसी में आशा फेसिलिटेटर चयन विवाद पर जांच , प्रक्रिया को बताया गया पारदर्शी

स्वतंत्र प्रभात

त्रिवेणीगंज(सुपौल) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र त्रिवेणीगंज में आशा फेसिलिटेटर चयन में गड़बड़ी की शिकायत पर गुरुवार को जांच टीम ने अनुमंडलीय अस्पताल पहुँचकर मामले की विस्तृत रूप से जांच की। तीन सदस्यीय जांच टीम में जिले से आए जिला यछमा पदाधिकारी डॉ. चंदन कुमार, जिला अनुश्रवण एवं मूल्यांकन पदाधिकारी डॉ. शशि भूषण प्रसाद,जिला समन्वयक एवं योजना पदाधिकारी डॉ. बालकृष्ण चौधरी शामिल थे। जांच टीम ने शिकायतकर्ता आशा एवं चयनित आशा फेसिलिटेटर की मौजूदगी में उन्हें पूछताछ कर मामले की बारीकी से जांच की। इसके उपरांत जांच रिपोर्ट जल्द ही जिलाधिकारी को सौंपने की तैयारी कर ली। जांच टीम द्वारा जांच में चयन प्रक्रिया को पूरी तरह नियमित और पारदर्शी बताया गया

है। जांच टीम के अनुसार, जांच में पाया गया कि नए परिसीमन के तहत चयन पूर्व निर्धारित दिशा-निर्देशों के आधार पर किया गया। इस प्रक्रिया की सूचना 30 से 45 दिन पूर्व बोर्ड पर प्रकाशित की गई थी और संबंधित क्षेत्र की सभी आशा कार्यकर्ताओं को जानकारी दी गई थी। साथ ही चयन प्रक्रिया में सभी आवेदन जिला स्तर के पदाधिकारियों की मौजूदगी में प्राप्त किए गए और पूर्ण पारदर्शिता के साथ चयन किया गया। जांच में यह भी पाया गया है कि चयन के समय सभी आशा कार्यकर्ता मौके पर मौजूद थीं और किसी भी प्रकार की गड़बड़ी या पक्षपात की पुष्टि नहीं हुई है। सिविल सर्जन सुपौल के द्वारा गठित यह जांच सिमरिया पंचायत के केंद्र संख्या 03 की आशा कार्यकर्ता बेबी भारती की शिकायत पर की गई थी। जिसमें उन्होंने आरोप लगाया था कि नवचयनित आशा फेसिलिटेटर सुनीता कुमारी का चयन गैरकानूनी और मनमाने तरीके से हुआ है। मौके पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ सुमन कुमार, ब्लॉक हैल्थ मैनेजर एस अदीब अहमद मौजूद थे।

श्रम अधीक्षक की अध्यक्षता में ट्रांसपोर्टर्स के साथ अहम बैठक संपन्न

- **मोटर परिवहन कर्मकार अधिनियम के तहत सभी वाहनों का अनिवार्य निबंधन सुनिश्चित करने का निर्देश**
- **मजदूरी भुगतान अधिनियम का कड़ाई से पालन, नाबालिगों की नियुक्ति पर रोक के सख्त निर्देश**
- **श्रमिकों को अधिकार दिलाने में बस मालिकों से सहयोग की अपील**

स्वतंत्र प्रभात

साहेबगंज, झारखंड- सहायक श्रमायुक्त कार्यालय में श्रम अधीक्षक धीरेंद्र नाथ महतो की अध्यक्षता में साहेबगंज जिले के बस-ट्रक ऑनर एसोसिएशन एवं ट्रांसपोर्ट कारोबारियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का उद्देश्य परिवहन क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों के हितों की रक्षा करना और श्रम कानूनों का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित कराना था। बैठक के दौरान विशेष रूप से मोटर परिवहन कर्मकार अधिनियम, 1961 के तहत सभी ट्रांसपोर्ट वाहनों - विशेषकर बस और ट्रकों - का निबंधन सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। श्रम अधीक्षक ने स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी वाहनों का समयबद्ध पंजीकरण सुनिश्चित करें ताकि संबंधित अधिनियम के तहत श्रमिकों को विधिसम्मत लाभ प्रदान किया जा सके।श्रम अधीक्षक ने वाहन मालिकों को निर्देशित किया कि ड्राइवर, सहचालक, खलासी एवं अन्य सहयोगी कर्मचारियों की कार्य अवधि प्रतिदिन आठ घंटा एवं सप्ताह में अड़तालीस घंटा समय निर्धारित की जाए, जिससे श्रमिकों का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य सुरक्षित रहे। इसके अतिरिक्त, सभी कर्मचारियों को हर माह की 7 तारीख तक मजदूरी का भुगतान अनिवार्य रूप से बैंक खाते के माध्यम से किया जाए, ताकि मजदूरी भुगतान अधिनियम, 1936 का पूर्णतः अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके।बैठक में यह भी स्पष्ट किया गया कि किसी भी मोटर वाहन उपक्रम में नाबालिग श्रमिक की नियुक्ति पूर्णतः वर्जित है।

सप्ताह में कम-से-कम एक दिन का साप्ताहिक अवकाश श्रमिकों को अनिवार्य रूप से दिया जाए, जिससे उनकी कार्य दक्षता बनी रहे और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।श्रम अधीक्षक श्री महतो ने यह भी कहा कि परिवहन क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों को उनके सभी वैधानिक अधिकार दिलाना श्रम विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके लिए उन्होंने बस व ट्रक मालिकों से सहयोग की अपील की और भरोसा जताया कि सभी संबंधित पक्ष इस दिशा में विभाग को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। बैठक के अंत में श्रम अधीक्षक ने स्पष्ट रूप से कहा कि यदि किसी ट्रांसपोर्टर द्वारा श्रम कानूनों का उल्लंघन किया जाता है, तो उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

इसके लिए जिला स्तर पर निरीक्षण अभियान भी चलाया जाएगा।इस बैठक में ट्रांसपोर्ट यूनियन के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए और श्रमिक हितों की रक्षा के लिए हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया। बैठक में परिवहन क्षेत्र से जुड़े अनेक प्रमुख व्यापारी, बस-ट्रक ओनर्स, यूनियन प्रतिनिधि और श्रम विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।श्रम विभाग द्वारा यह पहल जिले में संगठित परिवहन क्षेत्र के विकास एवं श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

भाजपा पाण्डेय बारा पंचायत के पूर्व पंचायत अध्यक्ष संजय पांडेय का निधन,भाजपा कार्यकर्ताओं में शोक की लहर

स्वतंत्र प्रभात

चौपारण, हजारीबाग, झारखंड- भारतीय जनता पार्टी के पांडेय बारा पंचायत के पूर्व अध्यक्ष सह कर्मठ एवम समर्पित कार्यकर्ता संजय पांडेय जी का आज निधन हो गया,उनका इलाज रांची रिम्स में चल रहा था, स्व पांडेय पार्टी के सच्चे सिपाही थे,जनहित के कार्यों में लगे हुए रहते थे,आज उनका अंतिम संस्कार बनारस में होगा, अब सिर्फ उनकी पत्नी उनकी उनके घर में है, बेटी है जिनकी शादी हो चुकी है,उनकी पत्नी के सामने दुख का पहाड़ टूट पड़ा है , आज से कुछ दिन पहले उनका इकलौता पुत्र दुनिया छोड़कर चला गया था,आज वो स्वयं दुनिया से विदा हो गए,उनका जीवन का गाथा बड़ा ही दर्दनाक रहा है,दोनो पैर पहले से टूटा हुआ था,किसी तरह गुजारा कर रहे थे, इसी बीच उनका इकलौता पुत्र का निधन हो जाता है,इसके बाद पुनःएक दुर्घटना में पैर टूट जाता है,किसी तरह समय कट रहा था,फिर वो बीमार हो जाते है, इलाज चल रहा था और उनका निधन हो गया,अब घर में मृतक की पत्नी जो बिल्कुल बेसहारा हो गई है वही बच रही है

जिन्हे सहयोग की जरूरत है,संजय पांडे के निधन पर हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल ,बरही के विधायक मनोज कुमार यादव ,भाजपा के वरिष्ठ नेता अनिल मिश्रा ,पुर्व मंडल अध्यक्ष भरत सिंह,पुर्व मंडल अध्यक्ष मुकुंद साव ,मंडल अध्यक्ष मुकेश सिन्हा, पुर्व मुखिया पूर्णिमा देवी, भाजपा नेत्री पुष्पा सिंह, मंडल महामंत्री कृष्णा कुमार साव, बालेश्वर साव, अरविंद कुमार सिंह, भाजपा सैनिक प्रकोष्ठ के पूर्व प्रदेश महामंत्री और सेवा निवृत वायु सेना अधिकारी विजय पांडेय, बृजनंदन सिंह,अशोक कुमार ठाकुर, रामाधीन पांडेय, लक्ष्मण साव, महावीर प्रसाद गुप्ता, पूनम कुमारी, प्रियंका कुमारी, राजकुमार यादव, कैलाश पांडेय मिथलेश पांडेय सहित कई नेताओं ने मृतक के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की है साथ ही इस दुख के बेला में उनके साथ खड़े रहने की बात कही, नेताओ ने कहा कि स्व संजय पांडे का निधन से भाजपा को अपूर्णीय क्षति हुई है।

पूरनपुर तहसील परिसर में तीन दिन से चल रहा किसान धरना प्रशासन के लिखित आश्वासन पर समाप्त

स्वतंत्र प्रभात

पूरनपुर। पूरनपुर तहसील परिसर में पिछले तीन दिनों से भारतीय किसान यूनियन (भानु) का अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन चल रहा था। किसानों की जमीन संबंधी समस्याओं, रास्तों की खराब स्थिति और प्रशासनिक अनदेखी से नाराज संगठन के कार्यकर्ता लगातार धरने पर बैठे हुए थे। बुधवार को आंदोलन ने और रफ्तार पकड़ी जब भाकियू के जिला अध्यक्ष भजनलाल क्रोधी व अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष नासिर शाह के नेतृत्व में जिले के अन्य पदाधिकारी भी पूरनपुर तहसील पहुंचे और धरना प्रदर्शन को तेज किया।

धरना स्थल पर बढ़ती सक्रियता को देखते हुए उपजिलाधिकारी पूरनपुर स्वयं मौके पर पहुंचे और भाकियू पदाधिकारियों से वार्ता की। लगभग आधे घंटे तक चली बातचीत के बाद प्रशासन की ओर से किसानों की समस्याओं के समाधान को लेकर लिखित आश्वासन दिया गया, जिसके बाद धरना प्रदर्शन को स्थगित कर दिया गया। भाकियू द्वारा उठाई गई प्रमुख मांगों में नवदिया मुजसा निवासी किसान विनोद

कुमार की भूमि से अवैध कब्जा हटवाने की मांग प्रमुख थी। किसान का आरोप है कि ग्राम बिनौरा खास (माधौटांडा) व रामपुर (महाराजपुर) स्थित उसकी कृषि भूमि पर कुछ लोग जबरन कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं।

शिकायत करने पर प्रशासन ने सात दिन में कार्रवाई का आश्वासन दिया था, लेकिन अब तक कोई हल नहीं निकला, जिससे किसान और संगठन दोनों में रोष था।

इसके अलावा ग्राम लाह में मनरेगा योजना के अंतर्गत हुए कार्य के दौरान दोनों ओर लगे पेड़ों की स्थिति पर भी सवाल उठाए गए। संगठन के अनुसार राजेंद्र पुत्र हीरालाल ने अपने पेड़ हटा लिए, जबकि विपक्ष की ओर से अभी तक पेड़ नहीं हटाए गए हैं, जिससे विवाद बना हुआ है। ग्राम चंदोखा में चकरोड की जमीन पर विपक्ष द्वारा कब्जा कर लिया गया है और इसी मामले में किसान सीताराम पर मुकदमा भी कायम कर दिया गया, जिसे लेकर संगठन ने न्यायिक जांच की मांग रखी। साथ ही ग्राम लाह में टूटी पड़ी इंटरलॉक सड़क से निकलने में ग्रामीणों को हो रही परेशानी का मुद्दा भी उठाया गया। संगठन ने मांग की कि तुरंत पाइप की व्यवस्था कर निकासी की समस्या का समाधान कराया जाए। वार्ता के बाद प्रशासन ने सभी मामलों पर शीघ्र कार्रवाई का लिखित आश्वासन दिया। भाकियू ने चेतावनी दी कि यदि तय समय सीमा में समाधान नहीं हुआ, तो संगठन दोबारा आंदोलन करने को बाध्य होगा।

संक्षिप्त खबरें

भीषण सड़क हादसा- टेंपो-बाइक टक्कर में तीन युवाओं की दर्दनाक मौत

जौनपुर। जिले के सिकरारा थाना क्षेत्र अंतर्गत समाधगंज भवानीपुर मोड़ पर बुधवार को एक भीषण सड़क हादसे में तीन युवाओं की दर्दनाक मौत हो गई। टेंपो और बाइक की आमने-सामने की टक्कर में गंभीर रूप से घायल तीनों लोगों को स्थानीय लोगों की मदद से तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। हादसे में जान गंवाने वालों की पहचान सौरभ कुमार (पुत्र विनोद गौड़, निवासी मतरी मथुरा), श्वेता कुमारी (पुत्री समरजीत गौतम, निवासी टेकरी सिकरारा), और रामपाल (पुत्र शिवमूरत चौहान, निवासी चक इंग्लिश हसनपुर, सिकरारा) के रूप में हुई है। सूचना मिलते ही सिकरारा थाना प्रभारी उदय प्रताप सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं, टेंपो चालक को हिरासत में ले लिया गया है। थाना प्रभारी ने इसे अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण घटना बताते हुए कहा कि पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है और आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा रही है। इस हादसे से क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है। मृतकों के घरों में कोहराम मचा हुआ है, परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

इंटरसिटी ट्रेन पर अराजक तत्वों ने की अंधाधुंध पत्थरबाजी

ट्रेन में सवार यात्रियों में बना दहशत का माहौल
पुलिस पत्थरबाजों की बजाएगी ईट से ईट

जौनपुर बरसठी– थाना क्षेत्र के कटवार हाल्ट व सरसरा हाल्ट के बीच जौनपुर से रायबरेली जाने वाली इंटर सिटी ट्रेन पर कुछ अराजक तत्वों ने बुधवार को पत्थर बाजी की। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। पत्थरबाजी में ट्रेन के कई खिड़की का शीशा टूट गया है, इसमें कुछ यात्री भी घायल हुए है। लेकिन उनका नाम नहीं पता चल पाया है। अचानक ट्रेन पर हुई पत्थरबाजी से ट्रेन के यात्रियों में दहशत फैल गयी। आरपीएफ प्रभारी जंघई प्रवीण कुमार तिवारी ने बताया कि जौनपुर से रायबरेली जाने वाली इंटरसिटी एक्सप्रेस कटवार हाल्ट स्टेशन पहुंची तभी अचानक चेन पुलिंग कर दिया गया। जैसे ही ट्रेन रुकी करीब 6 लोग ट्रेन पर अंधाधुंध पत्थर चलाने लगे। यह देख कोच में बैठे यात्री में चीख पुकार मच गई। लोग कोच में ही आड़ लेकर छुपने लगे । पत्थर लगने से चोट लग गयी। कोच के कई खिड़की के शीशे टूट गए। कुछ यात्रियों को भी पत्थर लगने से चोट लग गयी है। कुछ देर बाद ट्रेन रवाना हुई। अब पत्थर क्यों चलाया गया यह पता नहीं चल सका। आरपीएफ प्रभारी जंघई प्रवीण कुमार तिवारी ने बताया कि वीडियो का संज्ञान लिया जा रहा है। उसके आधार पर सभी को चिन्हित किया जा रहा है। इसमें मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही की जाएगी।

एक सितम्बर तक भेजे प्रविष्टियां

चित्रकूट: जिलाधिकारी शिवशरणप्पा ने बताया कि उत्तर प्रदेश के 18 ये 30 वर्ष के युवा रचनाकारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन लखनऊ द्वारा कहानी, कविता, निबन्ध प्रतियोगिता के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गयी है। जिसमें लेखकों को नई कहानी, कविता व निबन्ध तीन प्रतियों में फेटोकापी पेपर में कम्प्यूटर टाइपिंग कराकर भेजनी होगी। जिसमें कहानी व निबंध अधिकतम 2500 शब्द तथा कविता अधिकतम 500 शब्द की होगी। निबंध भारतीय संस्कृति और कुम्भ विषय पर तथा कहानी व कविता भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों पर केन्द्रित होनी चाहिए। इसके अलावा दूसरे पृष्ठ पर कहानी, कविता व निबन्ध के शीर्षक के साथ प्रतिभागी का नाम, पता, दूरभाष संख्या सहित हाईस्कूल प्रमाण पत्र की छायाप्रति संलग्न करना अनिवार्य है। प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि एक सितम्बर निर्धारित है। इसमें विजेजा लेखकों को प्रथम पुरस्कार के रूप में सात हजार, द्वितीय पुरस्कार के रूप में पांच हजार तथा तृतीय पुरस्कार के रूप में चार हजार एवं दो सांत्वना पुरस्कार दो-दो हजार रुपये के दिए जाएंगे। प्रविष्टि के लिफाफे पर कहानी, कविता व निबन्ध प्रतियोगिता लिखकर उपरोक्त पते में भेजना है।

राज्यसभा सांसद के हाथों जिले के तमाम सामाजिक कार्यकर्ता अपने समर्थकों के साथ आम आदमी पार्टी में हुए शामिल

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। आम आदमी पार्टी उत्तर प्रदेश के प्रभारी राज्यसभा सांसद संजय सिंह का आगमन जनपद जौनपुर में हुआ था, इसी संदर्भ में पार्टी कार्यालय के पास स्थित मंगलम मैरिज हॉल में कार्यकर्ता सम्बोधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें जिले के तमाम वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता अपने-अपने समर्थकों के साथ आम आदमी पार्टी की सदस्यता लिए।

सदस्यता लेने के लिए प्रमुख रूप से शामिल हुए मल्हनी विधानसभा क्षेत्र से अमरपाल यादव, चकजददू दुबे, वीरेंद्र यादव, विजय यादव, केराकत विधानसभा से चंद्रजीत गायक, सदर विधानसभा से आफताब आलम, अशोक यादव इत्यादि लोग अपने समर्थकों के साथ आम आदमी पार्टी की सदस्ता लिए। राज्यसभा सांसद संजय सिंह द्वारा उक्त सभी लोगों को आप पार्टी की सदस्यता दिलाई गई। उक्त कार्यक्रम का संचालन पूर्वांचल प्रांत प्रभारी डॉ अनुराग मिश्रा ने किया। उक्त कार्यक्रम में पार्टी की तरफ से प्रमुख रूप से शामिल रहे निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष सभाजित सिंह, पूर्वांचल प्रांत अध्यक्ष राजेश यादव, जिलाध्यक्ष राम रतन विश्वकर्मा, जिला उपाध्यक्ष विजय सिंह बागी, जिला महासचिव विनोद प्रजापति, निवर्तमान जिला मीडिया प्रभारी अतुल कुमार तिवारी, जिला कोषाध्यक्ष विद्याधर मिश्र, महिला प्रकोष्ठ प्रदेश सचिव रेखा जायसवाल, जिलाध्यक्ष अनीता मिश्रा, जिला उपाध्यक्ष वंदना मिश्रा, समाजसेवी शत्रुघ्न सिंह सोनू, समाजसेवी प्रदीप मिश्रा, वरिष्ठ सदस्य सोम वर्मा, व्यापार प्रदेश सचिव हिंच नारायण तिवारी, विधि प्रकोष्ठ पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष अनुराग मणि त्रिपाठी, काशी प्रांत उपाध्यक्ष सूर्य नारायण सिंह, व्यापार प्रकोष्ठ प्रदेश सचिव बंटी अग्रहरि, विशाल यादव, बबलू गुप्ता, मुरली मनोहर, शिव जी मिश्रा समेत सैकड़ो कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे। राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने सभी नए सदस्यों को आप पार्टी की सदस्यता दिलाने के पश्चात कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए बोले कि आज हम सभी के लिए बहुत ही खुशी का दिन है कि जिले के तमाम वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता आप पार्टी की सदस्यता ले रहे हैं और अब आम आदमी पार्टी की लोकप्रियता उत्तर प्रदेश में भी बहुत तेजी से जिले के साथ-साथ पुरे देश में फैल रही है। और अब यह हम सभी कार्यकर्ताओं का दायित्व बनता है कि देश के सम्मान व विकाश के लिए और आम आदमी की आवाज के लिए हम सभी को एकजुट होना होगा। उक्त कार्यक्रम कि जानकारी पार्टी के निवर्तमान जिला मीडिया प्रभारी अतुल कुमार तिवारी ने दिया।

गुरु पूर्णिमा पर भाजपा मछलीशहर ने आयोजित किया गुरु सम्मान समारोह

● **जमालापुर में शिक्षकों को किया गया सम्मानित**

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर भारतीय जनता पार्टी, मछलीशहर इकाई द्वारा ÷गुरु सम्मान समारोह÷ का भव्य आयोजन ठा. मातिवर सिंह महाविद्यालय, जमालापुर में किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. अजय सिंह एवं मछलीशहर लोकसभा के पूर्व सांसद वी. पी. सरोज उपस्थित रहे। दोनों वरिष्ठ नेताओं ने समारोह में सम्मिलित शिक्षकों और गुरुओं को अंगवस्त्र व पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राम सिंह पटेल ने की, जबकि मंच संचालन का दायित्व निवर्तमान मंडल अध्यक्ष (मड़ियाहूं) राजेश सिंह ने निभाया।

इस अवसर पर डॉ. अजय सिंह ने गुरु की महिमा और उनके समाज में योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। वहीं, पूर्व सांसद वी. पी. सरोज ने भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा की महत्ता को रेखांकित करते हुए गुरु पूर्णिमा के ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक महत्व पर विचार साझा किए। समारोह में अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही, जिनमें प्रमुख रूप से ठा. संजय सिंह, डॉ. श्याम दत्त दुबे, मनोज सिंह, संजय जयसवाल, आलोक सिंह, शशिकांत सिंह, डॉ. अरुण सिंह, डॉ. ममता वर्मा, डॉ. ज्योति श्रीवास्तव, डॉ. ज्योतिमा सिंह, सत्य प्रकाश चौबे, बलिराम राजभर, प्रिंस सिंह, शीतला मौर्य, अरविंद चौरसिया, राहुल सिंह, साधव सिंह, मनोज यादव समेत कई अन्य लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम में गुरुजनों को श्रद्धा-सम्मान अर्पित कर भारतीय संस्कृति की महान परंपरा का भावपूर्ण स्मरण किया गया।

आदि कर्मयोगी अभियान- विकसित भारत की ओर जनजातीय नेतृत्व का नया संकल्प

स्वतंत्र प्रभात

जनजातीय कार्य मंत्रालय ने बेंगलुरु में आदि कर्मयोगी अभियान के तहत पहला रीजनल प्रोसेस लैब (RPL) लॉन्च किया है. इस राष्ट्रीय मिशन का मकसद 20 लाख जनजातीय कार्यकर्ताओं को ट्रेनिंग देना और ग्रामीण विकास को गति देना है. यह अभियान सेवा, समन्वय, और क्षमता निर्माण पर आधारित है. 'विकसित भारत @2047' के लक्ष्य को पाने के लिए सरकार बड़े स्तर पर काम कर रही है. इस कड़ी में केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय ने बेंगलुरु में आदि कर्मयोगी अभियान के तहत पहला रीजनल प्रोसेस लैब (RPL) लॉन्च किया. इस राष्ट्रीय मिशन के तहत देश में 20 लाख जनजातीय जमीनी कार्यकर्ताओं और ग्राम स्तर के नेतृत्वकर्ताओं की एक मजबूत टीम तैयार करना है. ताकि सेवा और विकास अंतिम छोर तक पहुंच सके.

बेंगलुरु के एक होटल में इस लॉन्च को गुरु पूर्णिमा के दिन प्रतीकात्मक रूप से आयोजित किया गया. ताकि जमीनी स्तर पर तैयार हो रहे इन 'गुरुओं' को सम्मान दिया जा सके. मंत्रालय का मानना है कि आने वाले समय में ये कार्यकर्ता अपने गांवों में ज्ञान, संवेदनशीलता और कार्यशीलता से बदलाव के वाहक बनेंगे.

मॉर्डन गर्वनेंस का नया दृष्टिकोण

मंत्रालय का कहना है कि आदि कर्मयोगी महज एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि गवर्नेंस सिस्टम को परिभाषित करने का संकल्प है. यह अभियान प्रधानमंत्री जनजातीय सशक्तिकरण योजना (PM-JANMAN) और दाजगुआ जैसे अभियानों से जुड़कर समग्र दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है. इसमें समुदाय, समन्वय और क्षमता निर्माण तीन प्रमुख स्तंभ हैं

केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री जुएल ओराम ने इसे जनजातीय भारत के लिए गेमचेंजर बताया. उन्होंने कहा, आदि कर्मयोगी सेवा, संकल्प और समर्पण का प्रतीक है. यह अभियान अंतिम छोर तक सेवा, गरिमा और जवाबदेही को मजबूत करेगा. यहीं से विकसित भारत का निर्माण होगा.

सशक्तिकरण की नई कहानी

राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने इसे जनजातीय समाज के स्वाभिमान और पहचान को पुनर्स्थापित करने वाला अभियान बताया. वहीं, मंत्रालय के सचिव विभु नायर ने इसे ऐतिहासिक मौका करार दिया और स्थानीय जरूरतों के अनुसार समाधान तैयार करने पर जोर दिया. उन्होंने SMTs (स्टेट मास्टर ट्रेनर्स) से बदलाव के अग्रदूत बनने का आह्वान किया

कर्नाटक की मुख्य सचिव डॉ. शालिनी राजनीश ने अभियान की सराहना की. उन्होंने कहा कि ये समय की मांग के अनुसार एक परिवर्तनकारी पहल है. उन्होंने कर्नाटक सरकार की ओर से पूरा संस्थागत सहयोग देने का भरोसा दिलाया.राज्य के जनजातीय कल्याण सचिव रंदीप डी. ने बताया कि कर्नाटक पहले से ही पीएम-जनमन और दाजगुआ जैसी योजनाओं में अग्रणी है. आदि कर्मयोगी अभियान अंतिम छोर तक सेवाओं को पहुंचाने में मदद करेगा.

बेंगलुरु-इनोवेशन का केंद्र

केंद्रीय मंत्रालय के संयुक्त सचिव अनंत प्रकाश पांडे ने बेंगलुरु को इनोवेशन का केंद्र बताया. उन्होंने कहा कि गुरु पूर्णिमा के दिन यह लॉन्च खास महत्व रखता है, क्योंकि आदि कर्मयोगी गांवों में बदलाव लाने वाले 'गुरु' बनेंगे. तमिलनाडु की जनजातीय कल्याण सचिव जी. लक्ष्मी प्रिया ने तमिलनाडु के सभी जनजातीय गांवों को इस अभियान से जोड़ने की प्रतिबद्धता जताई.

मंत्रालय का मानना है कि बेंगलुरु में शुरू हुआ यह पहला RPL एक मॉडल के तौर पर आगे राज्यों और जिलों में ट्रेनिंग लैब्स का रास्ता तय करेगा. SMTs यहां से ट्रेनिंग लेकर राज्य स्तरीय प्रोसेस लैब्स में जाएंगे और वहां से जिला मास्टर ट्रेनर्स (DMTs) को तैयार करेंगे. इसके अलावा सिविल सोसायटी संगठनों को भी ट्रेनिंग में जोड़ा गया है ताकि स्थानीय स्तर पर लोग इससे जुड़ सकें. मंत्रालय जल्द ही "आदिकारिता नेशनल मीट" का आयोजन करेगा. इसमें सबसे अच्छे SMTs और DMTs को "कर्मयोगी" सम्मान से नवाजा जाएगा.

गाजियाबाद- प्लूटो होटल में लगी आग, फायर ब्रिगेड की 5 गाड़ियों ने पाया काबू

स्वतंत्र प्रभात

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले में सोमवार को आग लगने की दो घटना सामने आई। साहिबाबाद स्थित पेपर फैक्ट्री में आग लगने की घटना के बाद एक होटल में भी आग लगने की घटना सामने आई। जिसके बाद फायर विभाग की पांच गाड़ियों को कड़ी मशक्कत कर आग पर काबू पाया। गाजियाबाद के साहिबाबाद में स्थित प्लूटो होटल में सुबह 5~29 बजे आग लगने की खबर मिली। इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। फायर विभाग के अनुसार, उस समय साहिबाबाद फायर स्टेशन की गाड़ियां साइट-4 में एक पेपर फैक्ट्री में लगी आग को बुझाने में व्यस्त थीं। जैसे ही होटल में आग की सूचना मिली, गाजियाबाद के मुख्य अग्निशमन अधिकारी ने कोतवाली और वैशाली के अग्निशमन अधिकारियों को 5 फायर टेंडर और यूनिट के साथ तुरंत घटनास्थल पर भेजा।

घटनास्थल पर पहुंचकर फायर विभाग के कर्मचारियों ने घटनास्थल पर जाकर देखा तो आग होटल की छत पर बने किचन, स्टोर तथा होटल के एलिवेशन में लगी थी। आग काफी तेज थी, तेजी से फैल रही थी, और हर तरफ धुआं ही धुआं था। आग पर पहुंचने के लिए पर्याप्त रास्ता ना मिलने के कारण फायर यूनिट ने शीघ्रता से लम्बी होज लाइन फैलाकर होटल के पीछे की तरफ से दूसरी बिल्डिंग पर बनी सीढ़ियों से फायर फाइटिंग करना शुरू किया और एक यूनिट ने होटल के सामने वाले हिस्से से फायर फाइटिंग करना शुरू किया।

दमकल की कुल 5 गाड़ियों ने कड़ी मशक्कत कर आग पर काबू किया। गनीमत की बात रही कि इस आग से कोई जनहानि नहीं हुई है। वहीं, गाजियाबाद के औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद में रविवार देर रात पेपर रोल फैक्ट्री में लगी आग पर काबू पाने की कोशिश लगातार जारी है। फायर ब्रिगेड की 18 गाड़ियां आग पर काबू पाने की कोशिश कर रही हैं। आग की भयावहता को देखते हुए आसपास के इलाके को खाली कराया गया है। इस आग पर काबू पाने के लिए अन्य जनपदों से भी फायर ब्रिगेड की गाड़ियां बुलाई गई हैं।

गुरु पूर्णिमा पर अयोध्या, प्रयागराज और वाराणसी में उमड़े श्रद्धालु, लगाई आस्था की डुबकी

स्वतंत्र प्रभात

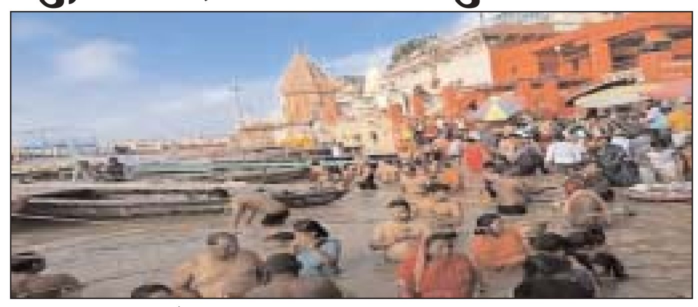

प्रयागराज । गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर आज देश भर से श्रद्धा, भक्ति और आस्था की तस्वीरें सामने आई। अयोध्या का सरयू तट हो, प्रयागराज का त्रिवेणी संगम या काशी का गंगा घाट, हर जगह श्रद्धालु उमड़ पड़े। स्नान, पूजन और गुरु वंदना के माध्यम से लोगों ने अपने श्रद्धाभाव को प्रकट किया। अयोध्या धाम में इस बार गुरु पूर्णिमा का पर्व बेहद भव्य और ऐतिहासिक रहा। सरयू नदी के पवित्र घाटों पर श्रद्धालु तड़के ब्रह्म मुहूर्त से ही जुटने लगे। महिलाओं, पुरुषों और बच्चों ने पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ स्नान कर मां सरयू का आशीर्वाद लिया। इसके बाद श्रद्धालु मठ-मंदिरों में पहुंचकर अपने गुरुओं के दर्शन व आशीर्वाद प्राप्त करते नजर आए। चारों ओर हर-हर महादेव और जय गुरु देव के जयकारे गूंजते रहे।

प्रयागराज में भी गुरु पूर्णिमा पर भक्तों का जनसैलाब त्रिवेणी संगम पर उमड़ा। देश के कोने-कोने से आए श्रद्धालु गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम में स्नान कर पुण्य लाभ कमा रहे हैं। स्नान के बाद लोग दान-दक्षिणा देकर अपने मठों और संतों की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। देश के कोने-कोने से श्रद्धालु ब्रह्म मुहूर्त से ही त्रिवेणी की पावन धारा में आस्था की डुबकी लगाने के साथ-साथ दान पूर्ण कर रहे हैं। प्रयागराज में सुरक्षा व्यवस्था के भी पुख्ता इंतजाम किए गए। घाटों पर पुलिस और स्वयंसेवकों की तैनाती रही।

श्रद्धालु राकेश कुमार त्रिपाठी ने कहा कि गुरु पूर्णिमा के दिन गंगा में डुबकी लगाकर मां गंगा का आशीर्वाद लिया और पंडित जी को दान-दक्षिणा दी। अब अपने संत-महात्माओं से आशीर्वाद लेंगे और सत्संग में भाग लेंगे। वहीं, एक अन्य श्रद्धालु ने कहा कि गुरु पूर्णिमा आत्मा की जागृति का दिन है। गुरु ही वह शक्ति है जो हमें परमात्मा से जोड़ती है और सही मार्ग दिखाती है।

गुरु पूर्णिमा को लेकर पुरोहित गोपाल दास ने कहा कि गुरु की महिमा का उत्सव मनाने का दिन ही गुरु पूर्णिमा है। गुरु ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग दिखाते हैं।

अयोध्या और प्रयागराज के अलावा, वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। हालांकि गंगा का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है और घाट की सीढ़ियां जलमग्न हो चुकी हैं, लेकिन श्रद्धा में कोई कमी नहीं दिखी। लोग सुरक्षित स्थानों से गंगा स्नान कर रहे थे। कई श्रद्धालु पानी में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देते और गंगा जल से पूजन करते नजर आए। प्रशासन ने यहां भी सुरक्षा के व्यापक इंतजाम कर रखे हैं।

एनडीआरएफ और जल पुलिस की टीमें भी सतर्क रहीं। बनारस में स्नान के बाद श्रद्धालु बाबा विश्वनाथ के दर्शन के लिए निकल पड़े। मध्य प्रदेश के विदिशा से आए जय राम पटेल ने कहा कि हम गुरु पूर्णिमा पर गंगा स्नान करने आए हैं। इसके बाद बाबा विश्वनाथ के दर्शन करेंगे। वहीं, कमलेश मिश्रा ने कहा कि काशी का महत्व अवर्णनीय है। यह हमारा सौभाग्य है कि हम यहां आकर स्नान कर सके।

गाजियाबाद में साइबर फ्रॉड गिरोह बेनकाब, बीमा और बिटकॉइन के नाम पर ठगी, 5 गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

गाजियाबाद। गाजियाबाद के थाना साइबर क्राइम टीम ने एक बड़े साइबर ठगी गिरोह का पर्दाफाश करते हुए पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपी खुद को विभिन्न बीमा कंपनियों का प्रतिनिधि या बीमा लोकपाल बताकर लोगों से संपर्क करते थे और बीमा पॉलिसी में अधिक मुनाफा दिलाने और पॉलिसी की रकम को बिटकॉइन में निवेश के नाम पर ठगी करते थे। पुलिस ने इनके कब्जे से 5 मोबाइल फोन, एक लैंडलाइन डिवाइस, दो चेक, एक एटीएम कार्ड, एक लग्जरी कार, 1.83 लाख रुपए नकद बरामद किए हैं।

पुलिस के अनुसार, अब तक गैंग कुल 44 लाख रुपए की साइबर ठगी की घटनाओं को अंजाम दे चुका है। पुलिस उपायुक्त धवल जायसवाल ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों के नाम रवि प्रताप, विकास कुमार, नवीन, अनुज और गुंजन हैं। इन सभी का आपराधिक इतिहास भी रहा है और पुलिस द्वारा उनकी पृष्ठभूमि की जांच की जा रही है।

आरोपियों ने पहले अलग-अलग कॉल सेंटर्स में काम किया था, जिससे उनके पास बीमा धारकों का डाटा पहुंचा। इसी डाटा के आधार पर आरोपी लोगों से संपर्क करते थे और उन्हें बताते थे कि उनकी बीमा पॉलिसी की राशि को बिटकॉइन में बदला जा रहा है, लेकिन इसके लिए कुछ रजिस्ट्रेशन शुल्क और अन्य प्रोसेसिंग फीस देनी होगी। लालच में आकर जब पीड़ित रकम भेजते थे, तो आरोपी उनसे संपर्क बंद कर देते थे। यही नहीं, इन लोगों ने बीमा कंपनियों की वेबसाइट जैसी दिखने वाली नकली वेबसाइट भी बनाई थी, जिसमें अपने नंबर डाल रखे थे ताकि लोग भ्रमित होकर उनसे ही संपर्क करें। साइबर थाना पुलिस की इस सफलता पर टीम को 25,000 रुपए का नकद पुरस्कार भी दिया गया है। पुलिस अब आरोपियों के पुराने मामलों और अन्य पीड़ितों की जानकारी इकट्ठा करने में जुटी है।

कन्वर्जन, कलेक्शन और मिडिल ईस्ट कनेक्शन...अब ED खोलेगी छांगुर बाबा की 'कैश कुंडली'

● **जमालुद्दीन उर्फ छांगुर बाबा पर मनी लांड्रिंग के आरोपों में ईडी ने जांच शुरू कर दी है. आरोप है कि उसने धार्मिक भाषणों और विदेशी फंडिंग से गरीबों का धर्म परिवर्तन कराया. पूछताछ में 40 अलग-अलग बैंक खातों में ?106 करोड़ रुपये का खुलासा हुआ है. ज़्यादातर पैसा मिडिल ईस्ट से आया है.**

स्वतंत्र प्रभात

उत्तर प्रदेश के बलरामपुर का जमालुद्दीन उर्फ छांगुर बाबा सुर्खियों में है. यूपी एटीएस ने बीते दिनों उसे और उसकी सहयोगी नीतू उर्फ नसरीन को अरेस्ट किया था. आरोप है कि वो राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में शामिल होने के साथ ही उसने अवैध धर्मांतरण का जाल फैला रखा था. गिरफ्तारी के बाद कई बड़े खुलासे हो चुके हैं. अब इस मामले में ईडी की भी एंट्री हो गई है. एटीएस की एफआईआर के बाद अब प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मनी लॉन्ड्रिंग की जांच शुरू की है

प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने 9 जुलाई 2025 को ECIR/LKZO/29/2025 दर्ज कर जांच शुरू की है. इसमें मुख्य आरोपी जमालुद्दीन उर्फ छांगुर बाबा (असली नाम करीमुल्ला शाह) है. वो मधपुर बलरामपुर का रहने वाला है. इसके साथ ही नीतू उर्फ नसरीन भी इसमें शामिल है. आरोप है कि छांगुर शिजरा-ए-तय्यबा नामक किताब, धार्मिक भाषण और मानसिक प्रभाव के जरिए गरीबों, दलितों और हिंदू समुदायों को धर्मांतरण के लिए प्रेरित करता था।

106 करोड़ रुपये की संपत्ति का खुलासा

चांद औलिया दरगाह से संगठित कार्यक्रम में विदेशी नागरिक भी शामिल होते थे. मुख्य रूप से मध्य-पूर्व देशों से आए फंड के जरिए नेटवर्क को आर्थिक मदद मिलती थी. आरोपी के पास ?106 करोड़ का खुलासा हुआ है. जमालुद्दीन उर्फ करीमुल्ला शाह ने धार्मिक भ्रम फैलाकर बड़े पैमाने पर जबरन धर्मांतरण कराया. एफआईआर के मुताबिक, छांगुर ने धार्मिक प्रवचनों, शिजरा-ए-तय्यबा नाम की किताब और विदेशी फंडिंग के जरिए खासकर दलितों और गरीब हिंदुओं का धर्मपरिवर्तन कराया।

ज़्यादातर पैसा मिडिल ईस्ट से आया

छांगुर बाबा ने बहराइच-बालरामपुर इलाके में गैरकानूनी तरीके से करीब ?100 करोड़ की संपत्ति बनाई. कई जमीनों पर बिना अनुमति निर्माण भी करवाया. एटीएस ने 5 जुलाई को उसे और उसकी साथी नीतू उर्फ नसरीन को लखनऊ के एक होटल से गिरफ्तार किया था. पूछताछ में 40 अलग-अलग बैंक खातों में 106 करोड़ रुपये का खुलासा हुआ है. ज़्यादातर पैसा मिडिल ईस्ट से आया है।

जल्द छांगुर बाबा को रिमांड पर लेगी ईडी

ईडी ने ‍ऋस और जिला प्रशासन से छांगुर बाबा और उसके साथियों की संपत्ति, बैंक अकाउंट और कंपनियों की जानकारी मांगी है. कई बैंकों को ईमेल भेजकर बाबा के खातों की डिटेल भी मंगाई गई है. छांगुर बाबा के अवैध निर्माणों को तोड़ने की कार्रवाई भी जिला प्रशासन ने शुरू कर दी है. ईडी जल्द छांगुर बाबा को रिमांड पर लेकर पूछताछ करेगी. फिलहाल, छांगुर बाबा और नीतू उर्फ नसरीन को 7 दिन की रिमांड पर लेकर एटीएस पूछताछ कर रही है।

बुखार की दवा लेने गए बुजुर्ग की हुई मौत बिना जॉच के ग्लूकोज चढ़ाने का आरोप, झोलाछाप डॉक्टर फरार

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर जनपद सीतापुर के पिसावा थाना क्षेत्र के कोटरा गांव में एक बुजुर्ग की मौत का मामला सामने आया है मंगलवार शाम को बाबूराम (60) को मामूली बुखार था वह नेरी मार्ग स्थित एक मेडिकल दुकान पर पहुंचे यहां कथित डॉक्टर नीरज पांडे ने उनका इलाज किया परिजनों ने बताया कि बाबूराम ने केवल बुखार की दवा मांगी थी नीरज पांडे ने बिना जांच के उन्हें ग्लूकोज चढ़ा दिया इसके कुछ देर बाद ही बाबूराम की हालत बिगड़ गई उनकी मौके पर ही मौत हो गई।

घटना के बाद नीरज पांडे दुकान बंद कर फरार हो गया मृतक के बेटे रोहित ने पिसावां थाने में शिकायत दर्ज कराई है थाना प्रभारी वीरेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। मामले की जांच की जा रही है पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी ग्रामीणों में इस घटना को लेकर रोष है उनकी मांग है कि अनधिकृत चिकित्सा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाए परिजनों का कहना है कि बाबूराम पूरी तरह स्वस्थ थे उन्हें सिर्फ मामूली बुखार था लापरवाहीपूर्वक इलाज की वजह से उनकी जान चली गई!

संक्षिप्त खबरें

शिक्षक के साथ हुई लूट का खुलासा घटना में प्रयुक्त आटो व लूटा गया माल बरामद

कानपुर। कोतवाली बाबूपुरवा पुलिस ने टाटमील चौराहे और रामादेवी के बीच में हुई एक शिक्षक के साथ लूट की घटना का सफल अनावरण किया है। पुलिस उपायुक्त दक्षिण दीपेंद्र नाथ चौधरी ने बताया कि फतेहपुर निवासी योगेन्द्र प्रताप सिंह अस्पताल में भर्ती अपने किसी रिश्तेदार को देखने कानपुर आए थे। जब वह आटो द्वारा टाटमील चौराहे से रामादेवी की तरफ जा रहे थे तभी आटो वाले ने आटो रामादेवी की तरफ न ले जाकर

सूनसान जगह गली में मोड़ दिया। जब योगेन्द्र ने कहा तो बोल ये दो अन्य सवारी को यहां छोड़ना है इसके बाद आपको छोड़ देंगे। आटो में दो अन्य लोग बैठे थे। तीनों ने मिलकर सूनसान जगह पर योगेन्द्र के मोबाइल छीन लिये व 6000 रुपए छीन लिये। योगेन्द्र ने जब इसकी सूचना बाबूपुरवा थाने में दी तो लूट की घटना की एफआईआर लिखकर सीसीटीवी द्वारा उस आटो व व्यक्ति की पहचान की अभियुक्त बाबू पुरवा क्षेत्र के रहने वाले हैं। पुलिस ने इजहार अली, आरिफ और मोहम्मद दानिश को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से एक मोबाइल 1150 रुपए तथा घटना में प्रयुक्त आटो बरामद हुआ है। एक अभियुक्त अभी फरार है।

राजेंद्र गुप्ता को प्री-स्टेट शूटिंग प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सम्मानित किया गया

मथुरा में 1 से 5 जुलाई तक आयोजित उत्तर प्रदेश प्री-स्टेट शूटिंग प्रतियोगिता में अयोध्या मंडल के खिलाड़ी राजेंद्र गुप्ता ने शानदार प्रदर्शन कर गोल्ड मैडल हासिल किया। इस अवसर पर आई.जी. रेंज अयोध्या मंडल के श्री प्रवीण कुमार द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। 68 वर्षीय राजेंद्र गुप्ता ने यह सिद्ध कर दिया कि उम्र कभी भी लक्ष्य की राह में बाधा नहीं बन सकती। उन्होंने जिला रायफल क्लब अयोध्या में कठोर परिश्रम और समर्पण से प्रशिक्षण प्राप्त किया और पूरे उत्तर प्रदेश में अयोध्या का नाम गौरव से ऊँचा किया। आई.जी. रेंज अयोध्या के श्री प्रवीण कुमार ने इस सफलता पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि, "जिला रायफल क्लब अयोध्या के खुलने से अब यहाँ के खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। कोच श्री शनि कुमार वर्मा की मेहनत और मार्गदर्शन का ही यह परिणाम है कि अयोध्या के खिलाड़ी लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।"इस सम्मान समारोह में राष्ट्रीय खिलाड़ी श्री जैनुल खान भी उपस्थित रहे और उन्होंने श्री गुप्ता को शुभकामनाएँ दीं।

जानलेवा हमले में बुजुर्ग की मौत पर 04 अभियुक्तों की और हुई गिरफ्तारी

प्रतापगढ़। बीते 06 जुलाई को वादिनी व वादिनी के परिजनों के साथ आरोपी गणों द्वारा लाठी डंडा से मारपीट गाली गलौज जान से मारने की धमकी देने आदि के प्रकरण में थाना कोहड़ौर पर 12 नामजद व 06 व्यक्ति अज्ञात का अभियोग पंजीकृत किया गया। इलाज के दौरान बुजुर्ग बाबूलाल की प्रयागराज में मृत्यु हो गई। थाना कोहंडौर थानाध्यक्ष धनन्जय राय मय हमराह तलाश वांछित के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना कोहंडौर में दर्ज मुकदमे में वांछित 04 अभियुक्तों विनोद मिश्रा पुत्र मनोज कुमार मिश्रा निवासी पूरे कुमार सूर्यगढ़,नीतेश कुमार दुबे उर्फ मुकुन्द पुत्र सुनील कुमार दुबे उर्फ पिन्टू निवासी सुन्दरिया का पुरवा सूर्यगढ़,प्रिंस मिश्रा उर्फ छोटू पुत्र अनूप कुमार मिश्रा उर्फ आले निवासी पूरे कुमार सूर्यगढ़ व रंजीत कुमार दुबे पुत्र रवीन्द्र भूषण दुबे निवासी पूरे कुमार सूर्यगढ़ सभी थाना कोहड़ौर जनपद प्रतापगढ़ को थाना कोहंडौर क्षेत्रान्तर्गत भिन्न-भिन्न स्थानों से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

कानपुर स्वस्थ्य विभाग कर्मचारियों को अल्टीमेटम, हरिदत्त नेमी के पास कोई अधिकार नहीं

●स्वास्थ्य निदेशालय ने शुरू कर दी है डॉ हरिदत्त नेमी की जांच सीएमओ डॉ उदयनाथ ने कहा कि जांच चलने तक हरिदत्त नेमी के पास नहीं है कोई अधिकार

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। कानपुर का सीएमओ विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। आज दूसरे दिन निलंबित सीएमओ डॉ हरिदत्त नेमी ने कार्यालय आते ही वर्तमान सीएमओ डॉ उदयनाथ की नेमप्लेट हटवाकर अपनी प्लेट लगवा दी। वहीं वर्तमान सीएमओ डॉ उदयनाथ ने जनपद के समस्त स्वास्थ्य अधिकारियों व कर्मचारियों को एक सर्कुलर जारी किया है और उसमें कहा है कि डॉ हरिदत्त नेमी के खिलाफ शासन की जांच चल रही है अतः समस्त हस्ताक्षर, कार्य अधोहस्ताक्षरी के निर्देशानुसार ही संपादित कराए जाएं। चिकित्सा अनुभाग 2 उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ द्वारा कल एक पत्र जारी किया गया था जिसमें डॉ हरिदत्त नेमी के ऊपर आरोप लगाते हुए कहा गया था कि उनके द्वारा रिक्त पदों की चयन प्रक्रिया में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के दिशा निर्देशों के अनुपालन न किये जाने, शासनादेश के विपरीत शाशन द्वारा प्रदत्त वित्तीय शक्तियों का प्रत्याहरण किये जाने, नियम विरुद्ध स्थानांतरण किये जाने के आरोपों की जांच हेतु निदेशक प्रशासन को जांच सौंपी गई है। और हरिदत्त नेमी को निर्देशित किया गया है कि जांच में वो सहयोग प्रदान करेंगे।

इधर आज सीएमओ डॉ उदयनाथ ने एक सर्कुलर जारी किया है कि पूर्व सीएमओ डॉ हरिदत्त नेमी की जांच की जा रही है अतः उनकी जांच प्रक्रिया पूरी होने तक कोई भी आदेश शासन व महानिदेशालय को पत्राचार, डाक, डिस्पैच, रिसीव, वित्तीय, राजकीय वाहन का उपयोग अधोहस्ताक्षरी यानि कि डॉ उदयनाथ द्वारा ही संपादित कराया जाये। सर्कुलर में स्पष्ट लिखा है कि इसकी अवहेलना किसी ने की तो उसके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। इधर कानपुर नगर के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी व कर्मचारी बड़े ही पशोपेश में पड़ गए हैं कि किसकी बात मानें और किसकी नहीं क्योंकि एक हाईकोर्ट का स्टे आर्डर ले कर आये हैं जब कि एक शासन के द्वारा नियुक्त किए गए हैं। आज सुबह डॉ हरिदत्त नेमी जैसे ही कार्यालय आये आते ही उन्होंने आफिस के बाहर लगी नेमप्लेट को हटवाया और अपनी नेमप्लेट लगवा दी। अब देखना यह है कि विभागीय अधिकारी और कर्मचारी किसका आदेश मानते हैं और किसका नहीं।

जनपद स्तरीय वृहद रोजगार मेला का आयोजन 14 जुलाई को

●विश्व युवा कौशल दिवस पर 15 जुलाई को सेवायोजित प्रशिक्षणार्थी कौशल यूथ ऑइकन से होगे सम्मानित

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। जिला समन्वयक/नोडल प्रधानाचार्य उ0प्र0 कौशल विकास मिशन आलोक कुमार ने बताया है कि 14 जुलाई को उ0प्र0 कौशल विकास मिशन एवं राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में जनपद स्तरीय वृहद रोजगार मेला एवं 15 जुलाई को विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के प्रचार प्रसार हेतु वृहद जनपद स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान परिसर टाटा टेक्नॉलाजी वर्कशाप प्रतापगढ़ में पूर्वान्ह 10 बजे किया जाना प्रस्तावित है। नोडल प्रधानाचार्य आलोक कुमार ने बताया है कि जनपद स्तरीय वृहद रोजगार मेला में देश व प्रदेश की प्रतिष्ठित नियोक्ता कम्पनियां जीएमआर, सुजूकी, ग्रासिम, पैराग्रीन सिक्योरिटी, केयर हेल्थ प्रा0लि0 इत्यादि द्वारा प्रतिभाग करते हुये लगभग 1000 से अधिक जनपद के 18 से 35 आयु वर्ग के अल्प शिक्षित बेरोजगार युवक युवतियों को रोजगार/ स्वरोजगार में सेवायोजित कराया जायेगा।

उन्होने यह भी बताया है कि 15 जुलाई को विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर विगत 02 वर्षो में सेवायोजित प्रशिक्षणार्थी को विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर जनप्रतिनिधियों एवं जनपद के उच्चाधिकारियों द्वारा ''कौशल यूथ ऑइकन'' से सम्मानित किया जायेगा तथा रोजगार मेले में नियुक्ति प्राप्त प्रशिक्षणार्थियों में से न्यूनतम 11 को नियुक्ति पत्र का वितरण किया जायेगा।

शांतिभंग में आरोपी को दबोचा, गया जेल

लालगंज, प्रतापगढ़। धार्मिक भावना भड़काने का प्रयास करने के आरोप में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर शांति व्यवस्था भंग करने के आरोप में उसका चालान किया गया है। मामले की सुनवाई करते हुए एसडीएम कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया। लीलापुर थानान्तर्गत खरगपुर निवासी रमेश मौर्य पुत्र राम नारायण मौर्य ने बुधवार देर शाम गांव में अफवाह फैलायी कि गांव में नदी के समीप स्थापित शिवलिंग को खण्डित कर दिया गया है। आरोपी ने शिवलिंग को खण्डित करने को लेकर गांव के ही एक परिवार पर रंजिशन आरोप मढ़ा। मामले की जानकारी होने पर पुलिस टीम पहुंची तो उसे जांच में शिवलिंग सही दशा में मिला। इस पर पुलिस आरोपी को पकड़कर थाने ले आयी और उसका शांतिभंग में चालान कर दिया। इस पर मामले की सुनवाई करते हुए एसडीएम कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया। प्रभारी निरीक्षक मनोज पाण्डेय का कहना है कि धार्मिक भावना भड़काने के प्रयास में आरोपी को गिरफ्तार किया गया। सुनवाई के बाद एसडीएम कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया।

बुंदेलखण्ड के किसानों की जमीनों पर है उद्योगपतियों की नगर- राकेश

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट- भाकियू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश सिंह टिकैत ने गुरुवार को धर्मनगरी का एक दिवसीय दौरा किया। इस दौरान उन्होंने बुंदेलखण्ड के किसानों द्वारा अन्ना प्रथा को लेकर एक अगस्त से प्रस्तावित आंदोलन का पुरजोर समर्थन करने की अपील की। जनपद के एक दिवसीय दौरे में आए भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश सिंह टिकैत ने गुरुवार को पटेल चौक पर भारत रत्न सरदार बल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा में माल्यार्पण किया। इसके बाद उन्होंने कृषि भवन में किसानों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने पत्रकारों के साथ किसानों की समस्याओं पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि बुंदेलखंड में किसानों की जमीनों पर उद्योगपतियों की नजर हैं। बुन्देलखण्ड का किसान भूमि अधिग्रहण की चपेट में है। देश के किसानो को अपनी फसलों का सही दाम नहीं मिल पा रहा है, सही दाम के लिए देश में एमएसपी गारंटी कानून लागू होना चाहिए। कहा कि बुंदेलखंड में अन्ना गोवंश भी किसानों के लिए बड़ी समस्या है। सरकार बड़ी नन्दी गोशालाओं का निर्माण कर बुंदेलखंड के किसानो को अन्ना जानवरों से मुक्त कराएं। इसके अलावा उन्होंने विद्युत विभाग के निजीकरण का भी विरोध किया। साथ ही खाद की समस्याओं को लेकर कहा कि समय से डीएपी और यूरिया न मिलने से किसानों को परेशानी होती है। इसके अलावा खाद लेने वाले किसानों को नैनो यूरिया जबरन थमाई जाती है, जबकि इसका कोई लाभ खेती में नहीं मिलता है। नैनो यूरिया लेने के लिए किसानों पर दबाव नहीं बनाना चाहिए। बताया कि इन समस्याओं को लेकर जनपद में आगामी एक अगस्त से आंदोलन किया जाएगा। साथ ही आगामी 15 अगस्त को पूरे देश में ट्रैक्टर तिरंगा यात्रा भी निकाली जाएगी। सरकार स्कूल बंद कर रही है, जो किसानों व मजदूरों को अनपढ़ बनाने की सोची समझी साजिश है। सरकार को बेरोजगारी पर ध्यान देने की जरूरत है। भाकियू किसान हितों के मुद्दों को लेकर संघर्ष करता है, भूमि अधिग्रहण के मुद्दे पर सारी पार्टियों का एजेंडा किसानों की जमीन छीनने का रहता है। पांच किलो राशन देकर किसानों की जमीन छीनने का षडयंत्र चल रहा है। आने वाले चुनाव में किसकी सरकार बनेगी यह बात सत्ता पक्ष या विपक्ष के लोग कह सकते है। भाकियू को चुनावी राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। इस मौके पर भाकियू युवा विंग के प्रदेश अध्यक्ष अनुज सिंह, जिलाध्यक्ष राम सिंह राही, ब्लॉक अध्यक्ष नरेश सिंह, तीरथ सिंह, फौजी कमलेश सिंह, शिव सिंह, श्रीकेशन राजपूत, रामेश्वर, संत गोपाल, जिला मीडिया प्रभारी देवेन्द्र सिंह आदि मौजूद रहे।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव ने किया जिला कारागार का निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट – उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ से प्राप्त कार्य योजना के अनुक्रम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष जनपद न्यायाधीश राकेश कुमार त्रिपाठी के निर्देशन में गुरुवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव वर्णिका शुक्ला ने जिला कारागार का निरीक्षण किया। साथ ही विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन कर बंदियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। जिला कारगार में प्राधिकरण सचिव ने महिला बैरक का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जहां 14 दोष सिद्ध महिला बन्दी व 15 विचाराधीन महिला बन्दी निरूद्ध पायी गयी। निरूद्ध महिला बन्दियों में से एक दोष सिद्ध महिला बन्दी 70 वर्ष से अधिक उम्र की है। महिलाओं के साथ तीन बच्चे भी पाये गये। निरूद्ध महिला बन्दियों से निःशुल्क अधिवक्ता व जेल अपील के बारे में वार्ता की गयी। यह भी बताया गया कि किसी बन्दी को किसी भी प्रकार की समस्या हो तो जिलाकारागार चित्रकूट में संचालित लीगल एड क्लीनिक में कार्यरत अधिकार मित्र को अवगत कराकर अपनी समस्या के समाधान के लिए जेल अधीक्षक के माध्यम से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को अवगत करा सकते हैं।

इसके बाद प्राधिकरण सचिव ने जेल लीगल एड क्लीनिक का निरीक्षण किया गया। जिसमें अनुरक्षित पंजिकाओं को देखा गया। जिसमें विधिक सहायता प्राप्त करने वाले बन्दियों का विवरण उचित रूप से जेल अधिकार मित्रों द्वारा अंकन किया गया था। अन्तिम प्रवृष्टि बीती 30 जून की पायी जाने पर जेल अधीक्षक को निर्देशित किया गया कि पंजिका में सम्पूर्ण प्रवृष्टि दर्ज कराना सुनिश्चित करें। इस अवसर पर कुश कुमार सिंह अधीक्षक जिला कारागार, सुनील कुमार वर्मा जेलर, डिप्टी जेलर रजनीश कुमार सिंह, कौशलेन्द्र मिश्रा, प्रमोद कुमार कनौजिया, बृजकिशोरी आदि मौजूद रहे। इसके अतिरिक्त सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा बताया गया कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार पूरे राष्ट्र में मध्यस्थता अभियान आगामी 30 सितम्बर तक संचालित किया जा रहा है, जिसमें छोटे-छोटे मामले, जो वैवाहिक प्रकृति, घरेलू हिंसा, चेक बाउन्स, भरण पोषण, आदि से सम्बन्धित हो को, आपसी सुलह के आधार पर निस्तारित किये जायेंगें। यदि कोई विचाराधीन बन्दी अपने ऐसे मामलों का सुलह के आधार पर समझौता कराना चाहते हैं, तो लीगल एड क्लीनिक के माध्यम से प्रार्थना पत्र कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में प्रेषित कर सकते हैं।

स्पोर्ट्स स्टेडियम में कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन हुआ

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। स्पोर्ट्स स्टेडियम में गुरुवार को जिला स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता का शानदार आयोजन हुआ,जिसमें 45 किलोग्राम में विवेक प्रथम, अभय सेकंड, शालू यादव थर्ड तथा राजन थर्ड स्थान प्राप्त किया।48 किलोग्राम में अरविंद प्रथम, सूरज सेकंड, आयुष थर्ड, अंकित थर्ड स्थान प्राप्त किया। 51 किलोग्राम में विनीत गुप्ता प्रथम, अंकित सेकंड, देव थर्ड, अनुराग थर्ड रहे।55 किलोग्राम भार में धर्मेंद्र प्रथम, प्रिंस द्वितीय, शुभम तृतीय, आयुष तृतीय स्थान प्राप्त किया। 60 किलोग्राम भार में हिमांशु फर्स्ट, सुशील यादव सेकंड, कुणाल थर्ड, उत्कर्ष सरोज थर्ड रहे।65 किलोग्राम भार में सलमान फर्स्ट, कुलदीप सेकंड, अरिहंत पाल थर्ड, व प्रभात थर्ड रहे।71 किलोग्राम भार में कौशल फस्ट, आदित्य सेकंड, पंकज कुमार पाल थर्ड व सुधांशु थर्ड स्थान प्राप्त किया। 80 किलोग्राम भार में प्रिंस यादव फर्स्ट, आयुष प्रताप सेकंड, करण थर्ड स्थान प्राप्त किया। 92 किलोग्राम में शालू फर्स्ट, समरजीत सेकंड,अर्णव थर्ड, शिवम थर्ड स्थान प्राप्त किया। 110 किलोग्राम भार में अमित फस्ट, प्रियांशु सेकंड, प्रभात थर्ड,रुद्रांश गुप्त थर्ड स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का संपन्न कराने में निर्णायकों में अरविंद कुमार, मनोज कुमार यादव, दर्शन यादव, आलोक रंजन, दिव्या यादव, सोमनाथ यादव, निखिल कुमार, पप्पू रमेश, जय बहादुर सिंह, सत्यनारायण यादव सहित स्टेडियम के सारे प्रशिक्षक उपस्थित रहे। इसके पूर्व प्रतियोगिता का उद्घाटन नवीन कुमार यादव वरिष्ठ कुश्ती प्लेयर रहे। कार्यक्रम का संचालन उप कीड़ा अधिकारी श्री रणजीत यादव ने किया तथा समापन के अवसर पर जिला कुश्ती संघ के सचिव जय बहादुर सिंह सत्यनारायण यादव आदि उपस्थित रहे।अंत में क्रीड़ा अधिकारी श्रीमती पूनम लता राज ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

'मानविका' शब्द का प्रस्ताव किया और प्रत्येक वर्ष 10 जुलाई को मानविका उत्सव दिवस के रूप में मनाने की घोषणा

स्वतंत्र प्रभात

अयोध्या- 10 जुलाई आज अयोध्या की पवित्र भूमि से महिलाओं के जीवन से जुड़े एक संवेदनशील विषय पर एक ऐतिहासिक पहल हुई। सामाजिक कार्यकर्ता और युवा चिंतक अभिषेक सावंत ÷रामानुगामी÷ ने मासिक धर्म को एक नई भाषा, दृष्टि और आत्मसम्मान से जोड़ने हेतु 'मानविका' शब्द का प्रस्ताव किया और प्रत्येक वर्ष 10 जुलाई को "मानविका उत्सव दिवस"के रूप में मनाने की घोषणा की। यह केवल भाषाई प्रयोग नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति है। अभिषेक का मानना है कि भाषा बदलने से सोच बदलती है। जिस प्रकार 'विकलांग' को 'दिव्यांग' कहा गया, उसी प्रकार मासिक धर्म को अब "मानविका" कहा जाए। इस शब्द में मानवता, नारीत्व और जैविक गरिमा का समावेश है।

मानविका उत्सव संवाद, समझ, जागरूकता और सम्मान का अभियान है। इसमें विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में नाटक, पोस्टर, निबंध प्रतियोगिता, स्वास्थ्य शिविर, मानविका मित्र क्लब की स्थापना सहित विविध रचनात्मक गतिविधियाँ होंगी। यह अभियान ग्रामीण, शहरी और सामाजिक रूप से कमजोर वर्गो तक पहुँचेगा। अभिषेक सावंत ने बताया कि यह आंदोलन पहले चरण में उत्तर प्रदेश के 75 जनपदों में चलेगा। स्थानीय सामाजिक संगठनों, छात्र समूहों, महिला मंडलों और चिकित्सकों के सहयोग से जिलेवार समितियाँ गठित की जाएंगी। 10 जुलाई को 'मानविका उत्सव दिवस'के रूप में राज्य मान्यता दिलाने हेतु प्रस्ताव भी सरकार को सौंपा जाएगा।

आँकड़ों के अनुसार, भारत में 23त्न किशोरियाँ मासिक धर्म के बाद स्कूल छोड़ देती हैं, 70% को कोई पूर्व जानकारी नहीं होती, और अधिकांश आज भी असुरक्षित साधनों का उपयोग करती हैं। इस पृष्ठभूमि में 'मानविका 'केवल शब्द नहीं, सम्मान, शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़ा आंदोलन है। यह अभियान अयोध्या में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में प्रारंभ हुआ है, जहाँ अगले तीन महीनों में व्यापक जनसंपर्क, स्वास्थ्य शिविर, संवाद और जागरूकता गतिविधियाँ की जाएंगी। यह कार्य शहरी मोहल्लों से लेकर ग्रामीण पंचायतों तक विस्तारित होगा। इस आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने हेतु सोशल मीडिया, डॉक्यूमेंट्री, संवाद श्रृंखला और डिजिटल प्रचार सामग्री का उपयोग किया जाएगा। मानविका उत्सव सिर्फ एक दिन नहीं, बल्कि सालभर चलने वाला एक जन आंदोलन होगा।

अंत में अभिषेक ने कहा - मैं चाहता हूं कि वह बच्ची, जो आज भी मासिक धर्म पर बोलने से डरती है, वह आत्मविश्वास से कहे - 'मैं मानविका हूं।' यही इस आंदोलन का उद्देश्य है। 'यह पहल केवल एक नाम नहीं, एक नई पहचान है - जिसमें गरिमा है, ज्ञान है और सहजता है।

स्कूलों के मर्जर करने का विरोध कर सपा ने ज्ञापन सौंपा

●सपा 15 अगस्त को महानगर के 435 बंद प्राथमिक विद्यालय पर झंडा रोहण करेगी- फजल महमूद

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। सपा महानगर अध्यक्ष फजल महमूद के नेतृत्व में जिला अधिकारी के प्रतिनिधि माननीय यदुवेंद्र वैश्य ए सी एम तृतीय को महामहिम राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन सौंप कर मांग की है कि भाजपा सरकार ने प्रदेश में 5000 विद्यालयों को बंद कर तथा महानगर के 435 विद्यालयों को बंद करके प्राथमिक शिक्षा का अधिकार छीन कर संविधान के सिद्धांतों को नजरअंदाज कर रही है। ज्ञापन में कहा कि प्राथमिक विद्यालयों को बंद करने से बच्चे शिक्षा से वंचित हो जाएंगे जिससे बच्चों का भविष्य बर्बाद कर डॉक्टर अंबेडकर जी के सपनों को भाजपा बर्बाद कर शिक्षा के साथ खिलवाड़ कर पी डी ए के हितों पर चोट को सपा बर्दाश्त नहीं करेगी। अध्यक्ष फजल महमूद ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि सपा 15 अगस्त 2025 को महानगर के 435 प्राथमिक विद्यालयों पर झंडा रोहण करेगी और प्राथमिक विद्यालय बंद किए जाने का विरोध करेगी। प्रमुख रूप से प्रदेश सचिव के के शुक्ला, महासचिव संजय सिंह बंटी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेंद्र यादव मिन्टू, प्रदेश महासचिव शिक्षक सभा डा.कमलेश यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष लोहिया वाहिनी विनय गुप्ता,उपाध्यक्ष सत्यनारायण गहरवार,आंनद शुक्ला, महेन्द्र सिह बडे ठाकुर, अध्यक्ष शिक्षक सभा इंद्रदेव यादव,लोहिया वाहिनी अध्यक्ष दीपक खोटे, यूथ ब्रिगेड अध्यक्ष शादाब आलम, छात्र सभा अध्यक्ष अनूप यादव, सैनिक प्रकोष्ठ अध्यक्ष रमेश यादव आदि लोग मौजूद थे।

विधायक ने गुरुजनों को अंग वस्त्र भेंट कर लिया आशीर्वाद

शुकुल बाजार अमेठी – 184 विधानसभा जगदीशपुर से विधायक सुरेश पासी ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर हरखू मऊ में स्थित पहलवान बाबा पवित्र स्थल पर सभी गुरुजनों को अंगवस्त्र भेट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि गुरु पूर्णिमा एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है, जो आषाढ़ मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है इस दिन को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है, जो गुरु के महत्व को दर्शाता है। इस दिन, शिष्य अपने गुरुओं को सम्मानित करते हैं और उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।उन्होंने कहा गुरु ज्ञान का स्रोत होता है, जो शिष्य को जीवन के विभिन्न पहलुओं में मार्गदर्शन प्रदान करता है।गुरु शिष्य के व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जैसे कि आत्म-विश्वास, आत्म-निर्भरता और नैतिक मूल्यों का विकास।गुरु शिष्य को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करता है, जीवन के उद्देश्य, आत्म-ज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग बताता है,गुरु शिष्य को मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करता है, जीवन की चुनौतियों का सामना करने और निर्णय लेने में मदद करता है। गुरु शिष्य के लिए आदर्श और प्रेरणा का स्रोत होता है, जो उसे जीवन में आगे बढ़ने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। गुरु का महत्व न केवल शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में है, बल्कि यह जीवन के विभिन्न पहलुओं में भी महत्वपूर्ण है, गुरु व्यक्तिगत विकास, आध्यात्मिक मार्गदर्शन और मार्गदर्शन और समर्थन सिखलाता है।

उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य डॉ प्रियंका मौर्या ने विभिन्न विद्यालयों व आंगनबाड़ी केंद्र का किया स्थलीय निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात

अमेठी। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य डॉ प्रियंका मौर्या ने कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय संग्रामपुर तथा विकासखंड बहादुरपुर के ब्राह्मणी में आंगनबाड़ी केंद्र व प्राथमिक विद्यालय का स्थलीय निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। सर्वप्रथम आयोग की सदस्य ने संग्रामपुर पहुंचकर मां कालिकन धाम मंदिर में दर्शन पूजन किया तदोपरांत कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय का निरीक्षण कर बच्चों से पढ़ाई के संबंध में जानकारी ली एवं संबंधित वार्डेन को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पूरे विद्यालय परिसर का गहनता से निरीक्षण किया, बच्चों के रहने, खाने-पीने, उनके भोजन की गुणवत्ता, पढ़ाई-लिखाई आदि का बारीकी से जायजा लिया एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इसके उपरांत उन्होंने विद्यालय में पौधरोपण भी किया। तत्पश्चात विकासखंड बहादुरपुर के ब्राह्मणी में आंगनबाड़ी केंद्र में पहुंचकर दो गर्भवती महिलाओं की गोद भराई तथा 6 माह के बच्चों को प्रथम बार अन्नप्राशन कराया तदोपरांत प्राथमिक विद्यालय का निरीक्षण कर बच्चों से पढ़ाई के संबंध में जानकारी एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने विद्यालय में पौधारोपण भी किया। निरीक्षण के दौरान जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी संजय तिवारी, जिला प्रोबेशन अधिकारी अनिल कुमार मौर्य, जिला कार्यक्रम अधिकारी संतोष श्रीवास्तव सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

बरसात से चौबिया पाडा में गिरा मकान का एक हिस्सा

मथुरा। बारिश के दौरान जर्जर मकान का हिस्सा गिर गया। मथुरा के चौबिया पाड़ा क्षेत्र में छौंका पाड़ा मोहल्ले में मंगलवार शाम एक जर्जर मकान का हिस्सा गिर गया। मलबा पड़ोसी संजय चतुर्वेदी के मकान पर गिरने से उनके घर को नुकसान पहुंचा। स्थानीय लोगों का कहना है कि नगर निगम को कई बार सूचना देने के बावजूद जर्जर इमारतों पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। इससे आमजन की सुरक्षा को लेकर प्रश्न उठ रहे हैं। घटना के समय बारिश हो रही थी और रास्ता खाली होने के कारण कोई हताहत नहीं हुआ। मोहल्ले में धमाके की आवाज से अफरा-तफरी मच गई। संजय चतुर्वेदी ने बताया कि बारिश के दौरान अचानक जोरदार धमाका हुआ। जब वे बाहर निकले तो देखा कि मकान का बड़ा हिस्सा उनके घर पर गिर चुका था। स्थानीय निवासियों के अनुसार यह मकान पहले से ही जर्जर स्थिति में था। इसकी शिकायत कई बार की जा चुकी थी। संजय चतुर्वेदी ने प्रशासन और मकान मालिक से मकान के बचे हुए खतरनाक हिस्से की मरम्मत की मांग की है।

डिप्टी सीएम से मिला धनगर समाज का प्रतिनिधिमंडल

मथुरा। धनगर समाज के प्रमाण पत्र (जाति प्रमाणपत्र) जारी होने में आ रही बाधाओं को दूर करने की मांग को लेकर मथुरा के एक महत्वपूर्ण प्रतिनिधिमंडल ने उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य से लखनऊ में भेंट की। प्रतिनिधिमंडल ने उप मुख्यमंत्री के समक्ष समाज के धनगर प्रमाणपत्रों में आ रही समस्याओं को विस्तारपूर्वक रखते हुए, प्रमाणपत्रों में आ रही प्रशासनिक अड़चनों को शीघ्र दूर करने की मांग की। उप मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल की बात को गंभीरता को सुना तथा आश्वासन दिया कि जल्द ही धनगर प्रमाणपत्र पत्र जारी होंगे। प्रतिनिधिमंडल में क्षेत्र पंचायत सदस्य मुकेश धनगर, कृष्णा जादूगर,रंजीत सिंह अध्यापक और ललित धनगर आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

श्रद्धालुओं का सामान चुराने के आरोप में चार महिलाओं सहित सात गिरफ्तार

मथुरा। वृंदावन आने वाले श्रद्धालुओं का सामान चुराने के आरोप में पुलिस ने चार महिलाओं सहित कुछ सात लोगों गिरफ्तार कर जेल भेजा है। थाना वृन्दावन पुलिस ने श्री बांकेबिहारी जी मन्दिर में श्रद्धालुओं से मोबाइल फोन, पर्स चोरी करने वाले सात आरोपितों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किये गये अभियुक्तों में चार महिला भी शाामिल हैं। थाना वृन्दावन पुलिस टीम द्वारा मुखबिर की सूचना के आधार पर अमित गोयल पुत्र अशोक कुमार निवासी नागलोई मैन नजफगढ रोड थाना निहाल बिहार पश्चिमी दिल्ली, कयूम पुत्र आबल निवासी दूसरा पुस्ता न्यू उस्मान ओ दिल्ली, उदय पुत्र प्रेम नारायण निवासी विकास पुरी के पास ।थाना विकासपुरी उत्तमनगर दिल्ली व चार महिला अभियुक्ताओ को चोरी के मोबाइल फोन, पर्स व अभियुक्त कयूम से एक चाकू के साथ रेलवे कच्चे मार्ग पर एक पेड के नीचे थानाक्षेत्र वृन्दावन से गिरफ्तार किया गया। कार्यवाही करने वाली टीम में प्रशान्त कपिल प्रभारी निरीक्षक थाना वृन्दावन, धर्मेन्द्र कुमार निरीक्षक अपराध थाना वृन्दावन, एसआई शिवकुमार चौकी प्रभारी बिहारीजी थाना वृन्दावन, एसआअ सुबोध कुमार थाना वृन्दावन आदि थे।

मठ, आश्रमों में गुरू पूजन को उमड़ी शिष्यों की भीड

गुरु पूर्णिमा पर जगह जगह लगे भंडारे, सेवा में तत्पर रहे ब्रजवासी

मथुरा। ब्रज के मठ मंदिरों में गुरु पूजन के लिए शिष्यों की भीड उमडती रही। आश्रम और मठों में कई दिन से इस पर्व के लिए तैयारियां चल रही थीं। शिष्यों का आगमन भी कई दिन पहले से शुरू हो गया था। रौनक तो थी लेकिन गुरु पूर्णिमा पर उल्लास अपने चरम पर पहुंच गया। गोकुल, वृंदावन, गोवर्धन, बरसाना, नंदगांव, दाउजी, मथुरा आदि धार्मिक स्थलों पर भीड़ उमड़ती रही। ब्रजवासी आगंतुक श्रद्धालुओं की सेवा में कभी कोई कोर कसर नहीं छोड़ते हैं। गुरू पूर्णिमा के अवसर पर भी जगह जगह भंडारों का आयोजन किया गया। बृज यातायात एवं पर्यावरण जन जागरूकता रजि उत्तर प्रदेश ने सरस्वती मैरिज होम बीएसए कॉलेज रोड मथुरा पर भंडारे का आयोजन किया। भंडारे के संयोजक अजय राजपूत ने कहा हम हर साल इसी तरह का आयोजन गुरु पूर्णिमा पर करते हैं इस आयोजन के माध्यम से बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं को भोजन और पानी की व्यवस्था हमारी तरफ से रहती है। पार्षद निरंजन सिंह कुटेला ने कहा अजय राजपूत का प्रयास बहुत ही सराहनीय है ऐसे ही सब लोगों को समय-समय पर सेवा करनी चाहिए और मथुरा से अच्छा मैसेज जाना चाहिए। ब्रज यातायात एवं पर्यावरण जागरूकता समिति रजि उत्तर प्रदेश के संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने कहा है कि हमारी समिति समय समय पर ऐसे आयोजन करती रहती है आज के दिन गुरु पूर्णिमा पर अजय राजपूत के द्वारा भांडारेज का आयोजन किया गया है।

श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा रेलवे स्टेशन को फ्लैग स्टेशन में उन्नयन का काम शीघ्र शुरू होगा

● सांसद कृपानाथ मालाह सहित रेल मंत्री रवनीत सिंह को धन्यवाद के साथ-साथ संतोष और खुशी व्यक्त विभिन्न क्षेत्रों में।

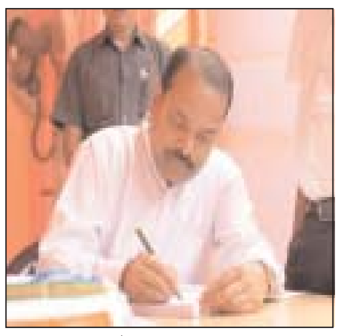

स्वतंत्र प्रभात

श्रीभूमि – ब्रिटिश शासन काल से ही श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा क्षेत्र के विभिन्न बागानों से उत्पादित चाय पत्तियों सहित विभिन्न सामग्रियों का आयात और निर्यात किया जाता रहा है, लेकिन उस रेलवे स्टेशन को जर्जर अवस्था में छोड़ दिया गया था। हालांकि, स्थानीय लोगों और दलीय राजनीतिक नेताओं की त्वरित कार्रवाई के कारण दुल्लभछड़ा से गुवाहाटी तक रेलवे विस्तार में स्थायी परिवर्तन हुए हैं, लेकिन पेयजल की व्यवस्था, ओवर ब्रिज, शौचालय, स्टेशन मास्टर, यात्रियों के विश्राम गृह और बिजली सेवाओं की कमी के कारण यात्रियों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

इस परिप्रेक्ष्य में करीमगंज यानी श्रीभूमि जिले के लोकप्रिय सांसद कृपानाथ मालाह ने लोकसभा में 04-12-2024 को दुल्लभछड़ा रेलवे स्टेशन की समस्याओं को उठाया था। परिणामस्वरूप रेलवे विभाग के राज्य मंत्री रवनित सिंह ने गत 4 जुलाई 2025 को अपनी चिठ्ठी संख्या 2025/TG-IV/3/NFR/01/MR के माध्यम से सांसद कृपानाथ मालाह को बताया कि वर्तमान में दुल्लभछड़ा रेलवे स्टेशन की सभी समस्याओं के समाधान के लिए रेलवे विभाग की ओर से हरी झंडी दी गई है। इस हाल्ट स्टेशन से दुल्लभछड़ा फ्लैग स्टेशन के सुधरने पर यात्रियों को कौन-कौन सी सुविधाएं मिलेंगी जैसे उच्च प्लेटफार्म, प्रकाश व्यवस्था, आधुनिक टिकट काउंटर (UTS/UTS CUMPRS), विश्रामगृह, फुट ओवर ब्रिज, पाइप और हैंडपंप में पेयजल, कूड़ेदान सहित अन्य सुविधाएं। इस खबर के प्रसार पर स्थानीय लोगों ने गहरे संतोष के साथ खुशी व्यक्त की और लोकप्रिय सांसद कृपानाथ मालाह सहित रेलवे राज्य मंत्री रवनित और रेलवे अधिकारियों को धन्यवाद दिया और सराहना की।

नाबालिग के साथ दुष्कर्म के आरोपी को पुलिस ने सिखाया सबक

● पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में गोली लगने से हुआ लहूलुहान

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। नाबालिग के साथ दुष्कर्म के आरोपी को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। मुठभेड़ के दौरान आरोपी के पैर में गोली लगी जिससे वह घायल होकर गिर पडा। इसके बाद पुलिस ने उसे दबोच लिया। घायल अवस्था में उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। नाबालिग के साथ दुष्कर्म के आरोपित के साथ पुलिस की मुठभेड सुरीर क्षेत्र में हुई। रात को पुलिस को सूचना मिली कि आरोपी थाना क्षेत्र के गांव टैंटीगांव में घूमता दिखाई दिया है। सूचना पर थाना प्रभारी निरीक्षक अभय कुमार पुलिस बल के साथ गांव में पहुंच गए। पुलिस को देख आरोपी फायरिंग करते हुए भागने लगा, पुलिस ने टैंटीगांव स्थित यमुना एक्सप्रेस वे के अंडर पास के नीचे आरोपी को घेर लिया। जबावी कार्रवाई में एक गोली आरोपी की टांग में लगी और वह घायल हो गया।

आरोपी के कब्जे से पुलिस ने कब्जे से तमंचा और दो कारतूस जिंदा बरामद किए हैं। एसपी सिटी सुरेश कुमार रावत ने बताया कि 8 जुलाई को गांव में परचून की दुकान के पीछे बनी गैलरी में रिजवान ने 6 वर्षीय बच्ची के साथ दुष्कर्म किया था। बच्ची के पिता की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज हुई थी। पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी की तलाश में जुट गई। 8 जुलाई को सुरीर थाना क्षेत्र के गांव में रहने ग्रामीण ने पुलिस को तहरीर दी। तहरीर में उसने बताया कि उसकी गांव में परचून की दुकान है। दुकान के पीछे कुछ जमीन खाली पड़ी है और एक गैलरी बनी है। घटना के समय वह दुकान पर नहीं था। लौटकर आया तो उसने पत्नी ने बताया कि गांव का रिजवान छह वर्षीय उनकी बेटी को अपने साथ गैलरी में ले गया और गलत काम किया।

बरसात के पानी को जल्द से जल्द निकालने की हर जुगत भिड़ा रहा नगर निगम

● जल निकासी के साथ ही लोगों की सुरक्षा का भी रखा जा रहा है ध्यान

रूट डायवर्ट करने के साथ ही बैरिकेडिंग भी करता है नगर निगम

स्वतंत्र प्रभात

तेज बरसात के बावजूद जल्द से जल्द की गई पानी की निकासी।

मथुरा। जलभराव वाले बिन्दुओं से बरसात के पानी की जल्द से जल्द निकासी के लिए हर जुंगत नगर निगम की ओर से लगाई जा रही है। साथ ही लोगों की सुरक्षा का भी ध्यान रखा जा रहा है। जलभराव होने पर रूट डायवर्ट किया जाता है साथ ही बैरिकेडिंग कर लोगों को जलभराव वाले स्थानों पर जाने से भी रोका जा रहा है। नगर निगम का प्रयास यही है कि बरसात होने पर जितना जल्द हो पानी को निकाल कर यातायात को सुचारू किया जाये। लगातार हुई भारी बारिश के कारण जलभराव की स्थिति में नगर निगम ने त्वरित कार्यवाही की। रुक रुक कर करीब चार घंटे हुई भारी वर्षा के कारण जलभराव की स्थिति उत्पन्न होने पर महापौर विनोद अग्रवाल एवं नगर आयुक्त जग प्रवेश के निर्देशन में तत्काल जल निकासी कार्य प्रारंभ कराया गया। नगर निगम की टीम द्वारा जल भराव वाले प्रभावित स्थलों में तत्काल पहुंचकर जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित की गई। अपर नगर आयुक्त अनिल कुमार, महाप्रबंधक जल, सहायक अभियंता, अवर अभियंता, नगर स्वास्थ्य अधिकारी तथा संबंधित सफाई निरीक्षक स्थल पर उपस्थित रहकर जल निकासी कार्य की निगरानी कर रहे हैं। भूतेश्वर अंडरपास पर जल निकासी के लिए चार स्थायी एवं चार अतिरिक्त अस्थायी ट्रैक्टर पंप लगाए गए हैं। कार्य तीव्र गति से चल रहा है और प्रयास किया जा रहा है कि बरसात के पानी की जल्द से जल्द जल निकासी पूर्ण कर ली जाएगी। जिससे कि यातायात को सामान्य किया जा सके। नया बस स्टैंड अंडरपास पर जल निकासी के लिए तीन स्थायी एवं तीन अस्थायी ट्रैक्टर पंप क्रियाशील है जिससे वहां आवागमन पूर्णतः सुचारू है। कंकाली रोड पर जल निकासी के लिए एक ट्रैक्टर पंप सेट लगाकर आवागमन सुचारु कराया गया। भूतेश्वर अंडरपास पर वाहनों की आवाजाही को नियंत्रित करने के लिए बैरिकेडिंग कर मार्ग डायवर्ट किया गया है। सभी अधिकारी अपनी टीम के साथ मौके पर मौजूद रहकर जल निकासी करा रहे हैं। नगर आयुक्त द्वारा यह निर्देश दिए गए हैं कि सभी संबंधित अधिकारी स्थल पर मौजूद रहकर जल निकासी सुनिश्चित करें जिससे कि आमजन को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

जयगुरुदेव आश्रम पर हजारों की संख्या में जुटे अनयाई

● गुरु पूर्णिमा सत्संग मेला में गुरुपूर्णिमा के दिन पंकज महाराज ने किये प्रवचन

स्वतंत्र प्रभात

गुरुपूर्णिमा सत्संग मेला में गुरुपूर्णिमा के दिन प्रवचन करते पंकज महाराज।

मथुरा। जयगुरुदेव नाम योग साधना मन्दिर पर चल रहे गुरुपूर्णिमा सत्संग मेला में गुरुपूर्णिमा के दिन पंकज महाराज ने मन्दिर में गुरु महाराज का पूजन किया। अपने प्रवचन में संतों की महिमा, सृष्टि की रचना, सुरत शब्द की साधना और जयगुरुदेव नाम की महिमा को बताया। उन्होंने कहा कि अच्छे समाज के निर्माण के लिये वैचारिक परिवर्तन का आधार शाकाहार सदाचार और नशामुक्ति है। जिसका प्रचार प्रसार निरन्तर हम सभी प्रेमियों को करते रहना है। इसी से देश-दुनिया में परिवर्तन आयेगा। उन्होंने बताया कि इस संसार के मालिक काल प्रभु हैं। जो दुनिया के जीवों को फंसा करके रखे हैं। संसार में यह बड़ी बिडम्बना है कि जो जीवों को मारता है, खाता है उसी की लोग पूजा कर रहे हैं। संत महापुरुष धरा भूमि पर आकर जीवों को समझाते हैं कि मनुष्य शरीर में उस प्रभु से मिलने का एक मात्र दरवाजा है। सुरत-शब्द, नाम भेद देकर उस दरवाजे को खोलने का भेद बताते हैं। हमारे गुरु महाराज बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने आवाज लगाया कि इन्सानों तुम मानव कर्म और धर्म को अपना लो। दादा गुरु पूज्यपाद स्वामी घूरेलाल जी महाराज के 77वें वार्षिक भण्डारा आगामी 28 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक जयगुरुदेव आश्रम मथुरा में मनाने जाने की घोषणा किया और उसमें सपरिवार भाग लेने का निमन्त्रण दिया। गुरु पूर्णिमा पावन पर्व पर जयगुरुदेव नाम योग साधना मन्दिर में पंकज जी महाराज के पूजन के बाद श्रद्धालु भाई और बहनें अलग-अलग कतारों में लग करके अपने गुरु से दया, दुआ की याचना करते हुये देखे गये। पूजन का कार्यक्रम निरन्तर 12 जुलाई तक चलता रहेगा। मेला मैदान प्रेमियों से भरा हुआ था। लोग अपने घरों को वापस लौटने लगे।

मुडिया मेलाः मुड़िया संतों ने निकाली परंपरागत शोभायात्रा

● 468 साल से निभाई जा रही है परंपरा, अद्भुत दृश्य देख रोमांचित हो रहे श्रद्धालु

स्वतंत्र प्रभात

ढोल मृदंग की थाप पर मुडिया षोभायात्रा निकालते मुडिया संत।

परिक्रमा मार्ग में उमडी भीड।

मथुरा। गोवर्धन पर्वत के उपर कडकती आकाशीय बिजली के बीच आसमान में घुमडते बरसते घने काले मेघा और तलहटी में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड, तलहटी में द्वापर कालीन अद्भुत दृश्य उपस्थित हो रहा था। मानो इंद्रदेव अपने रौद्र रूप में हों और ब्रजवासी अपने कान्हा के भरोसे गोवर्धन पर्वत के इर्द गिर्द एकत्रित हो गये हों। मुडिया मेला में पूर्णमासी की रात को यह सब श्रद्धालुओं को रोमांचित कर रहा था। सप्तकोसीय परिक्रमा मार्ग भगवान श्रीकृष्ण के जयकारों से गुंजायमान था। सब की टेर कान्हा से लगी थी। गुरू पूर्णिमा के दिन में गिरिराज तलहटी गोवर्धन में मुड़िया शोभायात्रा धूमधाम से निकाली गई। जिसमें मुड़िया संत ढोल मृदङ्ग की थापों पर नाचते हुए इस प्राचीन परंपरा का निर्वहन करते हुए नजर आए। यात्रा ने चकलेश्वर से शुरू होकर संपूर्ण कस्बे में भ्रमण किया। मुड़िया शोभायात्रा गिरिराज तलहटी गोवर्धन में लगने वाले मुड़िया मेला का रविवार को मुड़िया शोभायात्रा के साथ समाप्त हो गया। चकलेश्वर स्थित श्रीराधा श्याम सुंदर मंदिर से मुड़िया शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें सभी मुड़िया संत ढोल मृदङ्ग खंजरी की थापों पर नाचते गाते हुए अपने गुरु की याद में इस प्राचीन परंपरा का निर्वहन करते नजर आए।

यात्रा राधा श्याम सुन्दर मंदिर से निकली और चकलेश्वर से होते हुए दसविसा हरदेव जी मन्दिर बिजली घर से होते हुए दानघाटी मन्दिर बड़ा बाजार हाथी दरवाजा होकर अपने गंतव्य स्थान पर पहुंची। शोभायात्रा में सैकडों संत महात्मा साधु सन्यासिन एवं स्थानीय लोगों ने भाग लिया। वहीं मुड़िया शोभायात्रा का जगह जगह स्वागत हुआ। यह परम्परा लगभग 468 साल पहले शुरू हुई। जब माधव गौडीय सम्प्रदाय के आचार्य श्रीपाद सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेश पर ब्रजभूमि पधारे तो यहां वृन्दावन के बाद गोवर्धन ही उनकी भजन स्थली बनी।

सनातन गोस्वामी अपने बालों का मुंडन कर भजन साधना में लीन रहते थे। इसलिए सभी उन्हें मुडिया बाबा के नाम से जानते थे। गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करना उनके नित्यकर्म में शामिल था। इसीलिए जब उन्होंने गुरू पूर्णिमा के दिन अपना शरीर छोडा तो गुरु की आज्ञा अनुसार उनके अनुयायियों ने अपने बालों का मुंडन कर मुड़िया शोभायात्रा निकाली। गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा की थी। तब से लेकर आज तक यह परंपरा चली आ रही है। मुड़िया संत इतनी चिलचिलाती धूप में भी ढोल मृदङ्ग खंजरी की थापों पर नाचते गाते हुए अपने गुरु की याद में इस प्राचीन परंपरा का निर्वहन करते हैं।

सात कोस में सिमट गया मिनी भारत

सात कोस की परिक्रमा में मानो आस्था, श्रद्धा और विश्वास से ओतप्रोत मिनी भारत सिमट गया हो। अलग अलग पहनावे में अलग अलग बोली बोल रहे लोग लेकिन सब का भाव एक ही था। भीड थी लेकिन स्वनियंत्रित, अपार भीड़ को कोई नियंत्रित नहीं कर रहा था बावजूद इसके सब बेहद अनुशासित नजर आ रहे थे। उल्लास, उत्साह और उमंग के सागर में हुड़दंग का नामोनिशान नहीं था। यह अद्भुत और अनूठा आयोजन लोगों के विश्वास को और मजबूत कर रहा था। यही वजह है कि साल दर साल गोवर्धन में मुड़िया मेला पर जुटने वाली भीड़ बढ़ती जा रही है।

द्वारकाधीश मंदिर में हिंडोला व घटा महोत्सव कल से

● स्वर्ण व रजत हिंडौला होंगे द्वारकानाथ के आकर्षण का केन्द्र

रंग बिरंगी घटाओं का होगा अद्भुत नजारा

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। श्रावण मास में नगर का द्वारकाधीश मंदिर विशेष आकर्षण का केन्द्र बनेगा। जहां श्रावण कृष्ण पक्ष दौज 12 जुलाई से 17 अगस्त तक हिंडोला व रंग विरंगी घटाओं का आयोजन होगा। इनकी तिथियां मंदिर के प्रबंधकों ने तय कर दी हैं। पुष्टिमार्गीय संप्रदाय के मंदिर ठाकुर द्वारकाधीश की विधि एवं मीडिया प्रभारी राकेश तिवारी एडवोकेट ने बताया कि सावन मास के सभी कार्यक्रमों का निर्धारण मंदिर के गोस्वामी डॉ. वागिश कुमार महाराज के द्वारा किया जाता है और उन सभी कार्यक्रमों का सफल निर्देशन मंदिर के गोस्वामी काकरोली युवराज वेदांत कुमार महाराज व सिद्धांत कुमार महाराज के द्वारा किया जाता है। 12 जुलाई से 17 अगस्त तक विधवत रूप से तिथि घड़ी पल और नक्षत्र के हिसाब से आयोजन होंगे।

उन्होंने बताया कि ठाकुर जी विभिन्न हिंडोला में विराजमान होंगे। हिंडोले के दर्शन प्रतिदिन शाम 5.10 से 5.40 बजे तक होंगे। इसके उपरांत विभिन्न घटाओं का आयोजन भी किया जाएगा। जिसमें पहली घटा 22 जुलाई को केसरी घटा के नाम से होगी। इसी प्रकार केसरी के बाद हरि घटा, शोषनी घटा, आसमानी घटा, गुलबी घटा, लाल घटा और विश्व की सबसे प्रसिद्ध काली घटा जिसे श्याम घटा कहा जाता है वह 4 अगस्त सोमवार को होगी। उसके बाद 6 अगस्त को लहरिया घटा, सफेद घटा 8 अगस्त को आयोजन होगा। 11 अगस्त को हिंडोला विजय होंगे। 16 अगस्त को जन्माष्टमी का कार्यक्रम और उसके बाद 17 अगस्त को नंद महोत्सव का भव्य कार्यक्रम ठाकुर मंदिर द्वारकाधीश में होगा । जिस दिन घटाओं के दर्शन होंगे उस दिन उद्यापन के दर्शन शाम 5 बजे होंगे और घटाओं के विशेष दर्शन सायंकाल 7 से 8 बजे तक होंगे। मीडिया प्रभारी ने समस्त धर्म प्रेमी जनता से अनुरोध किया है कि दर्शन कर पुण्य के भागी बने।

पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस पर किसानो का सम्मान एवं रिवर रैचिंग

स्वतंत्र प्रभात

रिवर रैचिंग करती पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय की टीम।

मथुरा। उत्तर प्रदेश पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान मथुरा विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय द्वारा 9 व 10 जुलाई को राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय की जनसंपर्क अधिकारी प्रो. देश दीपक सिंह ने बताया कि कार्यक्रम का उद्घाटन योगेश चौधरी, सदस्य विधान परिषद, उत्तर प्रदेश तथा डा. देविका पिल्लै, सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. अरूण कुमार मदान कुलपति, दुवासु द्वारा की गई। मुख्य अतिथि योगेश चौधरी ने किसानों से मत्स्य पालन के उन्नत एवं वैज्ञानिक तौर तरीको को अपनाने का आव्हान किया तथा बताया कि फिशरीज में स्नातक तथा उच्च शिक्षा से रोजगार प्राप्ति की अपार सभावनाए है। क्षेत्र के लगभग 100 मत्स्य पालकों की उपस्थिति में चार मत्स्य पालकों को उत्कृष्ट मत्स्य पालक का सम्मान दिया गया। मत्स्य उत्पादन तथा उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ठ अतिथि डा0 हरेन्द्र प्रसाद, उप निदेशक आगरा मण्डल तथा अभिषेक शुक्ला, एजीएम नाबार्ड द्वारा सम्बोधित किया गया। इस अवसर पर मत्स्य पालन से सम्बन्धित तकनीकी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें फिशरीज सेक्टर से जुडी़ विभिन्न कम्पनियों ने प्रदर्शनी में भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, मत्स्य एवं पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय भारत सरकार के वित्तीय सहयोग एवं मार्ग दर्शन में किया गया जिसमें प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर सभी यमुना नदी में भारतीय कार्प मछलियों की बड़े आकार की अगुलिकाओं को छोडकर रीवर रैचिंग की गई। विश्वविद्यालय के कुलपति ने मत्स्य पालन तथा पशुपालन के समन्वित व्यवहार से किसानों की आय वृद्धि तथा समृद्धि का विस्तार से वर्णन किया। मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. नित्यानन्द पाण्डेय ने महाविद्यालय को फिशरीज शिक्षा के लिए उत्कृष्ट तथा क्षेत्र के किसानों के लिए मत्स्य पालन तकनीकी जानकारी का एक प्रमुख केन्द्र बताया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक तथा अधिकारी गणों ने भाग लिया तथा कार्यक्रम व्यवस्था में डा. लक्ष्मी प्रसाद, डा परमवीर सिंह, डा मुक्ता सिंह, डा आर श्रीनू, अम्बरीश सिंह एवं कु.साक्षी मौर्या तथा शकील अहमद खां और सन्तोष कुमार ने मुख्य भूमिका निभाई।

3,08,906 बच्चों को पिलाई जाएगी विटामिन ए की खुराक

● नौ माह से पांच वर्ष तक के बच्चों के लिए विटामिन ए सम्पूर्ण कार्यक्रम का सी.एम.ओ. ने किया शुभारम्भ'

मथुरा। आगामी एक माह तक चलने वाले 'विटामिन ए सम्पूरण कार्यक्रम' का शुभारम्भ मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. संजीव यादव ने बच्चों को विटामिन ए की दवा पिलाकर किया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. संजीव यादव ने बताया कि अभियान के अंतर्गत नौ माह से पांच वर्ष तक के बच्चों को प्रत्येक बुधवार एवं शनिवार को शहरी एवं ग्रामीण टीकाकरण सत्रों पर स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा विटामिन ए सम्पूरण खुराक निःशुल्क पिलाई जायेगी। जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डा. रोहितास सिंह ने बताया कि जनपद भर में विटामिन ए सम्पूरण कार्यक्रम अभियान में 3,08,906 नौ माह से पांच वर्ष तक के बच्चों को विटामिन ए की दवा पिलाने का टारगेट पूरा किया जाएगा। इसके लिये जनपद में अभियान के दौरान स्वास्थ्य एवं आईसीडीएस विभाग के संयुक्त प्रयासों से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में छाया वीएचएसएनडी सत्रों पर एएनएम द्वारा विटामिन ए की दवा पिलाई जायेगी तथा बच्चों को मोबिलाइज करने का दायित्व आशा एवं आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा किया जायेगा। अभियान के शुभारम्भ के अवसर पर अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ आलोक कुमार, डिप्टी सीएमओ डॉ अनुज चौधरी, डिप्टी सीएमओ डॉ भूदेव सिंह, चिकित्सा अधीक्षक राल डॉ राकेश सिंह, डीसीपीएम डॉ पारुल शर्मा, डीएमसी यूनिसेफ़ पूनम यादव, वीसीसीएम यूएनडीपी भुवनेश्वर शर्मा, जेएसआई सीएसओ को ऑर्डिनटर संजय यादव, एचएस नेम सिंह, बीसीपीएम शशिकांत, सीएचओ नगमा, एएनएम कविता मीणा, सीएसओ को ऑर्डिनटर सुमित, आशा संगिनी लक्ष्मी देवी, आशा सुनीता, आशा कमलेश, आंगनबाड़ी सहायिका रूपो आदि मौजूद रहे।